अक्तूबर - दिसंबर 2021 भाग XXXII संख्या: 3 ISSN 0971-1856

भारतीय नारियल पत्रिका

प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म, मंड्या- नारियल पौधों का एक महत्वपूर्ण स्रोत

उच्च पैदावार और आय के लिए नारियल बागों में रतालू की अंतर खेती - उन्नत किस्में और खेती प्रौद्योगिकियाँ

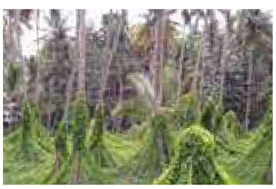

भारतीय नारियल पत्रिका

भाग XXXII, संख्या : 3
अक्तूबर - दिसंबर 2021
कोची- 11

परामर्श मंडल
अध्यक्ष
राजबीर सिंह भा.व.से.
सदस्य
डा.बी.एन.एस. मूर्ति
संजीव कुमार सिंह
डा. वेंकटेश एन.हुब्बल्ली

संपादक मंडल
सदस्य
आर. मधु
डा.अल्का गुप्ता

मुख्य संपादक
राजीव भूषण प्रसाद

संपादक
एस. बीना

उप संपादक
संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी
विन्दु रानी एन.
डा. सूर्या प्रत्यूष

प्रकाशक :
नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय,
कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग,
भारत सरकार)
केरा भवन, कोची - 682 011, भारत
दू. भा. : 0484-2376265, 2377266, 2377267, 2376553.
फैक्स : 91-484-2377902
ग्राम्स : KERABOARD
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर भेज दें।

नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बैंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई, असम के गुवाहटी और बिहार के पटना में हैं। बोर्ड के पाँचः राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओड़िशा के भुबनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकात्ता, आँध्र प्रदेश के विजयवाड़ा, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नेर्यमंगलम (केरल), वेगिवाड़ा (आँध्र प्रदेश), कोंडागाँव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पित्तापल्ली (ओड़िशा), मंड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र), धली (तमिलनाडु), साउथ हिच्चाचेरा (त्रिपुरा) तथा फुलिया (पश्चिम बंगाल) में हैं। इसके अलावा बोर्ड का बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र दिल्ली में है। केरल के आलुवा के पास वाष़क्कुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

• नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना। • नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना। • नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना। • नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना। • नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना। •नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना। •नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना। • केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना। • नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निदर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.
एक प्रति	10 रु.
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.

नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा सर्वश्री केबीपीएस, काक्कनाट में मुद्रित

इस अंक में

04 अध्यक्ष की कलम से....

05 भारत में कृषि प्रगति के पथ पर अग्रसर, प्राचीन कृषि पद्धतियाँ विस्मृति की राह पर
शोभा करंदलाजे

08 नारियल विकास बोर्ड वर्ष 2021-22 के दौरान 110 करोड़ रुपए मूल्य की योजनाएं कार्यान्वित कर रहा है
प्रमोद पी.कुरियन और कुमारवेल एस.

19 प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म, मंड्या- नारियल पौधों का एक महत्वपूर्ण स्रोत
जयनाथ आर. और कुमारवेल एस.

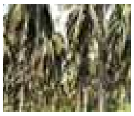

25 उच्च पैदावार और आय के लिए नारियल बागों में रतालू की अंतर खेती - उन्नत किस्में और खेती प्रौद्योगिकियाँ
डा.जगन्नाथन, जी.बैजु और एम.एन.षीला

28 नारियल ताड़ारोहकों को पाँच लाख रुपए की बीमा सुरक्षा
विष्णुप्रिया के.टी.

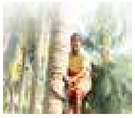

31 नारियल बागों में मासिक कार्य

44 समाचार

61 बाज़ार समीक्षा

65 बाज़ार रिपोर्ट

अध्यक्ष की कलम से....

प्रिय पाठकों,

वर्ष 2021 समाप्त हो रहा है और हम तकरीबन दो सालों से महामारी के कारण बनी नई साधारण परिस्थिति में जीते आ रहे हैं। कृषि क्षेत्र महामारी से जूझकर सफलतापूर्वक उभर आया है और आपूर्ति श्रृंखला की कड़ियाँ धीरे धीरे फिर से जुड़ती जा रही हैं। इस वर्ष के दौरान नारियल उत्पादों के निर्यात ने सितंबर 2021 तक 1469 करोड़ रुपए मूल्य के निर्यात के साथ ज़ोर पकड़ लिया है और गत वर्ष (1076 करोड़ रुपए) की तुलना में 37 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। देशीय बाज़ारों में भी, भारत के उत्तर और उत्तर पश्चिम के प्रमुख उपभोक्ता क्षेत्रों से डाब पानी और डेसिकेटड नारियल की माँग बढ़ गई है जिसने नारियल उद्यमियों के बीच नयी उमंग भर दी है। महामारी के पश्चात विर्जिन नारियल तेल स्वास्थ्य वर्धक और प्रतिरोधक क्षमता वर्धक उत्पाद के रूप में उभरकर आया है।

स्वास्थ्यपूर्ण आहार की अहमियत बढ़ती जा रही है और उपभोक्ता ऐसे आहार की तलाश में हैं जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता हो और पौष्टिक और चिकित्सीय गुण रखता हो और साथ साथ पर्यावरण की सुस्थिरता सुनिश्चित करता हो और उचित व्यापार विधियों के ज़रिए किसानों को किफायती दाम भी प्रदान करता हो। किसान भी बहुआयामी दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित हो रहे हैं और वे फसल हानि और भाव में गिरावट का खतरा कम करने के लिए एकल फसल से हटकर बहुफसल प्रणाली अपनाने लगे हैं। नारियल एक ऐसी फसल है जो आज की टिकाऊ खेती के लिए उपयुक्त है क्योंकि इसके पौष्टिक और चिकित्सीय गुणों के साथ साथ इसके साथ विविध फसलों की खेती करने की असीम संभावनाएं होती हैं। फिलीपीन्स और इंडोनेशिया जैसे देशों में महामारी के दौरान चलाए गए नैदानिक अध्ययनों ने वैज्ञानिक रूप से विर्जिन नारियल तेल के रोगप्रतिरोधक क्षमता वर्धक गुण साबित किए हैं और आज के दौर में यह सबसे अधिक प्रासंगिक भी है, जब कि विश्वभर के लोग कोविड महामारी के पश्चात विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

देश के प्रमुख नारियल उत्पादक क्षेत्रों में जलवायु परिस्थितियाँ काफी अनुकूल हैं जो आगामी महीनों में अच्छी पैदावार की संभावनाएं प्रदान करती हैं। नारियल उत्पादों की माँग बढ़ने के साथ साथ इस क्षेत्र के सुस्थिर विकास के लिए गुणवत्तापूर्ण उत्पादन को भी कंधे से कंधा मिलाकर चलना होगा। खाद्य पदार्थों के लिए गुणवत्ता मानदंड दिन ब दिन सख्त होते जा रहे हैं। कीटनाशी अपशिष्ट, भारी लोहा संघटक, एलेर्जी पैदा करने वाले तत्वों की मौजूदगी जैसे संघटक अधिकतर बाग में ही उत्पन्न हो रहे हैं। नारियल ढेर सारे स्वास्थ्य गुणों से युक्त उत्पाद होने के नाते फसल की खेती प्रक्रियाओं में अच्छी पद्धतियों का प्रयोग करना चाहिए जो अंतिम उत्पाद की गुणवत्ता कई गुना बढ़ाने में सहायक होगा। नारियल की खेती और उद्योग एक दूसरे के लिए समपूरक होना चाहिए और अन्योन्याश्रित भी।

हम नव वर्ष की दहलीज़ पर खड़े हैं, आइए हम सब मिलकर यह प्रतिज्ञा लें कि मिट्टी और धरती को जीवंत बनाए रखते हुए और वर्धित सूक्ष्मजीवीय क्रियाओं के ज़रिए मिट्टी में नई जान लाते हुए और बाग में उत्पन्न जैवभार से वापस मिट्टी को और भी अधिक पौष्टिकतत्व प्रदान करते हुए नारियल क्षेत्र को पुनरुज्जीवित करने हेतु एकसाथ कार्य करेंगे, जिससे गुणवत्तापूर्ण उत्पादों का उत्पादन बढ़ाने में, वर्धित कार्बन पृथक्करण और इस क्षेत्र के टिकाऊ विकास में योगदान दें।

राजबीर सिंह भा.व.से

अध्यक्ष

भारत में कृषि प्रगति के पथ पर अग्रसर, प्राचीन कृषि पद्धतियाँ विस्मृति की राह पर

शोभा करंदलाजे
केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार

भारत का कृषि क्षेत्र प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में एक युगांतरकारी समय से गुज़र रहा है। अब ऐसा दौर चल रहा है कि किसान बिना किसी अड़चन के अनगिनत कल्याणकारी उपायों और योजनाओं का भरपूर लाभ उठा पा रहे हैं। वर्तमान सरकार जब से शासन में आया है देश के कृषि क्षेत्र की काया पलटने में और किसान को पराश्रित से आत्मनिर्भर बनाने में क्रांतिकारी प्रयास में लगी हुई है। इसे साकार करने के लिए गत सात वर्षों के दौरान बजट आबंटन में काफी ज़बरदस्त वृद्धि की गई है जो कि 2013-14 के 21933.50 करोड़ रुपए से बढ़कर 2021-22 तक 1,23,017.57 करोड़ रुपए हो गया है।

यह सरकार किसानों के कल्याण पर सर्वाधिक ध्यान दे रही है। इनकी कृषि नीति किसान केंद्रित है जो बिना किसी गड़बड़ी और रुकावट के किसानों को लाभान्वित बनाने में सक्षम है। यह इसका दृष्टांत है कि भारत के इतिहास में पहली बार किसान पीएम किसान सम्मान निधि के अंतर्गत अपनी बैंक खाते में सीधे वित्तीय सहायता प्राप्त कर रहे हैं। पीएम फसल बीमा योजना के अंतर्गत नुकसानग्रस्त फसलों के लिए क्षतिपूर्ति की जाती है, मृदा स्वास्थ्य कार्ड के ज़रिए मिट्टी की उर्वरता में सुधार लायी जाती है और किसान क्रेडिट कार्ड देकर उनको कर्ज से छुटकारा दिलाया जाता है और ऐसे और भी कई कार्यक्रम हैं। 16 लाख करोड़ रुपए के निर्धारित लक्ष्य के मुकाबले किसान क्रेडिट कार्ड के ज़रिए 14 लाख करोड़ रुपए का ऋण दिया जा चुका है।

कृषि आदान सामग्रियों की लागत के अनुरूप फसल के लिए न्यूनतम समर्थन भाव व्यवस्थित रूप से बढ़ाया गया है। और, सबसे प्रभावी प्रयास रहा न्यूनतम समर्थन मूल्य में सीधा लाभ अंतरण जिससे बिचौलियों को हटाया जा सका और नियत लाभार्थी को ही लाभ मिलने में सहायता मिली। न्यूनतम समर्थन मूल्य के ज़रिए रिकार्ड संख्या में प्रापण किया जा सका और फसल विविधीकरण एवं उच्च पैदावार देने वाली फसलों को चुनने हेतु प्रेरित करने के लिए दूसरी फसलों के लिए भी यह प्रस्ताव रखा गया।

महामारी के बीच भी वित्तीय सहायता प्रदान करने में सरकार को कोई संकोच नहीं हुआ जबकि प्रधान मंत्री जी ने अपनी सार्वजनिक रैलियों में स्पष्टतः यह बताया है कि कोविड महामारी के बीच भी कैसे 1.5 लाख करोड़ रुपए से अधिक अंतरित किया गया था।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय किसानों को उद्यमी बनाने के लिए देश भर में 10,000 किसान उत्पादक संगठनों के गठन पर ज़ोरों पर कार्य कर रहा है।

खाद्य तेलों के आयात पर भारत की निर्भरता कम करने हेतु राज्यों में अनुकूल खाद्य तेल फसलों की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है और राष्ट्रीय तिलहन और तेल ताड़ मिशन (एनएमओओपी) के अधीन उत्तरपूर्वी क्षेत्र में विशेष ज़ोर देते हुए तेल ताड़ की खेती के अंतर्गत अधिकाधिक क्षेत्र लाया जा रहा है। इसके लिए खाद्य तेलों पर देश की निर्भरता में योगदान देने में उत्तरपूर्वी राज्यों की क्षमता पर बल देने हेतु असम में सर्वप्रथम एक सम्मेलन आयोजित किया गया। तेल ताड़ के अंतर्गत क्षेत्र का विस्तार किया जाता है और प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित की जाती हैं।

मंत्रालय द्वारा हाल ही में लिए गए निर्णय के अंतर्गत उत्पादन को बढ़ावा देने, मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने और फसलों के विविधीकरण हेतु कदम उठाया जा रहा है और संकर बीजों की निशुल्क उपलब्धता मुमकिन कराने के लिए 15 अनुकूलनशील राज्यों के 343 लक्षित जिलाओं में 8 करोड़ से अधिक किसानों को मिनी बीज किट वितरित किए जा रहे हैं। प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भारत के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने पर ज़ोर दे रहा है जिसे सच्चे उत्साह के साथ सुनिश्चित किया जा रहा है।

ये सिर्फ कागज़ पर ही नहीं बल्कि ज़मीन पर भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं और मोदी सरकार के किसान केंद्रित नीतियों से देशभर के कोने कोने के किसान कैसे लाभान्वित हो रहे हैं इसकी कई आँखेंदेखी घटनाएं मेरे पास उपलब्ध हैं। निर्णयन तंत्र को विकेंद्रीकृत बनाया गया है और जो स्थान पहले मात्र पदाधिकारियों के लिए आरक्षित था, वह अब किसानों के लिए खुल गया है। नारियल विकास बोर्ड में अब अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण करने का मौका किसान को मिल रहा है यह इस बात का प्रमाण देता है।

भारतीय किसान के बारे में सोचते ही हमारे ख्याल में फटे-पुराने कपड़ों में बैल और हल लिए कंगाल का जो चित्र पहले उभर आता था वो अब बदल गया है। आधुनिक प्रौद्योगिकियों और परिष्कृत समर्थन प्रणालियों के साथ खेती अब प्रगतिशील बन गयी है। भारत में जलवायु परिवर्तन और कुपोषण से निपटने में सक्षम खास विशेषताओंवाले बीजों का विकास भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने किया है और प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश के लिए इन बीजों का लोकार्पण किया था। ये 35 प्रकार के जलवायु अनुकूल बीज भी कुपोषण से लड़ने में सहायता करेंगे।

निर्दिष्ट समय में निश्चित फसलों की खेती के बारे में सुविज्ञ निर्णय लेने में किसानों को समर्थ बनाने के लिए निजी क्षेत्र के लोगों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया जिसके फलस्वरूप उच्च पैदावार मिलने लगी। किसानों को सुप्रचालन तथा प्रापण हेतु समर्थन प्रदान किया जाएगा जिससे वे बेहतर मूल्य मिलने के लिए सही बाज़ार चुनने के काबिल हो जाते हैं।

18 राज्यों और 3 संघ शासित क्षेत्रों में बाज़ार की अस्थिरता दूर करते हुए और एकीकृत बाज़ार पर किसानों को पहुँच प्रदान करते हुए ई-नाम(राष्ट्रीय कृषि बाज़ार) के रूप में 1000 मंडियों को एकजुट कराया गया। यही नहीं किसान रेल ने अप्राप्यता की समस्या को हटाकर बाज़ार का विस्तार किया है और यह खेतों से उपभोक्ताओं तक संभव कम समय में ही ताज़ा कृषि उत्पाद वितरित कर रहा है।

कृषि आधुनिक प्रौद्योगिकियों से भरा पड़ा है और पुरानी विधियाँ विलुप्त हो रही हैं। पेशेवर लोग विशेषज्ञता, ओज और उत्सुकता के साथ खेती में कदम रख रहे हैं, फसल का मूल्यवर्धन कर रहे हैं और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों का पता लगा रहे हैं। डिजिटल कृषि मिशन के अंतर्गत कृत्रिम बुद्धि, ड्रोन, रोबोट रिमोट सेंसिंग और जीआईएस प्रौद्योगिकी जैसी उन्नत यांत्रिकीकरण सुविधाएं लगायी जाएंगी जो कि 2021-25 के लिए प्रारंभ की गई हैं। 5.5 करोड़ किसानों का डैटाबेस तैयार किया गया है और उनकी ज़मीन का रिकार्ड लिंक किया गया है और किसानों की अलग अलग पहचान तैयार करने के लिए इनका उपयोग शुरू किया गया है।

जैविक खेती को लोकप्रिय बनाया गया है और वे लोग जिन्होंने खेती के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनायी है उन्हें नागरिक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। सरकार ने कई महिला किसानों को भारत के सर्वोच्च पुरस्कारों से सम्मानित किया है जिन्होंने खेती को नए सिरे से सँवारा और अपनी टिकाऊ तकनीकों से दूसरों को उत्तेजित भी किया।

टिकाऊ खेती के लिए उपयोगी सारी फसलों को अहमियत दी गई है और परंपरागत खेती विधियों का भी समर्थन किया जाता है। एक जिला एक उत्पाद ऐसी महत्वाकाँक्षी योजना है जिससे देश के हरेक जिले से निर्यात संभावनायुक्त कम से कम एक कृषि उत्पाद को पहचाना जा सकता है ताकि इसे अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में उपलब्ध कराया जा सके। यह आश्चर्य की बात है कि लंदन में नागालैंड की राजा मिर्च की बिक्री होती है, त्रिपुरा के कटहल का निर्यात जर्मनी और लंदन में किया जाता है, असम का लाल चावल यूएस में उपलब्ध है जबकि कानपुर और उत्तर प्रदेश का जामुन यूके में खाए जाते हैं, जो देश की कृषि के इतिहास में नया आयाम है।

2022 सीजन के लिए खोपरे का न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित

उत्तम औसत गुणवत्ता (एफएक्यू) के पेषण खोपरे का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 2022 सीजन के लिए प्रति क्विंटल 10590 रुपए तक बढ़ाया गया है जो 2021 में प्रति क्विंटल 10335 रुपए था और गोल खोपरे का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2022 सीजन के लिए प्रति क्विंटल 11000 रुपए तक बढ़ाया गया है जो 2021 में प्रति क्विंटल 10600 रुपए था। प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति द्वारा 2022 सीजन के लिए खोपरे के न्यूनतम समर्थन मूल्य में संशोधन का अनुमोदन किया गया है।

यह निर्णय कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) की सिफारिशों पर आधारित है। संशोधित एमएसपी से उत्पादन की अखिल भारतीय भारित औसत लागत की तुलना में पेषण खोपरे के लिए 51.85 प्रतिशत और गोल खोपरे के लिए 57.73 प्रतिशत का अधिक मूल्य सुनिश्चित होता है।

भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ मर्यादित और भारतीय राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ मर्यादित नारियल उत्पादक राज्यों में एमएसपी पर भाव समर्थन गतिविधियाँ चलाने हेतु केंद्रीय नोडल एजेंसियों के रूप में आगे भी कार्य करते रहेंगे।

केंद्रीय और राज्य सरकारों के अनेकों विभागों के बीच समन्वय सुचारू रूप से करने के लिए संबंधित राज्यों के साथ मेरी राज्य स्तरीय समीक्षा बैठकों में, कृषि उत्पादों की निर्यात माँग को पूरा करने के लिए अलग सेल गठित करने पर स्पष्ट रूप से बताया गया है। सरकार का कटु निर्णय अब लाभदायक सिद्ध हो रहा है जिसका दृष्टांत हम जम्मू और कश्मीर में देख सकते हैं। वहाँ मेरे पिछले दौरे के दौरान मुझे स्थानीय किसानों से बातचीत करने का मौका मिला और उस क्षेत्र में खेती की संभावनाओं के बारे में खुद अवगत हुई। इस क्षेत्र में विश्व भर में मशहूर केसर का उत्पादन होता है और यहाँ उगती चेरी विदेशी बाज़ारों में कब्ज़ा जमाने लगी है। सरकार जम्मू और कश्मीर के किसानों की आय दुगनी बनाने में सहायता करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है और इस लक्ष्य से केसर पार्क को क्रियान्वित बनाया जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप केसर जिसकी बिक्री पहले प्रति कि.ग्रा. एक लाख रुपए पर होती थी अब प्रति कि.ग्रा. ढाई लाख रुपए पर की जा रही है।

भारत ने किसानों की आय दुगुनी बनाने का अपना पूर्वनिर्धारित लक्ष्य वैश्विक मंचों पर रखा और वर्ष 2023 को मोटे अनाज के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के रूप में अनुपालन करने के हमारे संकल्प को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा पुष्टि की गई। यह पौष्टिक समृद्ध फसल, जिसे पहले गरीबों की फसल कही जाती थी, वैश्विक बाज़ार में अपनी जगह बना रही है। इस फसल की खासियत यह है कि इसकी खेती के लिए बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है और अर्ध-शुष्क भूमि में भी इसकी खेती की जा सकती है।

आत्मनिर्भर कृषि और हमारे अन्नदाताओं के कल्याण का हमारा जो संकल्प है इसको प्रमाणित करने तथा *मोदी है तो मुमकिन है* की संपुष्टि करने के लिए यह सूची और भी लंबी होती रहेगी। ■

स्रोतः प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया

नारियल विकास बोर्ड वर्ष 2021-22 के दौरान 110 करोड़ रुपए मूल्य की योजनाएं कार्यान्वित कर रहा है

प्रमोद पी.कुरियन, सहायक निदेशक(विकास) और **कुमारवेल एस.,** विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, कोची-11

नाविबो, मुख्यालय, कोची

नारियल विकास बोर्ड नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार हेतु तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान करने जैसी विविध योजनाएं कार्यान्वित करता है जिनको पूर्णता देने के लिए देश के विविध भागों में स्थित अपने क्षेत्रीय कार्यालयों, राज्य केंद्रों और प्रबीउ फार्मों के ज़रिए राज्य कृषि/बागवानी विभागों, कृषि/बागवानी विश्वविद्यालयों, अन्य संबंधित विभागों और एजेंसियों के सहयोग से रोपण सामग्रियों के उत्पादन और उत्पादकता सुधार कार्यक्रमों को भी कार्यान्वित कर रहा है। नाविबो विपणन और निर्यात को समर्थन देने वाले कार्यक्रमों के साथ साथ नारियल में मूल्यवर्धन हेतु प्रसंस्करण को भी बढ़ावा दे रहा है।

एकीकृत बागवानी विकास मिशन (एमआईडीएच) फलों, सब्जी फसलों, कंद मूल फसलों, खुंबियों, मसाला फसलों, फूलों, सगंध पौधों, नारियल, काजू, कोको और बांस को शामिल करते हुए बागवानी क्षेत्र के समग्र विकास हेतु कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक केंद्रीय प्रायोजित योजना है और इस के तहत 100 प्रतिशत केंद्रीय सहायता के साथ उपयोजना के रूप में नाविबो की योजनाएं कार्यान्वित की जाती हैं।

वर्ष 2021-22 के लिए मंत्रालय ने एकीकृत बागवानी विकास मिशन के अंतर्गत नाविबो की विविध योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु 110 करोड़ रुपए की कुल राशि आबंटित की है। वर्ष 2021-22 के लिए विविध योजनाओं के अंतर्गत योजनावार भौतिक और वित्तीय आबंटन सारणी 1 में दर्शाया गया है।

1. गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन और वितरण

इस कार्यक्रम का लक्ष्य निम्नलिखित संघटक कार्यक्रमों के ज़रिए अच्छी गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन और वितरण बढ़ाना है।

सारणी 1			
क्र. सं.	योजना	भौतिक	वित्तीय (रु. लाखों में)
1.	गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन और वितरण		
क.	प्रदर्शन सह बीज उत्पादन (प्रबीउ) फार्म	1 नया फार्म और 11 मौजूदा फार्मों का अनुरक्षण	322.00
ख.	क्षेत्रीय नारियल नर्सरियों की स्थापना	25 लाख नारियल पौध	400.00
ग.	न्यूक्लियस नारियल बीज बागों की स्थापना	3 नई इकाइयाँ और 3 इकाइयों के लिए अनुरक्षण किश्तें	13.50
घ.	लघु नारियल नर्सरियों की स्थापना	41 नई इकाइयाँ और 22 इकाइयों के लिए अनुरक्षण किश्तें	46.50
		उप कुल	**782.00**
2.	नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार	4510 हे. नया और 5956.59 हे. के लिए अनुरक्षण किश्तें	330.00
3.	उत्पादकता सुधार हेतु एकीकृत खेती		
क.	निदर्शन प्लोटों की स्थापना	545.60 हे. नया और 1830.48 हे. के लिए अनुरक्षण किश्तें	410.00
ख.	जैव खाद इकाइयाँ	75	30.00
		उप कुल	**440.00**
4.	प्रौद्योगिकी निदर्शन/गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशाला	आवश्यकता आधार पर	50.00
5.	विपणन, बाज़ार आसूचना सेवाएं, सांख्यिकी और निर्यात संवर्धन परिषद (ईपीसी)का सुदृढ़ीकरण	आवश्यकता आधार पर	120.00
6.	सूचना एवं सूचना प्रौद्योगिकी	आवश्यकता आधार पर	250.00
7.	अवसंरचना एवं प्रशासन सहित तकनीकी सेवा एवं परियोजना प्रबंधन	-	4278.00
8.	नारियल प्रौद्योगिकी मिशन	परियोजना आधार पर	1000.00
9.	पुराने नारियल बागों का पुनर्रोपण और पुनरुज्जीवन	6180.55 हे. नया और 10676.59 हे. के लिए अनुरक्षण किश्तें	3700.00
10.	नारियल पेड़ बीमा योजना	2.86 लाख पेड़	20.00
11.	केरा सुरक्षा बीमा योजना	9797 ताड़ारोहक	30.33
		कुल	**11000.00**

क. प्रदर्शन सह बीज उत्पादन (प्रबीउ) फार्म

देश के विविध भागों में प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्मों की स्थापना गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के उत्पादन हेतु अवसंरचना सुविधाएं विकसित करने और संबंधित क्षेत्र के लाभभोगियों को वैज्ञानिक नारियल खेती का निदर्शन करने के लिए की गई है। बोर्ड ने अभी तक कुल 362 हेक्टर क्षेत्र में आँध्र प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, ओडिशा, तमिलनाडु, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल में ग्यारह प्रबीउ फार्म स्थापित किए हैं। इन फार्मों के अनुरक्षण हेतु प्रचालन व्यय उठाने के लिए 27.00 लाख रुपए और नए फार्म के लिए पहले वर्ष के दौरान 25.00 लाख रुपए का बजट समर्थन सालाना दिया जाता है।

प्रबीउ फार्म का नारियल बाग

ख. क्षेत्रीय नारियल नर्सरियों की स्थापना

यह योजना राज्य सरकार के नारियल नर्सरी कार्यक्रमों को पूर्णता देने के उद्देश्य से कार्यान्वित की जाती है। विविध राज्य सरकारों द्वारा गुणवत्तापूर्ण बीजफल खरीदकर अपने विभाग में उपलब्ध अवसंरचना सुविधाओं के साथ नर्सरी लगाई जाएगी।

नारियल बीज बाग

लघु नारियल नर्सरी

नर्सरी स्थापित करने हेतु कर्मचारीगण और अवसंरचना सुविधा की व्यवस्था पूरी तरह राज्य सरकार द्वारा की जाएगी।

बोर्ड के हिस्से के रूप में प्रति नारियल पौध 16 रुपए की दर पर प्रचालन व्यय का 50 प्रतिशत बोर्ड द्वारा प्रदान किया जाएगा।

ग. न्यूक्लियस नारियल बीज बाग की स्थापना

यह योजना भविष्य में गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों की माँग को पूरा करने के लिए सरकारी/अर्ध सरकारी और निजी क्षेत्रों में चयनित किस्मों के न्यूक्लियस बीज बाग की स्थापना हेतु कार्यान्वित की जाती है। नारियल बीज बागों की स्थापना के लिए उपयुक्त भूमि वाले वैयक्तिक किसान, सहकारिता समितियाँ, गैर सरकारी संगठन, कृषि विज्ञान केंद्र और अन्य सरकारी/अर्ध सरकारी संगठन इस कार्यक्रम के तहत वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए पात्र हैं।

बीज बाग की स्थापना के लिए बोर्ड द्वारा अधिकतम 4 हेक्टर के लिए उठाए गए कुल व्यय का 25 प्रतिशत या अधिकतम 6.00 लाख रुपए तक सीमित वित्तीय सहायता तीन साल के लिए दी जाएगी। योजना के तहत सहायता प्राप्त करने के लिए इकाई की विभिन्न स्थायी अनुरक्षण लागत के लिए प्रस्तावित व्यय के मदों को दर्शाने वाली विस्तृत परियोजना आवेदन के साथ प्रस्तुत करें।

घ. लघु नारियल नर्सरी की स्थापना

यह योजना नारियल नर्सरियों की स्थापना हेतु वित्तीय सहायता देकर नारियल पौधों के उत्पादन में निजी क्षेत्र और अन्य एजेंसियों को बढ़ावा देने के लिए कार्यान्वित की जाती है।

वित्तीय सहायता प्रति वर्ष 25,000 प्रमाणित नारियल पौधों की उत्पादन क्षमता सहित 0.4 हेक्टर की प्रति इकाई के लिए परियोजना लागत का 25 प्रतिशत या 2.00 लाख रुपए तक, जो भी कम हो, (बीजफल की लागत और परिवहन, नर्सरी का अनुरक्षण और अन्य अवसंरचना सुविधाएं आदि का 100 प्रतिशत) सीमित की गयी है।

प्रति वर्ष 6,250 प्रमाणित नारियल पौधों की उत्पादन क्षमता सहित 0.10 हेक्टर की इकाई के लिए न्यूनतम सहायिकी 50,000 रुपए पर भी विचार किया जाता है। उत्तर और पूर्वोत्तर क्षेत्र के संबंध में अपेक्षित क्षेत्र और उत्पादन क्षमता 3125 नारियल पौधों के उत्पादन हेतु 12.5 सेंट है जिसके लिए पात्र वित्तीय सहायता 25000 रुपए है। पात्र सहायिकी दो किश्तों में जारी की जाती है।

2. नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार

नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार योजना के अंतर्गत नारियल के अधीन क्षेत्र और उत्पादन बढ़ाने हेतु नए क्षेत्र में नारियल पौधों का रोपण करने के लिए किस्म/स्थान आदि के आधार पर प्रति हेक्टर के लिए वित्तीय सहायता 6500 रुपए

क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम के अंतर्गत नारियल पौधों का रोपण

से 15000 रुपए तक दी जाती है। सहायिकी दो बराबर किश्तों में प्रति लाभार्थी अधिकतम 4 हेक्टर के लिए निम्नानुसार दी जाती है:

क्र.सं.	मद	सहायता का प्रतिमान	लागत शर्तें
क) सामान्य क्षेत्र			
1.	लंबी किस्में	26000 रु./हे.	प्रति लाभार्थी अधिकतम 4 हेक्टर के लिए लागत का 25 प्रतिशत, दो बराबर किश्तों में
2.	संकर किस्में	27000 रु./हे.	
3.	बौनी किस्में	30000 रु./हे.	
ख) पहाड़ी एवं अनुसूचित क्षेत्र			
1.	लंबी किस्में	55000 रु./हे.	प्रति लाभार्थी अधिकतम 4 हेक्टर के लिए लागत का 25 प्रतिशत, दो बराबर किश्तों में
2.	संकर किस्में	55000 रु./हे.	
3.	बौनी किस्में	60000 रु./हे.	

एकीकृत बागवानी विकास मिशन (एमआईडीएच), भारत सरकार के परिचालन दिशानिर्देशों के अनुसार पहाड़ी क्षेत्र में पहाड़ी क्षेत्र विकास कार्यक्रम और पश्चिम घाट विकास कार्यक्रम के अधीन शामिल क्षेत्र आते हैं। अनुसूचित क्षेत्र में भारत सरकार और राज्य सरकार द्वारा अधिसूचित क्षेत्र शामिल हैं।

3. उत्पादकता सुधार हेतु नारियल बागों में एकीकृत खेती

इस कार्यक्रम का उद्देश्य एकीकृत प्रणाली के ज़रिए नारियल बागों में उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाना और तद्वारा निम्नलिखित संघटक योजनाओं के ज़रिए इकाई बागों की कुल आय बढ़ाना है।

एकीकृत खेती के अंतर्गत निदर्शन प्लोटों की स्थापना और जैव खाद इकाइयों की स्थापना योजना के संघटकों का कार्यान्वयन मात्र सार्वजनिक क्षेत्र के फार्मों में किया जा रहा है।

क) निदर्शन प्लोटों की स्थापना

इसके अंतर्गत अन्य उपयुक्त योजनाओं के साथ सभी संभव समवाय करके एकीकृत खेती के ज़रिए उत्पादकता और आय सुधारने की संभावनाओं को निदर्शित करने की दृष्टि से नारियल बागों में की जा रही गतिविधियों के अनुसार प्रति हेक्टर 35,000 रुपए तक सीमित वित्तीय सहायता दो वार्षिक किश्तों में दी जाती है, जिसका कृषक समूह पर स्पष्ट प्रभाव पड़ सकता है।

ख) जैव खाद इकाइयों की स्थापना

इस योजना के अंतर्गत नारियल बागों में जैविक खाद के प्रयोग को लोकप्रिय बनाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

चार बार प्रति वर्ष 80 टन की उत्पादन क्षमता सहित 1200 घन फीट (आकार 60 फीट x 8 फीट x 2.5 फीट या 30 फीट x 8 फीट x 2.5 फीट की दो इकाइयाँ) आकार की और पक्की संरचना वाली इकाइयों के लिए लागत के 100 प्रतिशत हेतु अधिकतम 60,000 रुपए की सहायता दी जाती है और वित्तीय सहायता यथानुपात आधार पर दी जाएगी। छोटी इकाइयों को भी बढ़ावा दिया जाएगा और न्यूनतम आकार चार बार प्रति वर्ष 10 टन की उत्पादन क्षमता के साथ 150 घन फीट (आकार 15 फीट x 5 फीट x 2 फीट) का होना होगा और तदनुसार वित्तीय सहायता कम की जा सकती है।

इस योजना के अंतर्गत प्रति वर्ष 80 टन की उत्पादन क्षमता के साथ 5 मी. x 3 मी. (40 इकाइयाँ) आकार के कंक्रीट फर्श वाली कयर गूदा कंपोस्ट इकाइयाँ भी सहायिकी के पात्र हैं। प्रति वर्ष 10 टन की क्षमता के साथ कम से कम 5 मी. x 3 मी. (5 इकाइयाँ) आकार की छोटी इकाइयों के लिए भी वित्तीय सहायता दी जाती है। जैव खाद इकाइयों के लिए सुविधाजनक आकार का छत भी अपेक्षित है।

4. प्रौद्योगिकी निदर्शन/गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशाला

यह योजना बोर्ड की दो संस्थानों याने नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था, आलुवा, केरल और क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी, असम द्वारा कार्यान्वित की जाती है।

केरल में एरणाकुलम जिले के आलुवा में स्थित नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था नारियल के नए मूल्यवर्धित उत्पादों के विकास और मानकीकरण करने एवं उद्यमियों को उन्हीं का निदर्शन करने में सतत कार्यरत है। यहाँ पर प्रौद्योगिकी, उद्यमिता और गुणवत्ता प्रबंधन को एकीकृत करते हुए एक गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशाला और पायलट परीक्षण संयंत्र भी स्थापित हैं। नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था (सीआईटी) व्यक्तियों, किसान समूहों/स्वयं सहायता समूहों/महिला समूहों, निजी उद्यमियों और वोकेशनल हायर सेकंडरी स्कूल, स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों (खाद्य विज्ञान/खाद्य प्रौद्योगिकी/खाद्य इंजीनियरी/कृषि) के लिए विविध सेवाएं प्रदान करती है और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाती है।

क्र. सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम का नाम	अवधि	शुल्क	कार्यक्रम के अंतर्गत विषय/उत्पादें	लक्षित सहभागी	एक बैच के लिए अपेक्षित न्यूनतम सहभागी
1.	नारियल के सुविधाजनक खाद्य पदार्थ-मात्र निदर्शन	1 दिवस	प्रति व्यक्ति 500 रु.	नारियल चिप्स, चाकलेट, कुकीस, लेमनेड (स्क्वैश), अचार-5 उत्पादें, मूल्यवर्धन, पैकेजिंग और स्वच्छता पर सैद्धांतिक सत्र	कुटुंबश्री इकाइयाँ, अन्य स्वयं सहायता समूह, किसान उत्पादक संगठन (सीपीएस, सीपीएफ, सीपीसी), व्यक्ति	5
2.	नारियल के सुविधाजनक खाद्य पदार्थ	4 दिवस	प्रति व्यक्ति 2000 रु.	नारियल चिप्स, चाकलेट, कुकीस, लेमनेड, अचार, चटनी पाउडर, नारियल लड्डू, डाब स्प्रेड, नारियल कैंडी, नारियल जेली, विर्जिन नारियल तेल (ताप प्रक्रिया)-मूल्यवर्धन, पैकेजिंग और स्वच्छता पर सैद्धांतिक सत्र	कुटुंबश्री इकाइयाँ, अन्य स्वयं सहायता समूह, किसान उत्पादक संगठन	5
3.	मंदगामी प्रक्रिया द्वारा नारियल पानी से नारियल सिरका/नेटा डि कोको	1 दिवस	प्रति व्यक्ति 1000 रु.	नारियल सिरका	विज्ञान संबंधी प्राथमिक जानकारी रखने वाली कुटुंबश्री इकाइयाँ, व्यक्ति, अन्य समूह, किसान उत्पादक संगठन	5
4.	रासायनिक विश्लेषण पर प्रशिक्षण	1 हफ्ता	प्रति व्यक्ति 2500 रु.	नारियल उत्पादों का रासायनिक विश्लेषण	न्यूनतम योग्यता-रसायन विज्ञान/जैवरसायन विज्ञान/खाद्य रसायन विज्ञान/खाद्य प्रौद्योगिकी में स्नातक उपाधि	1
5.	सूक्ष्मजीवीय विश्लेषण पर प्रशिक्षण	2 हफ्ता	प्रति व्यक्ति 5000 रु.	सूक्ष्मजीवीय विश्लेषण	न्यूनतम योग्यता-सूक्ष्मजीव विज्ञान/अन्य जीव विज्ञान जिसमें सूक्ष्मजीव विज्ञान एक विषय हो, में स्नातक उपाधि	1
6.	उद्यमिता विकास कार्यक्रम	5 दिवस	शून्य	उद्यमिता, मूल्यवर्धन, खाद्य सुरक्षा, गुणवत्ता पहलुएं, विपणन रणनीतियाँ, नाविबो की योजनाएं आदि पर सत्र	किसान समूह/स्वयं सहायता समूह आदि	20

नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था, आलुवा

संस्था में नारियल आधारित उत्पादों के रासायनिक और सूक्ष्मजैविक विश्लेषण हेतु आईएसओ/आईईसी 17025:2017 के अनुसार एनएबीएल की मान्यता प्राप्त पूरी तरह सुसज्जित गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशाला कार्यरत है। नारियल आधारित उत्पादों, अन्य खाद्य उत्पादों और उर्वरकों के रासायनिक/सूक्ष्मजैविक परीक्षण चलाने के लिए एनएबीएल अपेक्षाओं के अनुसार आधुनिक सुविधाओं और उन्नत विश्लेषणात्मक उपकरणों से प्रयोगशाला सुसज्जित है। नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था में जिन रासायनिक और सूक्ष्मजीवीय पैरामीटरों का विश्लेषण हो रहा है उनके ब्यौरे और शुल्क बोर्ड की वेबसाइट में उपलब्ध हैं। असम के गुवाहटी में स्थित बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय में नारियल आधारित सुविधाजनक उत्पादों की तैयारी में चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

5. विपणन, बाज़ार आसूचना सेवाएं, सांख्यिकी और निर्यात संवर्धन परिषद का सुदृढ़ीकरण

देश में नारियल क्षेत्र के विकास हेतु बोर्ड द्वारा बाज़ार संवर्धन गतिविधियाँ चलायी जाती हैं। इसकी मुख्य गतिविधियों में बाज़ार संवर्धन, बाज़ार आसूचना, बाज़ार अनुसंधान, बाज़ार विकास, किसान समूहों का गठन और निर्यात संवर्धन परिषद के दायित्वों का निष्पादन शामिल हैं।

वाणिज्य विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार ने नारियल विकास बोर्ड को नारियल छिलके और रेशे से बने उत्पादों को छोड़कर सभी नारियल उत्पादों के लिए निर्यात संवर्धन परिषद के रूप में सार्वजनिक सूचना सं.169(आरई-2008)/2004-2009 द्वारा 1 अप्रैल 2009 को अधिसूचित किया है।

नाविबो निर्यात संवर्धन परिषद की हैसियत से पंजीकरण सह सदस्यता प्रमाणपत्र (जो निर्यातकों के लिए अनिवार्य है) जारी करता है ताकि सक्षम निर्यातक विदेश व्यापार नीति और वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार के कर निराकरण योजनाओं के तहत विभिन्न लाभ प्राप्त कर सकें। निर्यात संवर्धन परिषद के रूप में नाविबो नारियल क्षेत्र के उत्पादों को विविध प्रोत्साहन योजनाओं के तहत लाभ सुनिश्चित करना, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में नारियल क्षेत्र से निर्यातकों की भागीदारी सुगम बनाना, महत्वपूर्ण व्यापार सूचनाओं को प्रसारित करना, व्यावसायिक रूप से उपयोगी सूचनाएं प्रदान करना और निर्यातकों को अपना निर्यात विकसित करने एवं बढ़ाने में सहायता देना, संगोष्ठी, सम्मेलन और क्रेता-विक्रेता बैठक आयोजित करना, निर्यातक उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान करना आदि जैसी सेवाएं प्रदान करता है।

योजना के अंतर्गत नारियल क्षेत्र में किसान समूहों द्वारा प्रापण केंद्र की स्थापना हेतु वित्तीय सहायता, प्रसंस्करण के लिए कुशल श्रमशक्ति के विकास हेतु योजना, देशीय व्यापार मेलाओं/प्रदर्शनियों में भाग लेने के लिए उद्यमियों/नारियल उत्पादक कंपनियों को सहायता, गुणवत्ता प्रमाणन में सहायता आदि भी प्रदान की जाती है। नारियल प्रौद्योगिकी मिशन योजना के अंतर्गत नारियल उत्पादों के लिए बिक्री आउटलेटों की स्थापना हेतु और नारियल उत्पादों के ब्रैंड संवर्धन के लिए भी सहायता दी जाती है।

संघटक कार्यक्रमों के ब्यौरे बोर्ड की वेबसाइट में दिए गए हैं।

अन्य सांख्यिकीय अध्ययनों के अलावा नारियल संबंधी सांख्यिकी के भाग के रूप में नारियल के क्षेत्र एवं उत्पादन, बाज़ार भाव, मौसम, नारियल उत्पादों के आयात और निर्यात आदि से संबंधित मुख्य एवं गौण आँकड़ों का एकत्रीकरण, वर्गीकरण, संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्यान और बोर्ड की वेबसाइट एवं मुद्रण माध्यम आदि के ज़रिए किसान समूह को सूचनाओं का प्रसार करना जैसी गतिविधियाँ भी नियमित रूप से चलायी जाती हैं।

6. सूचना एवं सूचना प्रौद्योगिकी

बोर्ड अपने कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए नारियल संबंधी विविध विषयों पर किसानों और अन्य

सूचना एवं सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत कार्यक्रम

प्रदर्शनियों में सहभागिता

फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री

नीरा तकनीशियन

प्रकाशन

हितधारकों के लिए पंचायत, ब्लोक, जिला और राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करता है। बोर्ड सूचना एवं सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत कई कार्यक्रम चला रहा है जिसका उद्देश्य बोर्ड की विविध भाषाओं में प्रकाशित सावधिक गृह पत्रिकाओं जैसे मासिक (अंग्रेजी एवं मलयालम), तिमाही (तमिल, कन्नड़ और हिंदी) और द्विवार्षिक (मराठी और तेलुगु) प्रकाशनों, विभिन्न मुद्रण, इलेक्ट्रोनिक एवं सामूहिक माध्यमों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शनियों एवं मेलाओं के आयोजन/सहभागिता, संवर्धनात्मक वीडियो फिल्मों की स्क्रीनिंग, सफल गाथाओं आदि के प्रलेखीकरण आदि के ज़रिए नारियल खेती और उद्योग की विविध पहलुओं पर सूचना प्रसारित करना है।

नाविबो ने नारियल खेती, उत्पाद विकास, उत्पाद सुधार, गुणवत्ता उन्नयन, उत्पाद विविधीकरण, शिल्पकारिता, विस्तार गतिविधियों एवं किसान समूहों के लिए द्विवार्षिक राष्ट्रीय पुरस्कार योजना भी कार्यान्वित की है। बोर्ड नारियल समुदाय को समग्र रूप से लाभान्वित करने के लिए ताड़ारोहण मशीन का प्रयोग करके तुड़ाई सहित नारियल के पौधा संरक्षण पहलुओं, नारियल आधारित हस्तशिल्प निर्माण और नीरा तकनीशियन के लिए कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित करता है। इन कार्यक्रमों के लिए आवास सहित पूरा खर्च बोर्ड द्वारा उठाया जाता है। प्रौद्योगिकी निदर्शन योजना के अंतर्गत नीरा मास्टर तकनीशियन प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाया जाता है। बोर्ड अपने संगठन में पूरी तरह सुसज्जित पुस्तकालय और सूचना प्रौद्योगिकी के समर्थन से एमआईएस का भी अनुरक्षण करता है।

संघटक कार्यक्रमों/गतिविधियों के ब्यौरे और इस योजना के अंतर्गत अन्य ब्यौरे बोर्ड की वेबसाइट में दिए गए हैं।

7. तकनीकी सेवाएं, अवसंरचना एवं प्रशासन सहित परियोजना प्रबंधन

तकनीकी सेवाओं, मुख्य अवसंरचना विकास और स्थापना का खर्च इस योजना से उठाया जाता है।

8. नारियल प्रौद्योगिकी मिशन

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन योजना वित्तीय वर्ष 2001-02 के दौरान मंजूर की गई थी जिसके लक्ष्य हैं (क) अनुसंधान द्वारा नारियल के नए मूल्यवर्धित उत्पादों और उपोत्पादों का विकास, संभावी उद्यमियों को सहायता प्रदान करके इन प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण करवाके मूल्यवर्धित उत्पादों का वाणिज्यिक उत्पादन करना (ख) नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों और उपोत्पादों के उत्पादन हेतु बिना रुकावट के नारियल उद्योग को कच्ची सामग्रियों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए खास रोगों/कीटों के नियंत्रण हेतु प्रौद्योगिकियों का विकास सहित किसी भी निर्दिष्ट क्षेत्र में ऐसे कीटों और रोगों के नियंत्रण हेतु सहायता देना (ग) अनुसंधान, सर्वेक्षण और ब्रैंड संवर्धन द्वारा इस प्रकार नए विकसित मूल्यवर्धित उत्पादों और उपोत्पादों एवं परंपरागत नारियल उत्पादों (गोल खोपरा, खोपरा और तेल)

के लिए बाज़ार का विकास और संवर्धन। इस योजना का कार्यान्वयन समयबंधित परियोजना आधार पर किया जाता है।

- नारियल प्रौद्योगिकी मिशन योजना नारियल आधारित उद्योग (कयर आधारित उद्योग को छोड़कर) की स्थापना करने हेतु उद्यमियों / किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
- नारियल प्रौद्योगिकी मिशन योजना मुख्यतः अनुसंधान और विकास, तुड़ाई उपरांत प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, मूल्यवर्धन और कीट एवं रोग प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करती है।
- इस योजना के ज़रिए, नाविबो प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण और कीट एवं रोग प्रबंधन के क्षेत्र में अनुसंधान संस्थाओं को सहायता प्रदान की जाती है।
- प्रक्षेत्र स्तर पर कीट प्रकोप एक गंभीर समस्या है। नाविबो प्रौद्योगिकीय और गैर प्रौद्योगिकीय विधि विकसित/निर्दिशत करके कीट प्रबंधन करने के लिए अनुसंधान संस्थाओं को सहायता प्रदान करता है।
- प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण और मूल्यवर्धन के लिए नाविबो ने कई अनुसंधान संस्थाओं के सहयोग से नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों के लिए विविध प्रौद्योगिकियाँ विकसित की हैं। इन उत्पादों को राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर बढ़ावा दिया जाता है। अनुसंधान और विकास क्षेत्र को नारियल उद्योग के विकास हेतु नई प्रौद्योगिकियाँ खोज निकालने के लिए निदेश दिया गया है।

चार प्रमुख संघटकों को शामिल करके नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के ब्यौरे नीचे दिए गए हैं:

1. कीट एवं रोगप्रकोपित नारियल बागों के प्रबंधन हेतु प्रौद्योगिकियों का विकास और अभिग्रहण

योजना	सहायता का प्रतिमान	पात्र संस्थान
क. प्रौद्योगिकियों का विकास	100 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 50 लाख रुपए)	भा.कृ.अनु.प.(कें.रो.फ.अनु.सं.)/ राज्य कृषि विश्वविद्यालय/ राज्य विभाग और सहकारिता क्षेत्र के लिए
	50 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 25 लाख रुपए)	गैर सरकारी संगठनों और अन्य संगठनों के लिए
ख. प्रौद्योगिकियों का निदर्शन	100 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 25 लाख रुपए)	भा.कृ.अनु.प.(कें.रो.फ.अनु.सं.)/ राज्य कृषि विश्वविद्यालय/ राज्य विभाग/ सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य उपक्रम/पंजीकृत सहकारी समितियों के लिए
	50 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 10 लाख रुपए)	व्यक्तियों/किसान समूहों/गैर सरकारी संगठनों/निजी कंपनियों के लिए
ग. प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण	प्रौद्योगिकी अभिग्रहण की लागत का 25 प्रतिशत	किसान समूहों/गैर सरकारी संगठनों/अन्य संगठनों के लिए

2. प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण हेतु प्रौद्योगिकियों का विकास और अभिग्रहण

योजना	सहायता का प्रतिमान	पात्र संस्थान
क. प्रौद्योगिकियों का विकास	100 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 75 लाख रुपए)	सरकारी संस्थाओं/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और सहकारी समितियों के लिए
	75 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 35 लाख रुपए)	गैर सरकारी संगठनों, निजी उद्यमियों और अन्य अनुसंधान संगठनों के लिए
ख. प्रौद्योगिकियों का अधिग्रहण, प्रशिक्षण और निदर्शन	100 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 25 लाख रुपए)	भा.कृ.अनु.प. (कें.रो.फ.अनु.सं.)/ राज्य कृषि विश्वविद्यालय/राज्य विभाग/ सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य उपक्रम/पंजीकृत सहकारी समितियों के लिए
	50 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 10 लाख रुपए)	निजी उद्यमियों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य संगठनों के लिए
ग. प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण	25 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 50 लाख रुपए)	किसान समूहों/गैर सरकारी संगठनों/निजी उद्यमियों/ अन्य संगठनों के लिए
	33.3 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 50 लाख रुपए)	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति महिला किसानों के लिए
	50 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 50 लाख रुपए)	संघ शासित क्षेत्र अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह और लक्षद्वीप में उन्नत कृषि के मामले में

3. बाज़ार अनुसंधान और संवर्धन		
योजना	**सहायता का प्रतिमान**	**पात्र संस्थान**
क. बाज़ार अनुसंधान	100 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 25 लाख रुपए)	सरकारी एजेंसियों और सहकारी समितियों के लिए
	50 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 12.50 लाख रुपए)	व्यक्तियों, गैर सरकारी संगठनों, अन्य संगठनों के लिए
ख. बाज़ार संवर्धन-ब्रैंड संवर्धन	100 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 25 लाख रुपए)	सरकारी एजेंसियों और सहकारी समितियों के लिए
	50 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 6 लाख रुपए)	नारियल उत्पादक समितियों के फेडरेशनों के लिए (एफपीओ)
	50 प्रतिशत (प्रति परियोजना अधिकतम 15 लाख रुपए)	गैर सरकारी संगठनों और निजी संस्थाओं के लिए

4. तकनीकी समर्थन, बाह्य मूल्यांकन और आपातिक अपेक्षाएं: नारियल प्रौद्योगिकी मिशन की परियोजना अनुमोदन समिति द्वारा निर्णय लेने के अनुसार आवश्यकता आधार पर सहायता दी जाती है।

मिशन संबंधी विस्तृत जानकारी, मंजूर की गई परियोजनाएं, आवेदन प्रपत्र आदि बोर्ड की वेबसाइट में अपलोड किए गए हैं।

9. पुराने नारियल बागों के पुनर्रोपण एवं पुनरुज्जीवन

इस योजना का मुख्य लक्ष्य गंभीर रूप से रोग प्रकोपित, अनुत्पादक, पुराने और जीर्ण ताड़ों को काटकर निकालके, गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों से पुनर्रोपण करके और एकीकृत खेती विधि के ज़रिए शेष ताड़ों को पुनरुज्जीवित करके नारियल की उत्पादकता और उत्पादन बढ़ाना है।

वित्तीय सहायता तीन संघटकों के अंदर निम्न प्रकार से दी जाती है:

1. **पुराने, जीर्ण, अनुत्पादक एवं रोगप्रकोपित ताड़ों को काटकर निकालना:** प्रथम वर्ष के दौरान प्रति पेड़ 1000 रुपए की दर पर प्रति हेक्टर अधिकतम 32000 रु. की सहायिकी प्रदान की जाती है।
2. **पुनर्रोपण:** प्रथम वर्ष के दौरान प्रति पैधा 40 रुपए की दर पर प्रति हेक्टर अधिकतम 4000 रुपए की सहायिकी प्रदान की जाती है।
3. **एकीकृत प्रबंधन द्वारा शेष ताड़ों का पुनरुज्जीवन:** प्रति हेक्टर 17500 रुपए की सहायिकी 8750 रुपए की दो वार्षिक किस्तों में प्रदान की जाती है।

यह योजना राज्य विभाग/बागवानी विभाग के ज़रिए राज्य विनिर्दिष्ट समस्याओं के अनुसार परियोजना आधार पर कार्यान्वित की जाती है। परियोजना में बेसलाइन सर्वेक्षण

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अंतर्गत सहायता प्राप्त इकाइयाँ

पुनर्रोपित नारियल पौध

के आधार पर स्थान, हटाए जाने वाले ताड़ों की संख्या, पुनरुज्जीवन हेतु क्षेत्र, पुनर्रोपण हेतु ताड़ों की संख्या आदि सहित कार्ययोजना और प्रचालन कैलेंडर स्पष्ट रूप से सूचित किया जाना होगा। राज्य स्तरीय प्रशासनिक अनुमोदन जारी करने के बाद परियोजना पर विचार किया जाएगा।

कार्यक्रम संबंधी विस्तृत दिशानिर्देश के लिए कृपया https://coconutboard.gov.in/docs/r-n-r.pdf में लॉग ऑन करें।

10. नारियल पेड़ बीमा योजना

नारियल पेड़ बीमा योजना 2021-22 के दौरान भी जारी रखी गयी जिसका उद्देश्य प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु संबंधी खतरों, कीटों, रोगों और अन्य आपदाओं के खिलाफ नारियल पेड़ों का बीमा कराना है। इस योजना के अंतर्गत किसी सटे हुए क्षेत्र (एकल/मिश्रित) के 4 वर्ष से 60 वर्ष तक की आयु के सभी स्वस्थ, फलदायक पेड़ों को मृत्यु/ताड़ का नाश करने वाले/अनुत्पादक बना देने वाले प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ बीमा सुरक्षा प्रदान की जा सकती है। प्रीमियम का 50 प्रतिशत बोर्ड द्वारा उठाया जाता है और शेष रकम 25 प्रतिशत की दर पर राज्य सरकार एवं लाभभोगी किसान द्वारा निम्नानुसार उठायी जाती है।

ताड़ की आयु	प्रीमियम (रु.)	बोर्ड का हिस्सा (रु.)	राज्य सरकार का हिस्सा (रु.) (25 प्रतिशत)	किसान का हिस्सा (रु.) (25 प्रतिशत)	बीमाकृत राशि (रु.)
4-15 वर्ष	9.00	4.50	2.25	2.25	900
16-60 वर्ष	14.00	7.00	3.50	3.50	1750

प्राकृतिक आपदा से नुकसानग्रस्त नारियल पेड़

ऊँचे नारियल पेड़ पर चढ़ते नारियल ताड़ारोहक

बीमा सुरक्षा प्रत्येक पेड़ के लिए है और क्षेत्र आधार पर नहीं है। बागान का आंशिक बीमा करने नहीं देता है। बीमा योजना के अंतर्गत बीमा करने के लिए मानदंड कम से कम पाँच स्वस्थ फलदायी पेड़ है। सभी नारियल उत्पादक राज्यों में योजना का कार्यान्वयन कृषि बीमा कंपनी और कार्यान्वित राज्य सरकारों के द्वारा किया जा रहा है।

योजना संबंधी विस्तृत दिशानिर्देश https://coconutboard.gov.in/docs/cpis-guidelines.pdf में दिए गए हैं।

11. केरा सुरक्षा बीमा योजना

नारियल ताड़ारोहकों, नीरा तकनीशियनों/नारियल पैदावार लेने वालों के लिए केरा सुरक्षा बीमा योजना वर्ष 2021-22 के दौरान भी जारी है। बीमा योजना सर्वश्री ऑरिएंटल इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड के सहयोग से कार्यान्वित की जाती है। सभी नारियल उत्पादक राज्यों में योजना कार्यान्वित की जाती है।

पोलिसी के सारे संघटकों के अंतर्गत वर्धित हितलाभों के साथ योजना के प्रावधानों का संशोधन 1 नवंबर 2020 से किया गया है। संशोधित बीमाकृत राशि 24 घंटे मृत्यु सहित सभी दुर्घटनाओं के लिए 5.00 लाख रुपए है।

पोलिसी का वार्षिक प्रीमियम 398.65 रुपए है जिसमें से 299.65 रुपए बोर्ड द्वारा तथा शेष 99 रुपए नारियल ताड़ारोहक द्वारा अदा किया जाता है। लाभभोगी को प्रीमियम के अपने हिस्से का 99 रुपए डीडी के ज़रिए या ऑनलाइन अदा करने का विकल्प प्राप्त है।

योजना के अंतर्गत संघटक प्रावधान, वर्तमान क्षतिपूर्ति, बोर्ड के दायित्व, बीमा एजेंसी और लाभभोगी, आवेदन पत्र आदि बोर्ड की वेबसाइट में उपलब्ध हैं।

(इन योजनाओं के अंतर्गत लाभ प्राप्त करने या आगे की जानकारी हेतु देश के विविध भागों में स्थित बोर्ड के कार्यालयों से संपर्क कर सकते हैं।)

देश के विविध भागों में स्थित बोर्ड के कार्यालयों के प्रचालन का भौगोलिक क्षेत्राधिकार नीचे दिए गए हैं:

नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

(पता, दूरभाष सं. और ईमेल संबंधी ब्यौरे के लिए https://coconutboard.gov.in/CDBOffices.aspx में देख लें)

क्र.सं.	क्षेत्र	बोर्ड के इकाई कार्यालयों का स्थान	राज्य/संघ शासित क्षेत्र जहाँ योजना का कार्यान्वयन किया जा रहा है
1.	कोची, केरल	मुख्यालय, कोची, केरल	केरल और लक्षद्वीप द्वीपसमूह
		प्रबीउ फार्म, नेर्यमंगलम, केरल	
		नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था, आलुवा, केरल	
		क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम, केरल	
2.	बेंगलूरु, कर्नाटक	क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु, कर्नाटक	कर्नाटक और गोवा
		प्रबीउ फार्म, मंड्या, कर्नाटक	
		राज्य केंद्र, ठाणे, महाराष्ट्र	महाराष्ट्र
		प्रबीउ फार्म, पालघर, महाराष्ट्र	
3.	चेन्नै, तमिलनाडु	क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै, तमिलनाडु	तमिलनाडु, पुतुच्चेरी
		प्रबीउ फार्म, धली, तमिलनाडु	
		राज्य केंद्र, विजयवाड़ा, आँध्र प्रदेश	आँध्र प्रदेश, तेलंगाना
		प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा, आँध्र प्रदेश	
		राज्य केंद्र, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह	अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह
4.	पटना, बिहार	क्षेत्रीय कार्यालय, पटना, बिहार	बिहार, झारखंड
		प्रबीउ फार्म, मधेपुरा, बिहार	
		राज्य केंद्र, कोलकाता, पश्चिम बंगाल	पश्चिम बंगाल
		प्रबीउ फार्म, फुलिया, पश्चिम बंगाल	
		राज्य केंद्र, पित्तापल्ली, ओडिशा	ओडिशा
		प्रबीउ फार्म, पित्तापल्ली, ओडिशा	
		बाज़ार विकास सह सूचना केंद्र, दिल्ली	गुजरात, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू और कश्मीर
		प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव, छत्तीसगढ़	छत्तीसगढ़
5.	गुवाहटी, असम	क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी, असम	सारे उत्तरपूर्वी राज्य
		प्रबीउ फार्म, अभयपुरी, असम	
		प्रबीउ फार्म, हिच्चाचेरा, त्रिपुरा	

बोर्ड के कार्यक्रमों का कार्यान्वयन राज्य विभागों के साथ निकट सहयोग से किया जाता है, इसलिए राज्य/संघ शासित क्षेत्र के कृषि/बागवानी विभाग के निकटतम कार्यालयों से भी संपर्क करें। ■

प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म, मंड्या- नारियल पौधों का एक महत्वपूर्ण स्रोत

जयनाथ आर. और **कुमारवेल एस.**

सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म, मंड्या, कर्नाटक एवं विकास अधिकारी, नाविबो, कोची

1. आमुख

नारियल के उत्पादन एवं उत्पादकता की दृष्टि से भारत का स्थान विश्व में सर्व प्रथम है। नारियल की खेती देश के 16 राज्यों एवं चार संघ शासित क्षेत्रों में 21.89 लाख हेक्टर में की जाती है और उत्पादन 2120.67 करोड़ नारियल (अखिल भारतीय अग्रिम प्राक्कलन 2020-21) है। उत्पादन एवं उत्पादकता में रोपण सामग्री की गुणवत्ता और साथ साथ प्रबंधन विधियाँ एवं क्षेत्र विस्तार महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गैर पारंपरिक एवं पारंपरिक नारियल उत्पादक क्षेत्रों में नई रोपाई के लिए तथा पारंपरिक नारियल उत्पादक क्षेत्रों में पुनर्रोपण के लिए 10 दशलक्ष नारियल पौधों की आवश्यकता प्राक्कलित की गई है जब कि सरकारी एवं निजी क्षेत्रों द्वारा आपूर्ति लगभग 35 प्रतिशत प्राक्कलित की जाती है।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन कार्यरत नारियल विकास बोर्ड ने किसानों को नारियल की वैज्ञानिक खेती का निदर्शन करने और गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों के उत्पादन के उद्देश्य से देश के विभिन्न भागों में 11 प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म स्थापित किए हैं।

नारियल विकास बोर्ड ने अपने प्रथम फार्म की स्थापना 1982 के दौरान कर्नाटक के मंड्या जिले के लोकसरा के पास पुरा गाँव में कर्नाटक सरकार से लिए गए 20 हेक्टर (50 एकड़) क्षेत्र में की थी। यह फार्म मंड्या शहर से 10 कि.मी. दक्षिण में, मैसूरु से 45 कि.मी. उत्तरपूर्व और राज्य की राजधानी बेंगलूरु से लगभग 110 कि.मी. दक्षिणपश्चिम दिशा में स्थित है। फार्म का कुल क्षेत्र 2 खंडों (30 एकड़ एवं 20 एकड़) में विभाजित है तथा बाग

प्रबीउ फार्म, मंड्या का नारियल बाग

की स्थापना प्रतिष्ठित स्रोतों से संचयित उन्नत रोपण सामग्रियों से की गई है।

2. मिट्टी एवं जलवायु

यहाँ की मिट्टी मुरम कंकरीली लाल रेतीली दोमट है और इसका पीएच मान 6.5 से 7.5 है जो नारियल की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त है। पिछले 10 सालों के मौसम के आँकड़े यह दर्शाता है कि फार्म में सालाना 1127 मिलीमीटर औसत बारिश प्राप्त होती है। सालभर में बारिश एकसमान प्राप्त नहीं होती है। सालाना बारिश का 62 प्रतिशत अगस्त से नवंबर तक प्राप्त होती है और बारिश के दिन प्रति वर्ष 40 से 50 दिन होते हैं। पिछले दस वर्षों में रिकार्ड किए गए अधिकतम औसत तापमान 30^0 सेंटीग्रेड और न्यूनतम तापमान 19^0 सेंटीग्रेड है। 40.3^0 सेंटीग्रेड का अधिकतम तापमान 2016 अप्रैल एवं मई महीनों में एवं 13^0 सेंटीग्रेड का न्यूनतम तापमान 2017 एवं 2019 जनवरी में रिकार्ड किए गए हैं।

3. नारियल का उत्पादन एवं उत्पादकता

फार्म में मौजूद नारियल पेड़ों की संख्या 4095 है (पूरक रोपण की गई 468 चावक्काट नारंगी बौनी किस्म सहित) जिसमें 3200 पेड़ फलदायी स्थिति में हैं। फार्म में अनुरक्षित प्रजातियाँ हैं तिप्तूर लंबी (899), पश्चिम तटीय लंबी (199), तमिलनाडु लंबी (138), लक्षद्वीप साधारण (66), बनावली लंबी (120), चावक्काट नारंगी बौनी (1170), मलयन पीली बौनी (161), चावक्काट हरी बौनी (297), मलयन नारंगी बौनी (149), संकर (308) एवं विदेशी किस्में (120) आदि। निदर्शन के लिए रोपण की चौकोर, त्रिकोणीय, समकोणीय एवं एकल/द्वि कतार प्रणालियाँ अपनाई गई हैं।

फार्म से प्रति वर्ष प्राप्त उपज लगभग 3.20 लाख नारियल है और औसत उत्पादकता प्रति पेड़ 88.40 नारियल है। विस्तृत वर्षवार ब्यौरे सारणी 1 में दिए गए हैं।

सारणी 1: 2011-12 से 2020-21 तक प्रबीउ फार्म, मंड्या में नारियल की पैदावार

वर्ष	लंबा	बौना	संकर	लंबा और बौना से संकरित फल	कुल नारियल
2011-12	167836	131863	51390	80573	431662
2012-13	197872	128111	39252	58900	424135
2013-14	156187	109858	30081	43755	339881
2014-15	117346	51631	19982	31659	220618
2015-16	190284	185644	62038	85145	523111
2016-17	182121	58997	50270	34840	326228
2017-18	55140	79626	24409	24485	183660
2018-19	98701	42279	31114	9227	181321
2019-20	176896	153424	38879	42940	412139
2020-21	121121	26266	12340	3909	163636
कुल	**1463504**	**967699**	**359755**	**415433**	**3206391**

फार्म में प्रति पेड़ 163.47 नारियल की औसत उत्पादकता के साथ 5.23 लाख नारियल का उच्चतम उत्पादन वर्ष 2015-16 के दौरान रिपोर्ट की गई थी। वर्ष 2011-12, 2012-13 एवं 2019-20 के दौरान भी उसी प्रकार से उच्चतर उत्पादन रिपोर्ट की गई थी। वर्ष 2016-17 में मानसून बारिश सामान्य से कम होने के परिणामस्वरूप पानी का अभाव एवं

नारियल नर्सरी

मलयन पीला बौना

पश्चिम तटीय लंबा

मलयन नारंगी बौना

भयंकर सूखा हुआ था जिससे आगमी दो वर्षों में उपज में गिरावट हुई। वर्ष 2020-21 के दौरान भी उपज में घटाव पाया गया जिसका कारण मुख्यतया बारिश में कमी एवं सफेद मक्खी का गंभीर प्रकोप था।

नारियल उत्पादन के जिलेवार आँकड़ों (2016-17) के अनुसार राज्य में नारियल की उत्पादकता में दक्षिण कन्नड जिला (13053 नारियल/हेक्टर) एवं उडुप्पि जिला (11196 फल/हेक्टर) के बाद तीसरे स्थान पर मंड्या जिला (111.84 नारियल/हेक्टर) है। सारणी 1 से यह पाया जाता है कि फार्म में वर्ष 2016-17 की उत्पादकता प्रति हेक्टर 16311 नारियल (कुल उत्पादन- 326228 नारियल) थी जो जिले के औसत से 46 प्रतिशत अधिक थी।

प्रबीउ फार्म, मंड्या में संकर नारियल पेड़ों की औसत उत्पादकता प्रति वर्ष प्रति पेड़ लगभग 127 नारियल है जिसके बाद लंबी और बौनी किस्में आती हैं जिनकी उत्पादकता प्रति वर्ष प्रति पेड़ क्रमशः 95 और 76 नारियल हैं। लंबी किस्मों में तिप्तूर लंबी किस्म में सबसे अधिक उत्पादकता रिकार्ड की गई। इसके बाद पश्चिम तटीय लंबा, बनावली लंबा एवं तमिलनाडु लंबा आते हैं। बौनी किस्मों में सबसे उच्चतम उत्पादकता मलयन नारंगी बौना में रिकार्ड की गई जो कि 103.78 नारियल है और उसके बाद मलयन पीला बौना एवं चावक्काट नारंगी बौना आते हैं। बौनी किस्मों का रोपण 1984-1986 के दौरान किया गया था। बौनी किस्मों के सारे पेड़ों की आयु 35 से 37 साल हैं। बौनी किस्मों से औसतन 40 साल तक ही आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। उत्पादकता में कमी दर्शाए गए चावक्काट नारंगी बौने के खंड़ों (1 एवं 2) में वर्ष 2015-16 के दौरान उसी किस्म के नारियल पौधों से पूरक रोपण किया गया। इन खंड़ों के पुराने बौने पेड़ों को चरणबद्ध तरीके से निकालना होगा ताकि नए रोपित पौधों का प्रभावी तरीके से प्रबंधन किया जा सके।

सारी किस्मों की औसत उत्पादकता सारणी 2 में दी गई है।

सारणी 2: 2011-12 से 2020-21 तक नारियल का किस्मवार कुल उत्पादन और उत्पादकता

किस्म	कुल ताड़ों की संख्या	गत 10 वर्षों का कुल उत्पादन (फलों की संख्या)	औसत उत्पादकता (फल/ताड़/वर्ष)
तिप्तूर लंबा	899	1005412	111.84
पश्चिम तटीय लंबा	199	151761	76.26
बनावली लंबा	120	89361	74.47
तमिलनाडु लंबा	138	99730	72.27
लक्षद्वीप साधारण	66	40276	61.02
विदेशी	120	67316	56.10
कुल / औसत	**1542**	**1463525**	**94.91**
संकर	308	390317	126.73
कुल / औसत	**308**	**390317**	**126.73**
चावक्काट नारंगी बौना	1170	896649	70.64
चावक्काट हरा बौना	297	151161	50.90
मलयन नारंगी बौना	149	154633	103.78
मलयन पीला बौना	161	140879	87.50
कुल / औसत	**1777**	**1352549**	**76.11**
कुल योग / औसत	**3627**	**3206391**	**88.40**

नर्सरी कार्यक्रम को समर्थन देने हेतु फलदायी पेड़ों की संख्या बरकरार रखने के लिए अलाभकर पेड़ों को निकालने एवं पूरक रोपण के कार्य चरणबद्ध तरीके से किए जा रहे हैं ।

मलयन नारंगी बौनी किस्म के नारियल पौधों से अधोरोपण

4. सिंचाई एवं बाग का प्रबंधन

वर्षापात का वितरण एकसमान नहीं है, इसलिए फार्म मुख्य रूप से कृष्णराजसागर रिसरवोयर परियोजना के पानी पर निर्भर करता है। बाग की सिंचाई कृष्णराजसागर बांध से छोड़ते नहर पानी से पाक्षिक तौर पर की जाती है। मानसून सामान्य से कम होने पर पानी की कमी होती है और इसका असर ताड़ की उपज पर पड़ता है। तथापि, पानी संरक्षण उपाय जैसे कि नारियल पत्तों एवं टुकड़े किए गए जैव अपशिष्टों से पलवार करना आदि फार्म में किए जाते हैं। सिंचाई अवसंरचना सुधारने के उपाय भी किए जा रहे हैं।

नारियल पेड़ों को हर वर्ष 50 किलोग्राम घूरे की खाद दी जाती है और थालों में मिलायी जाती है। प्रति वर्ष प्रति पेड़ 1 किलोग्राम यूरिया एवं 2 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश की दर पर दो भागों में रासायनिक उर्वरक जून-जुलाई एवं अक्तूबर-नवंबर के दौरान दिया जाता है। मृदा विश्लेषण रिपोर्ट एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान की सिफारिशों के आधार पर 2019-20 से लेकर तीन वर्ष की अवधि के लिए स्फुर आधारित उर्वरकों का प्रयोग छोड़ दिया गया है। पेड़ों की सूक्ष्मपोषकतत्त्वों की अपेक्षाओं की पूर्ति करने हेतु 100 ग्राम बोरेक्स एवं 500 ग्राम मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग भी रासायनिक उर्वरकों की दूसरी खुराक के साथ किया जाता है। केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान की सिफारिशों के अनुसार फार्म में जैव खाद/हरी खाद का प्रयोग एवं फार्म के अपशिष्टों का जैव पुनर्चक्रण भी किया जाता है। फार्म में चार वर्मिकंपोस्ट इकाइयों का अनुरक्षण किया जाता है जिनकी वार्षिक उत्पादन क्षमता 80 से 100 टन है। हाल में की गई मृदा जाँच के निष्कर्षों से यह सूचित हो गया है कि मिट्टी में स्फुर उच्च मात्रा में उपलब्ध है। मिट्टी में निहित जैविक तत्त्व में भी सुधार पाया गया है।

वर्मीकंपोस्ट इकाई

केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान एवं राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो की सिफारिशों के अनुसार आवश्यकता के आधार पर नया आक्रामक कीट सफेद मक्खी सहित कीटों एवं रोगों के प्रबंधन हेतु उपाय अपनाए जाते हैं। कर्नाटक राज्य के नारियल उत्पादक इलाकों में व्यापक कृष्णशीर्ष इल्ली के प्रबंधन के लिए जैव एजेंटों के उत्पादन हेतु 1990 के दौरान परजीवी प्रजनन प्रयोगशाला की स्थापना की गई थी और किसानों को कृष्णशीर्ष इल्ली के शत्रु जैव एजेंटों को उपलब्ध कराया गया।

5. अंतर फसल/ मिश्रित खेती

फार्म में नारियल के साथ बहु प्रजातीय खेती को बढ़ावा देने के लिए क) नारियल, कोको एवं जायफल ख) नारियल एवं कोको के फसल संयोजनों के निदर्शन प्लोटों की स्थापना की गई है और इसका बखूबी अनुरक्षण किया जा रहा है।

6. रोपण सामग्री का उत्पादन

गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्री के उत्पादन के मुख्य उद्देश्य को पूरा करने हेतु वार्षिक तौर पर 1.50 लाख नारियल पौधों के

कोको के साथ अंतर खेती

उत्पादन के लिए 2695 मातृवृक्षों को पहचाना गया है। फार्म में नौ चयनित किस्में उपलब्ध हैं- बौनी - चावक्काट नारंगी बौनी, चावक्काट हरी बौनी, मलयन नारंगी बौनी, मलयन पीली बौनी एवं लंबी - तिप्तूर लंबी, तमिलनाडु लंबी, बनावली लंबी, पश्चिम तटीय लंबी एवं लक्षद्वीप साधारण। पिछले दशक में फार्म में उत्पादित नारियल पौधों के ब्यौरे सारणी 3 में दिए गए हैं।

सारणी 3: 2011-12 से 2020-21 तक प्रबीउ फार्म, मंड्या में उत्पादित नारियल पौधे (सं.)

वर्ष	लंबा	बौना	संकर	कुल नारियल पौधे
2011-12	60708	64613	10172	135493
2012-13	154171	92706	11215	258092
2013-14	150390	68508	9301	228199
2014-15	84882	51952	8755	145589
2015-16	111187	42018	7980	161185
2016-17	99325	55323	12565	167213
2017-18	83935	52583	10911	147429
2018-19	10790	38604	4343	53737
2019-20	35724	22001	2504	60229
2020-21	93067	53480	12680	159227
कुल	**884179**	**541788**	**90426**	**1516393**

फार्म में उच्च उपज देने वाले बौना x लंबा संकरों के उत्पादन के लिए संकरण कार्यक्रम भी चलाया जाता है। इस अवधि के दौरान कुल 90426 बौना x लंबा संकरों का उत्पादन किया गया। वर्ष 2020-21 के दौरान 12680 संकर पौधों का उच्च वार्षिक उत्पादन रिपोर्ट किया गया। सारणी 4 में संकर नारियल पौधों के उत्पादन के ब्यौरे दिए गए हैं।

सारणी 4: 2011-12 से 2020-21 तक प्रबीउ फार्म, मंड्या में संकरण एवं उत्पादित संकर नारियल पौधों के ब्यौरे

वर्ष	विपुंसीकृत पुष्पक्रमों की संख्या	तुड़ाई किए गए संकरित फलों की संख्या	बोए गए संकरित फलों की संख्या	संकर नारियल पौधों का उत्पादन
2011-12	7141	80573	79871	10172
2012-13	6724	58900	54460	11215
2013-14	5489	43755	36045	9301
2014-15	7970	31659	31609	8755
2015-16	5222	85145	85145	7980
2016-17	4284	34840	34840	12565
2017-18	2220	24485	21857	10911
2018-19	5295	9227	6190	4343
2019-20	1099	42940	40720	2504
2020-21	1283	3909	3386	12680
कुल	**46727**	**415433**	**394123**	**90426**

श्री के. नारायणन मास्टर नाविबो का उपाध्यक्ष नामित

केरल राज्य के किसानों के प्रतिनिधि श्री के. नारायणन मास्टर को नारियल विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष के रूप में 27 दिसंबर 2021 से एक वर्ष के लिए नामित किया गया है। वे नारियल की खेती और संबद्ध क्षेत्रों के विकास में सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। वे सितंबर 2020 से नारियल विकास बोर्ड के सदस्य के रूप में कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में वे भाजपा के राज्य समिति के सदस्य हैं और दो बार भाजपा, मलप्पुरम जिला के अध्यक्ष भी रहे। वे ए.एम.यू.पी. विद्यालय, ओषूर, मलप्पुरम जिला के प्रधान अध्यापक थे। पत्नीः श्रीमती षीबा, बच्चेः डा. विवेक और डा.आतिरा।

प्रबीउ फार्म, मंड्या दक्षिण राज्यों में बौने नारियल पौधों का अग्रणी आपूर्तिकर्ता है। फार्म में उत्पादित बौना x लंबा संकरों के लिए प्रदेश में बड़ी मांग है। किसानों को लंबी किस्मों के पौधे प्रति पौधा 80 रुपए, बौनी किस्मों के पौधे प्रति पौधा 100 रुपए एवं संकर/प्राकृतिक तौर पर संकरित बौनी किस्मों के पौधे प्रति पौधा 300 रुपए की दर पर उपलब्ध कराए जाते हैं। किसान नारियल पौधों के लिए पंजीकरण कर सकते हैं तथा पौधों की उपलब्धता एवं बुकिंग की वरीयता के आधार पर किसानों को नारियल पौधे ले जाने के लिए सूचित किया जाता है।

7. अन्य गतिविधियाँ

किसानों सहित फार्म में सीधे दौरा करने के लिए आने वाले आगंतुकों; कृषि विज्ञान केंद्र, मैसूरु एवं राज्य सरकार के विभिन्न विस्तार एवं कौशल विकास कार्यक्रमों के सहभागियों/प्रशिक्षणार्थियों; छात्रों एवं अन्य लोगों को अपेक्षित तकनीकी समर्थन एवं बोर्ड के विभिन्न कार्यक्रमों एवं फार्म में चलायी जा रही गतिविधियों की जानकारी प्रदान की जाती है। फार्म किसानों के लाभार्थ राज्य कृषि/ बागवानी विभाग, राज्य कृषि विश्वविद्यालय एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाओं के सहयोग से जागरूकता/विस्तार कार्यक्रम आयोजित करता है और उनमें भाग लेता है।

8. फार्म से प्राप्तियाँ

नारियल विकास बोर्ड के 11 प्रबीउ फार्मों में से प्रबीउ फार्म, मंड्या से इसकी स्थापना से लेकर अच्छी आय प्राप्त हो रही है। नारियल, नारियल के पौधे, अंतर फसल उत्पादें आदि की बिक्री से वर्ष 2011-12 से 2020-21 तक कुल 1398.52 लाख रुपए प्राप्त हुआ है। फार्म में वर्ष 2015-16 के दौरान 209.65 लाख रुपए की उच्चतम आय रिपोर्ट की थी। तत्पश्चात् वर्ष 2020-21 के दौरान 167.24 लाख रुपए प्राप्त हुआ था। उपर्युक्त अवधि के दौरान कुल 908.86 लाख रुपए फार्म एवं नर्सरी के संचालन व्यय के रूप में खर्च किया गया। सारणी 5 में वर्षवार व्यय एवं प्राप्तियाँ दर्शायी गई हैं।

सारणी 5: 2011-12 से 2020-21 तक फार्म की प्राप्तियों के ब्यौरे

वर्ष	फार्म का व्यय (लाख रु.)	फार्म की प्राप्तियाँ (लाख रु.)
2011-12	90.09	129.16
2012-13	104.22	144.56
2013-14	43.60	98.61
2014-15	132.37	164.26
2015-16	131.04	209.65
2016-17	93.96	138.24
2017-18	84.79	163.61
2018-19	81.31	53.11
2019-20	100.09	130.08
2020-21	47.39	167.24
कुल	**908.86**	**1398.52**

9. निष्कर्ष

उपर्युक्त बातों से यह साफ स्पष्ट हो जाता है कि कर्नाटक के मंड्या जिले में स्थित नारियल विकास बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नारियल की विविध प्रजातियों/ संकर किस्मों की गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों के उत्पादन एवं वितरण के ज़रिए नारियल समुदाय की सेवा करने में अहम भूमिका निभाता है। दूरभाष संख्या 08232 298015 पर और ई मेल f-mandya@coconutboard.gov.in द्वारा फार्म से संपर्क कर सकते हैं। ■

उच्च पैदावार और आय के लिए नारियल बागों में रतालू की अंतर खेती - उन्नत किस्में और खेती प्रौद्योगिकियाँ

डा.जगन्नाथन, जी.बैजु और **एम.एन.षीला**
भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, श्रीकारियम, तिरुवनंतपुरम-695 017, केरल

भारत में वाणिज्यिक फसल के रूप में रतालू वर्ग के चुप्रि आलू *(डायोस्कोरिया अलाटा)*, सफेद चुप्रि आलु *(डायोस्कोरिया रोटुंडटा)* और सुथनी *(डायोस्कोरिया एस्कुलेंटा)* की खेती 40,000 हेक्टर क्षेत्र में की जाती है और कुल उत्पादन लगभग 11.20 लाख टन है। इसकी औसत उपज प्रति हेक्टर क्षेत्र से 28 टन है। भारत के 13 राज्यों के 44 जिलों में इसकी खेती व्यापक तौर पर की जाती है। रतालू की खेती मुख्यतः आँध्र प्रदेश, ओडिशा, केरल, असम, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड और त्रिपुरा राज्यों में हो रही हैं। रतालू ऐसी फसल है कि इसके कई पौष्टिक और स्वास्थ्य लाभ हैं। रतालू में स्टार्च समृद्ध रूप से निहित है और इसकी पौष्टिक घनता मध्यम है। इसमें पोटेशियम, विटामिन बी6, मैंगनीस, थायामिन, आहारीय रेशा और विटामिन सी पर्याप्त मात्रा में निहित हैं। रतालू के कंद में लसदार पदार्थ निहित है जो कुदरती जैवसक्रिय उत्पाद हैं जिसमें ट्यूमररोधी, सूजनरोधी, रोगप्रतिरोधिता आपरिवर्तक और प्रतिऑक्सीकारक क्रियाएं निहित हैं। विश्व के 10 प्रमुख भोजनों में से रतालू में पोटेशियम स्तर सबसे उच्च है।

रतालू का सामान्य पौषणिक प्रोफाइल

गुण	मात्रा
शुष्क तत्त्व (प्रतिशत ताज़ा भार)	20.35
स्टार्च (प्रतिशत ताज़ा भार)	18-25
कुल शर्करा (प्रतिशत ताज़ा भार)	0.5-1.0
प्रोटीन (प्रतिशत ताज़ा भार)	2.5
रेशा (प्रतिशत ताज़ा भार)	0.6
लिपिड (प्रतिशत ताज़ा भार)	0.2
विटामिन ए (मि.ग्रा./100 ग्रा.)	0-0.8
विटामिन सी (मि.ग्रा./100 ग्रा.)	5-27.6

उन्नत किस्में

हालांकि हमारे देश में किसानों द्वारा रतालू की कई किस्मों की खेती की जाती हैं किंतु चुप्रि आलू, सफेद चुप्रि आलू और सुथनी केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा और उत्तरपूर्वी राज्यों में किसानों के बीच सर्वाधिक लोकप्रिय किस्में हैं। भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, तिरुवनंतपुरम, केरल ने रतालू की 17 विभिन्न किस्में विमोचित की हैं और हाल में विमोचित चुप्रि आलु की किस्में हैं भू स्वर, श्री निधि और श्री हिमा। श्री हरिता और श्री श्वेता सफेद चुप्रि आलू की हाल में विमोचित किस्में हैं।

वैज्ञानिक खेती विधियाँ

नारियल बागों में चुप्रि आलू और सफेद चुप्रि आलू की खेती में जिन कृषि तकनीकों का अनुसरण किया जाना है उनकी सिफारिशें नीचे दी गई हैं। पर्याप्त मात्रा में सूर्य प्रकाश मिलने वाले नारियल बागों में खेती करने के लिए ये दोनों रतालू उपयुक्त अंतर फसलें हैं। कई फसल प्रणालियों में इसकी खेती अच्छी तरह की जा सकती है क्योंकि हल्दी, ज्वार, अरहर आदि के साथ अंतर फसल के रूप में इसकी खेती की जाती है।

स्थान विनिर्दिष्ट पोषण प्रबंधन

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान ने देश में रतालू की खेती किए जाने वाले प्रमुख क्षेत्रों के लिए विशेष उर्वरक मिश्रण विकसित किया है और केरल तथा आँध्र प्रदेश में किसानों के बागों में इसका निर्दशन किया है। चुप्रि आलू और अन्य प्रमुख कंद फसलों के लिए सूक्ष्मआहार (माइक्रोनोल) का वाणिज्यीकरण किया गया है और सर्वश्री लिंगा केमिकल्स, मदुरै, तमिलनाडु (दू.भा.: 9994093178)

चुप्रि आलू (*डायोस्कोरिया अलाटा*) की किस्में

भू स्वर
विमोचित वर्ष: 2017, परिपक्वता: 6-7 महीने, पैदावार-20-25 टन/हे., स्टार्च (प्रतिशत):18-20, अच्छी पाक गुणवत्तायुक्त, शीघ्र पकने वाली किस्म

श्री निधि
विमोचित वर्ष: 2017, परिपक्वता: 8-9 महीने, पैदावार-35 टन/हे., स्टार्च (प्रतिशत):23.2, अच्छी पाक गुणवत्तायुक्त, एंथ्रैक्नोस रोग सहनशील

श्री हिमा
विमोचित वर्ष: 2020, परिपक्वता: 8-9 महीने, पैदावार-58 टन/हे., स्टार्च(प्रतिशत):26.3, बेहतरीन पाक गुणवत्तायुक्त

इसका उत्पादन कर रहा है। कंद फसल की खेती करने वाले किसानों द्वारा बड़े पैमाने पर उपयोग करने हेतु ये उत्पादें अब बाज़ार में उपलब्ध हैं जिनसे सूक्ष्म पौष्टिकतत्वों की कमी की समस्या दूर की जा सकती है तथा मिट्टी/फसल का स्वास्थ्य भी बेहतर बनाया जा सकता है। फसल की उपज में 10-15 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी भी हो रही है। किसान नए उर्वरक मिश्रण और सूक्ष्मआहार के निष्पादन से काफी खुश हैं क्योंकि इससे पैदावार में वृद्धि और कंद की गुणवत्ता बेहतर होती है जिसके परिणामस्वरूप रतालू की खेती करने वाले किसानों की आय में पर्याप्त रूप से बढ़ोत्तरी हो सकती है।

श्री हरिता
विमोचित वर्ष: 2017, परिपक्वता: 9-10 महीने, पैदावार-46 टन/हे., स्टार्च(प्रतिशत):24.02, अच्छी महक सहित बेहतरीन पाक गुणवत्तायुक्त, सूखा सहनशील

श्री श्वेता
विमोचित वर्ष: 2017, परिपक्वता: 9 महीने, पैदावार-30 टन/हे., स्टार्च(प्रतिशत): 22.02, बौनी, झाड़ीनुमा और बेल रहित, अच्छी पाक गुणवत्तायुक्त

ब्यौरे	चुप्रि आलू	सफेद चुप्रि आलू
किस्में	श्री शिल्पा, श्री कार्तिका, श्री कीर्ति, श्री रूपा, ओडिशा एलीट, श्री स्वाति, श्री नीलिमा, भू स्वर, श्री निधि, श्री हिमा	श्री प्रिया, श्री शुभ्रा, श्री धन्या, श्री हरिता, श्री श्वेता
रोपण का समय	मार्च-अप्रैल	मार्च-अप्रैल
रोपण सामग्री	बीज कंद: 250-300 ग्राम	बीज कंद: 250-300 ग्राम
भूमि की तैयारी और रोपण की विधि	गड्ढे जिसे बाद में मेंड बनाया जाता है	गड्ढे जिसे बाद में मेंड बनाया जाता है
रोपण की दूरी (सें.मी.)	90 × 90 (9000 पौधे)	90 × 90 (9000 पौधे) 60 × 60 (बौना) (12000 पौधे)
घूरे की खाद (टन प्रति हेक्टर)	10	10
नत्रजन:फोस्फरस पेंटोक्साइड: पोटेशियम ऑक्साइड ($N:P_2O_5:K_2O$) (कि.ग्रा./हेक्टर)	80:60:80	100:50:100
अंतरखेती क्रियाएं	अंकुरण के 15 दिनों बाद पौधों को टेक देकर ऊपर की ओर चढ़ाना; अंकुरण के एक हफ्ते में ही और एक महीने बाद खरपतवार निकालना और जड़ क्षेत्र पर मिट्टी चढ़ाना	अंकुरण के 15 दिनों बाद पौधों को टेक देकर ऊपर की ओर चढ़ाना; अंकुरण के एक हफ्ते में ही और एक महीने बाद खरपतवार निकालना और जड़ क्षेत्र पर मिट्टी चढ़ाना
अवधि (महीने)	8-10 महीने	9-10 महीने
औसत उपज (टन प्रति हेक्टर)	25-30	35-40

नारियल बाग में रतालू की अंतर खेती

फसल की कटाई

रोपण के 9-10 महीनों में यह फसल लेने के लिए तैयार हो जाती है और औसत उपज प्रति हेक्टर 25-30 टन हैं।

जब इसका पौधा पूरी तरह जीर्ण हो जाता है तब फसल परिपक्वता की स्थिति पर पहुँचती है। फसल निकालने के दौरान कंद को घाव लगने न दें, इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए। ऐसे कंद जिन को बाहरी रूप से कोई हानि नहीं पहुँची हों विपणन के लिए उपयुक्त होते हैं।

भंडारण विधि

पूरी तरह पके, श्रेणीकृत और उपचारित कंदों को ही रोपण सामग्री के रूप में भंडारित किया जाना चाहिए। भंडारण स्थान शीतल और हवादार होना चाहिए। कंदों का भंडारण एकल परत में करना चाहिए। यदि भंडारण के लिए पर्याप्त जगह उपलब्ध न हो तो इनका भंडारण दो परतों में किया जा सकता है।

विपणन

स्थानीय जगहों में और देश के विविध भागों में कंद फसलों का विपणन होता है जैसे कि एरणाकुलम, चेन्नै, मुम्बई, हैदराबाद, बेंगलूरु, दिल्ली आदि स्थानों पर। गल्फ और यूरोपीय देशों में भी कुछ मात्रा में इसका निर्यात किया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: डा.जी.बैजु, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.सं.-केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, श्रीकारियम, तिरुवनंतपुरम-695 017, केरल।
ई-मेल: byju_g@yahoo.com. ■

बोर्ड की पत्रिकाओं की विज्ञापन दर

नारियल विकास बोर्ड के प्रकाशन हैं इंडियन कोकोनट जर्नल (अंग्रेज़ी मासिक) इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम मासिक), भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी त्रैमासिक), भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़ त्रैमासिक), इंडिया तेन्नै इदष् (तमिल त्रैमासिक), भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु अर्ध वार्षिक) तथा भारतीय नारल पत्रिका (मराठी अर्धवार्षिक)। इन पत्रिकाओं में वैज्ञानिक नारियल कृषि तथा नारियल उद्योग से संबंधित लेख प्रकाशित करते आ रहे हैं। इन पत्रिकाओं के अधिकांश ग्राहक किसान, अनुसंधानकर्ता, उद्योगपति, व्यापारी, पुस्तकालय आदि हैं।

विज्ञापन के आकार	इंडियन कोकनट जर्नल (अंग्रेज़ी पत्रिका)	इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम पत्रिका)	इंडिया तेन्नै इदष् (तमिल त्रैमासिक)	भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़ त्रैमासिक)	भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी त्रैमासिक)	भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु अर्धवार्षिक)	भारतीय नारल पत्रिका (मराठी अर्धवार्षिक)
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	शून्य	शून्य	5000	5000	शून्य	5000	5000
पूरा पृष्ठ (रंगीन)	20000	20000	10000	10000	5000	10000	10000
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	शून्य	शून्य	3000	3000	शून्य	3000	3000
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	शून्य	शून्य	1500	1500	शून्य	1500	1500
बाहरी पृष्ठ का भीतरी भाग (रंगीन)	25000	25000	10000	10000	8000	10000	10000
बाहरी पृष्ठ (रंगीन)	30000	30000	15000	15000	10000	15000	15000

पत्रिका के किन्हीं दो अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 10 प्रतिशत की तथा तीन या अधिक अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 12 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। मान्य विज्ञापन एजेंसियों को 15 प्रतिशत की छूट दी जाएगी।

नारियल ताड़ारोहकों को पाँच लाख रुपए की बीमा सुरक्षा

विष्णुप्रिया के.टी.
साँख्यिकीय अन्वेषक, नारियल विकास बोर्ड, कोची

परंपरागत नारियल ताड़ारोहकों, नारियल की तुड़ाई करनेवाले कामगारों और नीरा तकनीशियनों को नारियल क्षेत्र में काम करते समय जिन दुर्घटनाओं एवं खतरों का सामना करना पड़ रहा है उनके मद्देनज़र नारियल विकास बोर्ड ने वर्ष 2011 में केरा सुरक्षा बीमा योजना का श्रीगणेश किया था। वर्तमान में प्रस्तुत योजना संशोधित करके लाभार्थियों के लिए और भी हितकर बना दी गयी है। संशोधित केरा सुरक्षा बीमा योजना में सदस्य बनने पर नारियल के क्षेत्र में कार्यरत कामगारों को वर्तमान विशेष सामाजिक आर्थिक परिस्थिति में संरक्षण एवं सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

अरब सागर को चूमते हुए उसके तट पर स्थित केरल जैव विविधताओं से समृद्ध है और प्राचीन काल से ही नारियल का देश जाना जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धि के प्रतीक के रूप में घर के आंगन में नारियल पेड़ लगाने की परंपरा आज भी प्रचलित है। केरलवासियों और नारियल के बीच का नाता उतना अटूट है। आजकल बाज़ार में विभिन्न प्रकार के खाद्य तेल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। किंतु केरलवासियों की रसोई में नारियल तेल के लिए जो पसंद पहले थी वह आज भी बरकरार है। उपभोक्ता संस्कृति के फैलाव के बावजूद भी नारियल की रोज़ाना खपत बढ़ने का कारण हमारा यह अटूट विश्वास है कि हमारी पाकविधियों में नारियल के स्वाद के बदले किसी दूसरी चीज़ को प्रतिष्ठित नहीं किया जा सकता। केरल के 14 जिलाओं में लगभग 7.6 लाख हेक्टर से अधिक क्षेत्रों में नारियल की खेती की जाती है।

नारियल की खेती में सबसे महत्वपूर्ण किंतु सबसे जोखिम भरी प्रक्रिया है नारियल की तुड़ाई। मात्र केरल में तकरीबन 10,000 से अधिक मज़दूर इस काम पर लगे हैं। केरल के

नारियल पेड़ पर चढ़ते ताड़ारोहक

देहाती क्षेत्रों के गलियारों में नारियल पेड़ पर चढ़ने के लिए लंबे बाँस कंधे पर रखकर पाँव पर पहनने के लिए खासतौर पर बनाए गए चक्राकार की रस्सी लेकर नारियल ताड़ारोहक चलते रहते थे। यह आम दृश्य अब केरल के इतिहास में विलुप्त हो रहा है। इसका एक कारण यह है कि इस पेशे में दुर्घटना का खतरा काफी अधिक है। केरल में लंबी किस्म के बहुत बड़े नारियल पेड़ अधिक संख्या में पाए जाते हैं। फसल की तुड़ाई के लिए ऐसे पेड़ों पर बहुत ऊपर तक चढ़ने वाले मज़दूरों को नारियल ताडारोहण मशीन का आविष्कार काफी फायदेमंद सिद्ध हुआ है। फिर भी, मशीन के सहारे नारियल पेड़ पर चढ़ने पर भी बिरले ही सही खतरे को पूरी तरह टाला नहीं जा सकता है। ऐसी परिस्थिति में उनका हौसला बढ़ाने और दुविधा की स्थिति में परिवार को सहारा देने के लिए नारियल विकास बोर्ड ने नारियल ताड़ारोहकों के लिए केरा सुरक्षा बीमा योजना नामक दुर्घटना बीमा योजना शुरू की है।

वर्ष 2011 में युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी के सहयोग से इस योजना की शुरुआत हुई थी। किंतु न जाने क्यों, कतिपय कामगारों ने ही इस योजना के प्रति दिलचस्पी दिखायी थी। दूसरों की प्रेरणा से बीमा योजना में शामिल हुए लोगों ने भी बीमा सुरक्षा की अवधि समाप्त होने के बाद इसका नवीकरण करने में कोई दिलचस्पी नहीं दर्शाते हैं।

बीमा पोलिसी लेने से जो सुरक्षा प्राप्त होती है, लोगों को इसका अहसास अक्सर तब होता है जब अपनी आर्थिक सुरक्षा को ठेस पहुँचती है। दुर्घटना घटित होने के पश्चात आर्थिक सहायता मांगते हुए लोगों का फोन कॉल हमेशा रुलाई या पछतावा के साथ ही खत्म होता है। बारिश के समय नारियल पेड़ पर चढ़ने में जितना खतरा है उतनी ही खतरनाक है ततैया और मधुमक्खी के छत्ता वाले नारियल पेड़ों से फलों की तुड़ाई और तेज़ गर्मी के मौसम में बहुत ऊँचे नारियल पेड़ों से नीरा उतारने का कार्य आदि। इस योजना की सुरक्षा के अंतर्गत ऊपर से गिरने पर चोट और चाकू से लगे घाव ही नहीं बल्कि सड़क दुर्घटनाएं, जानवरों का हमला आदि भी शामिल हैं। इस योजना की खासियत यह है कि लाभार्थियों को बहुत कम रकम ही खर्च करनी पड़ती है। कुल प्रीमियम के मात्र 25 प्रतिशत हिस्से का भुगतान ही लाभार्थियों को करना है। शेष 75 प्रतिशत हिस्से का भुगतान नारियल विकास बोर्ड द्वारा किया जाता है।

नीरा निकालते कामगार

विगत समय में दुर्घटना से हुई मृत्यु और फलस्वरूप बची-कुची जिंदगियाँ ही इस योजना के अंतर्गत हितलाभ और आकर्षक बनाने के लिए बोर्ड को प्रेरणादायक बनें। नवंबर 2020 में ऑरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी के सहयोग से इस योजना के अंतर्गत बीमित राशि पांच लाख तक बढ़ा दी गयी ताकि इस योजना से अधिकाधिक लोगों को लाभ प्राप्त हो सके। आंशिक दिव्यांगता होने पर 2.5 लाख रुपए एवं कम से कम 24 घंटों तक अस्पताल में भर्ती किए जाने पर एक लाख रुपए तक चिकित्सा सहायता बढ़ा कर योजना का नवीकरण किया गया है। आगे की चिकित्सा से जुड़ी विश्राम की अवधि में इस योजना के तहत 6 हफ्ते के लिए अधिकतम 18,000 रुपए तक सहायता दी जाती है। इसके अलावा अस्पताल में भर्ती के मामले में सहारेवाले को प्रतिदिन 200 रुपए की दर पर अधिकतम 15 दिनों के लिए 3000 रुपए दिया जाता है।

बदलते सामूहिक परिवेश के मद्देनज़र इस योजना के लाभार्थी बनने की प्रक्रिया काफी सरल बना दी गयी है। योजना में शामिल होने के लिए आवेदन पत्र बोर्ड की वेबसाइट www.coconutboard.gov.in से डाउनलोड करके उपयोग कर सकता है। योजना के तहत लाभार्थी का हिस्सा 99 रुपए का भुगतान दो तरीके से करने का निदेश दिया जाता है-

1) आवेदन पत्र के दूसरे पृष्ठ पर दी गयी खाता संख्या में ऑनलाइन द्वारा राशि का भुगतान किया जा सकता है या

2) नारियल विकास बोर्ड के नाम एरणाकुलम में देय डीडी के रूप में भुगतान किया जा सकता है।

आवेदन पत्र के साथ ऑनलाइन द्वारा राशि के भुगतान का प्रमाण या डीडी अग्रेषित करना चाहिए। योजना के तहत सदस्य बनने हेतु 18 से 65 वर्ष तक आयु सीमा निर्धारित होने के कारण जन्म तिथि प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना होगा और कृषि अधिकारी/

पंचायत प्रेसिडेंट/वार्ड मेम्बर या नारियल समिति/फेडरेशन प्रेसिडेंट/उत्पादक कंपनी अध्यक्ष में से किसी एक द्वारा यह भी प्रमाणित करना होगा कि आवेदक नारियल ताड़ारोहक है। नारियल विकास बोर्ड या अन्य सरकारी एजेंसियों द्वारा आयोजित नारियल ताड़ारोहण प्रशिक्षण कार्यक्रम के सहभागी आवेदक प्रमाणपत्र की प्रतिलिपि आवेदन के साथ प्रस्तुत करें। ऐसे आवेदकों को किसी अन्य प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं है।

दावा करने की कार्यविधि

पोलिसी अवधि की समयसीमा के भीतर यदि कोई दुर्घटना होती है तो इसकी सूचना तीन दिनों के भीतर नारियल विकास बोर्ड को देनी चाहिए। बीमा सुरक्षा के लिए आवेदन पत्र कार्यालय में प्राप्त होने के एक हफ्ते के भीतर ही पोलिसी के अंतर्गत आवेदक को सुरक्षा मिलने लगती है। एलोपैथी चिकित्सा के लिए सहायता सभी सरकारी-निजी अस्पतालों में और आयुर्वेद चिकित्सा के लिए सहायता सरकारी आयुर्वेद अस्पतालों में प्राप्त होती है। निजी आयुर्वेद अस्पतालों को बीमा सुरक्षा के तहत शामिल नहीं किया गया है।

चिकित्सा पूरा हो जाने के बाद ही दावे के लिए आवेदन करना चाहिए। दावे का प्रपत्र बोर्ड की वेबसाइट में उपलब्ध है। दावे के प्रपत्र के दो भाग होते हैं। दावा प्रपत्र का एक भाग डाक्टर द्वारा भरा जाएगा। दुर्घटना घटित दिवस, समय, दुर्घटना का प्रकार, विश्राम की अवधि आदि ठीक से भरे जाएं। विश्राम अवधि समाप्त होने के दिन डाक्टर से शारीरिक स्वस्थता प्रमाणपत्र प्राप्त करके दावा प्रपत्र के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।

चिकित्सा सहायता के लिए दावा प्रपत्र के साथ निम्नलिखित दस्तावेज़ भी प्रस्तुत करें:-

1) अस्पताल से प्राप्त असली डिस्चार्ज समरी
2) अस्पताल से औषधियों के बिल (हरेक बिल के उलटी तरफ डाक्टर का हस्ताक्षर व मोहर अनिवार्य है)
3) औषधीय दूकानों से प्राप्त बिलों के साथ डाक्टर द्वारा निर्धारित औषधि सूची भी प्रस्तुत करें।
4) एक्स रे/ स्कैन रिपोर्टें
5) डाक्टर से प्राप्त शारीरिक स्वस्थता प्रमाणपत्र
6) बैंक पास-बुक की प्रतिलिपि। सड़क दुर्घटना के मामले में पुलिस की प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) की प्रति भी प्रस्तुत करनी चाहिए।

मृत्यु के उपरांत सहायता के लिए दावा प्रपत्र के साथ निम्नलिखित दस्तावेज़ प्रस्तुत करें:-

1) असली मृत्यु प्रमाणपत्र
2) पुलिस की प्रथम सूचना रिपोर्ट की प्रतिलिपि
3) पोस्टमोर्टम रिपोर्ट की प्रतिलिपि
4) एम्बुलेंस बिल
5) अंतिम संस्कार में सहभागी व्यक्ति (वार्ड मेंबर) का प्रमाणपत्र। नामिति का प्रमाणपत्र, नामिति का आधार और बैंक पास-बुक की प्रतिलिपि आदि माँगे जाने पर प्रस्तुत करना चाहिए।

योजना में सदस्य बनने तथा अधिक जानकारी के लिए नारियल विकास बोर्ड के दूरभाष 0484-2377266 (एक्स्टेंशन-255) से संपर्क करें। ■

नारियल पत्रिका की ग्राहकी के लिए ऑनलाइन भुगतान प्रणाली

नारियल विकास बोर्ड ने नारियल पत्रिकाओं की ग्राहकी के लिए ऑनलाइन भुगतान प्रणाली शुरू की है। नए ग्राहक और मौजूदा ग्राहक दोनों ऑनलाइन से भुगतान कर सकते हैं और नई ग्राहकी ले सकते हैं या अपनी ग्राहकी का नवीकरण कर सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए www.coconutboard.gov.in या https://www.coconutboard.in/journalsubscription/home.aspx देखें। बोर्ड के बैंक खाताः स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, इय्याट्टिल जंक्शन, एरणाकुलम शाखाः खाता सं. 61124170321, आईएफएससीः SBIN0031449 में डिमांड ड्रैफ्ट/नेफ्ट/भीम/फोन पे/गूगल पे या पे टीएम के द्वारा राशि का भुगतान कर सकते हैं।

देय ग्राहकी (कर मिलाकर)		
	वार्षिक ग्राहकी	आजीवन ग्राहकी*
वैयक्तिक ग्राहक		
इंडियन नालिकेरा जर्नल	40 रुपए	1000 रुपए
इंडियन कोकनट जर्नल	60 रुपए	1600 रुपए
भारतीय नारियल पत्रिका**	40 रुपए	1000 रुपए
संस्थाएं/पुस्तकालय		
इंडियन कोकनट जर्नल	200 रुपए	5000 रुपए
*30 वर्ष, **तिमाही		

नारियल बागों में मासिक कार्य

जनवरी

बीजफलों का एकत्रीकरण और भंडारण

चयनित मातृ ताड़ों से बीजफलों की तुड़ाई सावधानी से की जानी चाहिए और फल के अंदर का पानी सूख न जाए, इसके लिए समुचित रूप से भंडारण करना चाहिए। जहाँ भी ज़मीन ठोस हो, फलों की तुड़ाई करके रस्सी के सहारे उसे नीचे लाना चाहिए।

बीजफलों का एकत्रीकरण

नर्सरी प्रबंधन

नर्सरी के नारियल पौधों के लिए सिंचाई जारी रखनी चाहिए। जहाँ भी आवश्यक हो खरपतवार निकाल देना चाहिए। यदि नर्सरी में दीमक का प्रकोप पाया जाता है तो क्लोरपाइरिफोस (2 मि.ली. क्लोरपाइरिफोस एक लीटर पानी में घोलकर) से सराबोर करना चाहिए। स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के प्रकोप से बचने के लिए नारियल पौधों के पत्तों के निचले भाग पर पानी का छिड़काव करना चाहिए।

छाया प्रदान करना

नवरोपित पौधों को यदि छाया प्रदान नहीं किया गया हो तो अब छाया प्रदान करना चाहिए।

सिंचाई

नारियल बागों में सिंचाई जारी रखनी चाहिए। यदि थाला सिंचाई विधि अपनाई गई हो तो प्रति ताड़ 200 लीटर की दर पर चार दिनों में एक बार सिंचाई की जानी चाहिए। नारियल की सिंचाई के लिए सबसे उपयुक्त विधि ड्रिप सिंचाई है। रेतीली मिट्टी में ड्रिपिंग नोकों की संख्या छह और अन्य प्रकार की मिट्टियों में यह चार होनी चाहिए। वाष्पीकरण की दर के अनुसार नारियल की खेती की जाने वाले विभिन्न क्षेत्रों में ड्रिप सिंचाई विधि के ज़रिए कितना पानी देना चाहिए यह तय किया जा सकता है। जनवरी में केरल में प्रति दिन प्रति ताड़ 30-35 लीटर और तमिलनाडु एवं कर्नाटक में 35-45 लीटर पर्याप्त होता है।

ड्रिप सिंचाई विधि

कृष्णशीर्ष इल्ली

कीट प्रकोपित बाग

गोनियोज़स निफैंटिडिस

जीर्ण और अनुत्पादक नारियल पेड़ों को हटाना

नारियल बाग के जीर्ण और अनुत्पादक ताड़ों को काटकर निकालें और बाग को स्वच्छ रखने के लिए उनका समुचित रूप से निपटारा करें।

कीटों एवं रोगों का प्रबंधन

जनवरी के महीने में जाड़े का मौसम इसप्रकार होता है कि रातें ठंडी और दिन गरम होता है और आर्द्रता कम हो जाती है। इस अवधि के दौरान कीट पर निगरानी रखना अनिवार्य होता है क्योंकि दिन का समय खुश्क रहना और रात का समय ठंडा होना चूसने वाले कीटों और रोगाणुओं की आबादी बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। नारियल के गैंडा भृंगों का प्रजनन स्थान सूखा रहने से भृंगों के लिए अंडा डालने और सूँडियों के विकास के लिए अनुकूल माहौल बना रहता है। पतंग वर्ग के कीट जैसे कि कृष्णशीर्ष इल्ली और स्लग इल्ली केरल, तमिलनाडु, आँध्र प्रदेश और कर्नाटक के सभी प्रकोपित क्षेत्रों में इस महीने के दौरान अधिक संक्रामक और तीव्र रहते हैं।

कीट

कृष्णशीर्ष इल्ली, *ओपिसिना एरेनोसेला*

नारियल की कृष्णशीर्ष इल्ली, *ओपिसिना एरेनोसेला*, पूरे देश में नारियल की खेती किए जाने वाले लगभग सभी इलाकों में सर्दियों में पाया जाने वाला प्रमुख कीट है विशेषतया जलाशय के निकट स्थित क्षेत्रों में। कीट प्रकोपित हिस्सा सूख जाता है और निचले पत्तों की ऊपरी सतह पर धूसर रंग के धब्बे बनने लगते हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में शिखर के मध्य से भीतर की ओर के पत्ते पूरी तरह सूख जाते हैं जिससे पेड़ का शिखर जला हुआ सा दीखता है। कीट प्रकोप के प्रमुख लक्षण हैं कृष्णशीर्ष इल्ली की मौजूदगी, पत्तियों पर जाल सा बनना और सूखा मल दीखना आदि। प्रकोपित नए क्षेत्रों में यदि मित्र कीट नहीं मौजूद हों तो इसका प्रकोप तेज़ी से बढ़ता है और तेज़ गति से चारों तरफ फैल भी जाता है। कीट प्रकोप के परिणामस्वरूप इसका प्रकाशसंश्लेषण क्षेत्र कम हो जाता है, पुष्पक्रमों के उत्पादन में कमी होती है, अपक्व फलों का गिराव बढ़ जाता है और वृद्धि मंद हो जाती है। नारियल की पत्तियाँ अधिक मात्रा में इल्लियों का आहार बन जाने से पैदावार में 45.4 प्रतिशत का नुकसान होने के साथ साथ पत्ते गूँथने लायक या अन्य प्रयोजनों के लिए अनुपयुक्त हो जाते हैं। किसानों को घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है और मित्र कीटों के ज़रिए सफलतापूर्वक तेज़ी से जैविक नियंत्रण करने का यह उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रबंधन

- रोगप्रकोप की गुंजाइश वाले क्षेत्रों में कीट की मौजूदगी का पता लगाने के लिए ताड़ के पत्तों का नियमित रूप से अनुवीक्षण करते रहना चाहिए।
- 2-3 पुराने और सूखे पत्तों को काट दें जिन पर विविध अवस्था वाले कीट बसते हैं और उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। इल्लियों/प्यूपों की आबादी कम करने के लिए उन पत्तों को जला देना चाहिए।
- कीट प्रकोपित क्षेत्रों से कीट मुक्त क्षेत्रों में नारियल पत्तों को नहीं ले जाना चाहिए और इसप्रकार क्षेत्र विशेष में संगरोध सशक्त बनाना चाहिए।
- यदि कीट, विकास की तीसरी अवस्था वाले या इससे अधिक आयु के लार्वे के रूप में हो तो लार्वा परजीवी *गोनियोज़स निफैंटिडिस* (प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर) एवं *ब्राकोन ब्रेविकोर्निस* (प्रति ताड़ 30 परजीवी) को अधिक संख्या में बाग में छोड़ देनी चाहिए। पूर्वप्यूपा परजीवी (*एलैसमस निफैंटिडिस*) और प्यूपा परजीवी (*ब्रेकिमेरिया नोसटोय*) को हर 100 पूर्व प्यूपे

और प्यूपे के लिए क्रमशः 49 प्रतिशत और 32 प्रतिशत की दर पर छुड़ाने से प्रभावी रूप से इस कीट का प्रबंधन मुम्किन हुआ है।

- परजीवियों को छुड़ाने से पहले इन्हें पर्याप्त मात्रा में शहद देना चाहिए और पोषक गंधों (गैलरी के वाष्पशील पदार्थ) से सुगम्य बनाना चाहिए ताकि पोषक कीटों की खोज करने की क्षमता बढ़ जाएं।
- ताड़ का स्वास्थ्य सुधारने के लिए पर्याप्त सिंचाई और अनुशंसित मात्रा में पोषकतत्वों का प्रयोग सुनिश्चित करें।

फल छेदक कीट, *साइक्लोडस ओम्मा*

पोल्लाची (तमिलनाडु) के कुछ बागानों में फल छेदक का प्रकोप पाया गया है। यह एक छिटपुट कीट है जो आमतौर पर बौने जीनप्ररूपों और संकरों में पाया जाता है। नत्रजनयुक्त उर्वरकों के अतिरिक्त पोषण से जो रसीलापन आता है वह भी कीट के प्रकोप का प्रमुख कारण है। परागण के बाद बुतामों और अपक्व फलों को छेदकर इल्ली अंदर घुस जाती है और रात के समय इसके भीतरी भागों को खा जाती है जिसके फलस्वरूप बुताम झड़ जाते हैं। जिन ताड़ों पर कृत्रिम परागण होता है, वे इस कीट के प्रकोप का शिकार जल्दी हो जाते हैं। ताड़ के शिखर के अपशिष्टों पर प्यूपा अवस्था में कीट पाए जाते हैं।

प्रबंधन

- शिखर की सफाई करके अपक्व अवस्था के कीटों को हटाना चाहिए।
- रसीलापन से बचने के लिए नत्रजनयुक्त उर्वरकों का प्रयोग विवेकपूर्ण रूप से तथा आवश्यकता के आधार पर करना चाहिए।

फल छेदक कीट

कीट प्रकोपित फल

- हस्त चालित स्प्रेयर का प्रयोग करके कीट-रोगजनक *बैसिलस थुरिंजियेंसिस* प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर और नीम तेल 0.5 प्रतिशत (10 ग्राम साबुन पाउडर के साथ 5 मि.ली. प्रति लीटर) का छिड़काव करने से कीट का प्रकोप कम हो जाता है।

नारियल एरियोफिड माइट, *एसेरिया गुरुरोंनिस*

नारियल एरियोफिड माइट एक आक्रामक कीट है जिसके बारे में सबसे पहले 1998 में रिपोर्ट की गई थी और जाड़े के मौसम पूर्व इसका प्रकोप अधिक होता है। यह मकड़ी परिवार का कीट है जिसके दो युगल पैर होते हैं। इसका आकार इतना छोटा है (200-250 माइक्रोन) कि माइक्रोस्कोप से ही इसको देख सकते हैं। यह 100-150 अंड़े डालता है और इसका जीवनचक्र 7-10 दिन में पूरा हो जाता है। परागण के बाद विकासशील फलों पर माइट का प्रकोप तुरंत होता है और यह पत्राभ के अंदर सीमित रहता है और परिदलपुंज के निचले भाग के मेरिस्टमी ऊतकों को खा लेता है। परिदलपुंज के नीचे लंबाकार में सफेद लकीरें दर्शित होती हैं जो कि इसके प्रकोप का पहला लक्षण है। कुछ ही दिनों में परिदलपुंज के चारों ओर पीला मंडल प्रकट होता है जो मस्से जैसा बन जाता है और अंत में वहाँ पर दरारें, छेद और गोंदार्ति(गम्मोसिस) उत्पन्न होते हैं। बुतामों और अपक्व फलों का झड़ना और फलों की कुरूपता आदि माइट के प्रकोप के अन्य लक्षण हैं।

प्रबंधन

- सूखे शूकीछद, पुष्पक्रम के अपशिष्ट, गिरे फल आदि को हटाएं और इन्हें मिट्टी में गाड़ देना या जला देना कीट की आबादी कम करने के लिए अनिवार्य है।
- नीम तेल-लहसुन मिश्रण 2 प्रतिशत गाढ़ता पर या 0.004 प्रतिशत की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम छिड़कना या 10 मि.ली. की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ों द्वारा साल में तीन बार याने मार्च-अप्रैल, अक्तूबर-नवंबर और दिसंबर-जनवरी के दौरान देना अनुशंसित है। रोगरोधी उपाय के रूप में गर्मियों में तापमान बढ़ने से पहले का प्रयोग भी उचित होता है।
- नीम दवा के साथ साथ तीन बार प्रति ताड़ प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर 1.6×10^8 सीएफयू रोगजनक फफूँद

माइट प्रकोपित विविध अवस्था के फल

एरियोफिड माइट से प्रकोपित फल

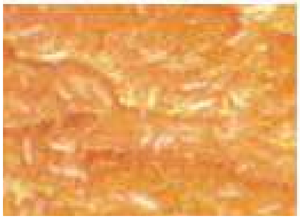

एरियोफिड माइट की कॉलोनी

(एकरोपैथोजन) *हिरसुटेल्ला थोमसोनी* निहित टैल्क आधारित दवा का प्रयोग

- बाग में कल्प हरिता (कुलशेखरम लंबे से चयनित) किस्म पर माइट का प्रकोप अत्यंत कम पाया गया है।
- अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, जैवभार का पुनर्चक्रण, नारियल थालों में हरी खाद फसलें उगाना और इनमें फूल निकलने पर उन्हें उखाड़कर वहीं मिट्टी में मिला देना, गर्मी के समय सिंचाई और समुचित उपायों से मिट्टी और जल संरक्षण करने से ताड़ों का स्वास्थ्य सुधरता है और कीट का प्रकोप कम होता है।

तमिलनाडु में गजा चक्रवाती तूफान से और आँध्र प्रदेश में तितली चक्रवाती तूफान से प्रकोपित क्षेत्रों में गैंडाभृंग और लाल ताड़ घुन जैसे कीटों पर निगरानी रखना अनिवार्य है और अनुशंसित सभी कीट रोधी उपाय अपनाना भी चाहिए।

रोग

नारियल की पर्ण चित्ती *(लेसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमी)*

इसके रोगाणु से पत्तों और फलों को नुकसान होता है। प्रकोपित पत्तियाँ अग्रभाग से सूखने लगती हैं और यह जला हुआ सा प्रकट होता है। तीसरे से चौथे छल्लों के पत्तों पर इसका प्रकोप होता है। पर्ण चित्ती रोग के कारण निचले पत्तों पर उल्टे 'V' आकार में सूखा-हुआ सा दीखता है और इस रोग के प्रकोप का लक्षण बिलकुल वैसा ही है जैसा कि सूखे और अन्य दबावों से पेड़ पर प्रकट होता है। पत्तियों पर व्यापक ऊतकक्षय साफ किनारों के साथ प्रकट होता है और क्षतिग्रस्त ऊतकों और स्वस्थ ऊतकों के किनारे स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। रोगाणु सबसे पहले पर्णशिरा (रैकिस) पर अपनी कॉलोनी बनाता है, जिससे आंतरिक ऊतकक्षय होता है जो तने की तरफ बढ़ जाता है। ऊतकक्षयी ऊतकों पर दरार पड़ने लगते हैं जिसके कारण पर्णवृंतों के निचले भाग से गोंद निकलता है। नारियल में अपक्व फलों के परिदलपुंज भाग पर छोटे काले धब्बे प्रकट होते हैं। जब लगभग पके/परिपक्व फलों पर रोगप्रकोप होता है तो अंदर की तरफ मध्य फल भित्ति तक इसका प्रकोप फैल जाता है जिसके कोई भी लक्षण बाहर प्रकट नहीं होता है। प्रकोपित फल शोषित, सिकुड़ा हुआ, कुरूपित होता है और अपक्व स्थिति में ही गिर जाता है जिससे पैदावार में 10 से 25 प्रतिशत तक का नुकसान होता है।

प्रबंधन

- ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम से संपुष्ट 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग और मिट्टी की जाँच आधारित पोषण प्रदान करने से ताड़ का स्वास्थ्य सुधर जाता है।
- पर्याप्त मात्रा में सिंचाई और मिट्टी एवं जल संरक्षण उपाय अपनाना अनुशंसित है।
- साल में तीन बार 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाज़ोल (प्रति ताड़ 100 मि.ली. दवा) जड़ों द्वारा दें।

जड़मुर्झा रोग

जड़मुर्झा रोग तिरुवनंतपुरम, आलप्पुषा, कोल्लम, कोट्टयम, पत्तनंतिट्टा, इटुक्कि, एरणाकुलम और तृश्शूर आदि केरल के आठ दक्षिणी जिलों में पाया गया है। राज्य के मलप्पुरम, पालक्काट, कोष़िक्कोट, वयनाट और कण्णूर आदि शेष जिलों के बागों में भी इधर-उधर इसका प्रकोप पाया गया है। तमिलनाडु के कोयंबत्तूर, तेनी, सेंकोट्टै और कन्याकुमारी जिलों में भी यह रोग पाया गया है। कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिले में और गोवा में भी इस रोग का प्रकोप रिकोर्ड किया गया है।

इस रोग का प्रत्यक्ष रोगलक्षण यह है कि पत्तियाँ असाधारण रूप से मुड़ जाती हैं या उन पर मात्र तीलियाँ रह जाती हैं जिसे फ्लैसिडिटी कहा जाता है। सामान्य पीलापन और पत्तियों के किनारे पर ऊतकक्षय प्रकट होना इसके अन्य

जड़मुर्झा रोग से क्षतिग्रस्त नारियल पत्ते

रोगलक्षण हैं। कुछ मामलों में जड़ों का सड़न, अपक्व फलों का गिराव, शूकीछदों का सूखना और अनखुले पुष्पक्रमों की शूकिकाओं का ऊतकक्षय भी देखा गया है। रोगप्रकोपित ताड़ों के फलों का छिलका, गरी और तेल खराब गुणवत्ता के होते हैं। खोपरे का तेल संघटक भी कम हो जाता है। सभी आयु वर्ग के ताड़ इस रोग के शिकार हो जाते हैं। हालाँकि यह रोग घातक नहीं होता है किंतु ताड़ को दुर्बल बना देता है। तथापि, फलनपूर्व आयु के ताड़ जब इस रोग से प्रकोपित होता है, वे पुष्पण और फलन स्थिति तक नहीं पहुँचते हैं। इस रोग का प्रकोप होने पर ताड़ पर कई अंदरूनी परिवर्तन होने लगते हैं।

16 एसआर आरएनए ग्रूप XI के फ्लोएम बाउंड बैक्टीरिया-फाइटोप्लास्मा को इसके रोगाणु के रूप में पहचाना गया है। लेस बग *(स्टेफनाइटिस टिपिका)* और पादप फुदका *(प्रौटिस्टा मोएस्टा)* द्वारा इस रोग का संक्रमण होता है।

प्रबंधन

इस रोग की एक मुख्य विशेषता यह है कि यह घातक रोग नहीं है बल्कि पेड़ को दुर्बल बना देता है जो उपयुक्त प्रबंधन विधियाँ अपनाई जाने पर अच्छी वृद्धि दिखाता है। जड़मुर्झा रोग के लिए दो रणनीतियाँ अपनायी जाती हैं, एक गंभीर रूप से प्रकोपित सटे हुए क्षेत्रों के लिए और दूसरा हल्के तौर पर प्रकोपित क्षेत्रों के लिए।

क. गंभीर रूप से रोगप्रकोपित क्षेत्रों के लिए रणनीति

गंभीर रूप से प्रकोपित क्षेत्रों में ताड़ की उपज को टिकाऊ रखने या उसे सुधारने के लिए निम्नलिखित एकीकृत प्रबंधन प्रणालियाँ अपनायी जा सकती हैं:

- गंभीर रूप से रोग प्रकोपित और छोटे ताड़ों को निकालना
- पत्ता सड़न रोग का प्रबंधन
- संतुलित उर्वरक प्रयोग
- जैविक खाद का प्रयोग
- थालों में हरी खाद फसलों की खेती करके उसे मिट्टी में मिला देना
- गर्मी के महीनों में सिंचाई
- कीटों का प्रबंधन
- अंतर और मिश्रित फसल प्रणाली अपनाना
- रोगप्रकोपित बागों में मिश्रित खेती जिसके अंतर्गत पेड़ों के बीच की जगह पर चारा घास की खेती, दुधारू गायों को पालना और जैविक अपशिष्टों का पुनर्चक्रण

ख. हल्के तौर पर रोगप्रकोपित क्षेत्रों के लिए रणनीति

सभी रोगग्रस्त ताड़ों को हटाएं: व्यवस्थित रूप से निगरानी करके और जैसे जैसे रोगप्रकोपित ताड़ों की पहचान होती है उन पर निशान लगाकर रोगों का फैलाव रोका जा सकता है। रोगप्रकोपित ताड़ों की सटीक और समय पर पहचान एकीकृत कीट नियंत्रण का अनिवार्य संघटक है। इस रोग की शीघ्र पहचान हेतु केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने एलिसा (ELISA) जाँच विकसित की है। रोगलक्षण बाहर प्रकट होने के 24 महीने पूर्व रोगप्रकोपित ताड़ों को पहचाना जा सकता है और इन्हें रोग के आगे के फैलाव को रोकने के लिए काटकर निकाला जा सकता है।

रोगमुक्त स्वस्थ पौधों के साथ पुनर्रोपण: ऐसे बागों में जहाँ पर्याप्त मात्रा में जगह उपलब्ध हो गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों से पुनर्रोपण करें। जड़मुर्झा रोग परंपरागत पौधा संरक्षण उपायों से नियंत्रित नहीं होता है इसलिए इस रोग का प्रबंधन करने का उत्तम उपाय रोगसहनशील किस्मों की खेती करना है। केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान से विमोचित रोग सहनशील किस्में कल्परक्षा (मलयन हरा बौना से चयनित), कल्पश्री (चावक्काट हरा बौना से चयनित) और संकर किस्म कल्प संकरा (चावक्काट हरा बौना x पश्चिम तटीय लंबा) जड़मुर्झा रोग प्रकोपित क्षेत्रों में खेती करने के लिए उपयुक्त हैं।

असाधारण फल गिराव

गत कुछ महीनों के दौरान असाधारण और अविरल बारिश के कारण ताड़ों द्वारा पौष्टिकतत्वों का अवशोषण काफी कम हुआ है और यह मुख्यत: मिट्टी से पौष्टिकतत्वों के निक्षालन

के कारण हुआ है। अधिकांश बागों में पानी का जमाव और जड़ों की अनुचित श्वसन प्रक्रिया देखी गयी है। यही नहीं, केरल के कई नारियल बागों में असाधारण फल गिराव पाया गया है जिसका कारण है बारिश के चरण में फलों पर कीटों और रोगों का संयुक्त प्रकोप। वैसे भी इस अवधि के दौरान ताड़ों पर बहुत कम संख्या में ही फल लगते हैं। फल कीटों में नारियल एरियोफिड माइट *(एसेरिया गुरुरोंनिस)*, कोरिड बग *(पैराडेसिनस रोस्ट्रैटस)* और फफूँद रोगाणु *(फाइटोफ्थोरा पामिवोरा और लैसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमे)* शामिल हैं। मेरिस्टमी ऊतकों को अपना आहार बनाने वाले माइट फफूँद प्रकोप को और भड़काता और बिगाड़ता है। अतः इस समस्या से निपटने के लिए एक समग्र प्रबंधन रणनीति की अनुशंसा दी जाती है।

प्रबंधन

- जल जमाव वाले क्षेत्रों में जल निकासी के लिए नल खोदें और बारिश रुक जाने के बाद ताड़ के थालों में जमी जलोढ़क मृदा को निकाल दें।
- तुरंत ही मृदा विश्लेषण करके उसके आधार पर अपेक्षित मात्रा में पौष्टिकतत्व प्रदान करें।
- शिखर की सफाई करें और रोगरोधी उपाय के रूप में पर्ण कक्षों में नीमखली और रेत मिश्रित करके भरें।
- माइट एवं कोरिड बग के प्रकोप की जाँच करने के लिए परागण के बाद गुच्छों पर 2 प्रतिशत नीमतेल (प्रति लीटर 20 मि.ली.) का छिड़काव करें। फफूँद प्रकोप को कम करने के लिए एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का प्रयोग करें।

नारियल प्रणाली में कीटों और रोगों की गतिशलीता और जलवायु परिवर्तन का प्रतिमान उनकी आबादी बढ़ाने में अत्यंत निर्णायक होता है। ताड़ों को सुरक्षित रखने के लिए समय पर रोगरोधी उपाय अपनाना और आवश्यकता के अनुसार पोषण देकर ताड़ का स्वास्थ्य सुधारना कीटों और रोगों के प्रकोप से होने वाली समस्याओं से जूझने के लिए अत्यंत अनिवार्य होता है।

फरवरी

बीजफलों का एकत्रीकरण और भंडारण

चयनित मातृ ताड़ों से बीजफलों की तुड़ाई करके समुचित रूप से भंडारण करें। यदि ज़मीन ठोस हो तो रस्सी के सहारे फलों को नीचे लाया जाए।

नर्सरी प्रबंधन

जैसा कि पहले बताया गया है नर्सरी प्रबंधन के लिए समुचित उपाय अपनाया जाए।

छाया प्रदान करना

यदि नव रोपित पौधों को छाया प्रदान करने की व्यवस्था नहीं की गई है तो छाया प्रदान करें।

छोटे पौधे को छाया प्रदान करना

सिंचाई

नारियल बागानों में सिंचाई जारी रखनी चाहिए। जनवरी महीने में बताए गए अनुसार इस महीने के दौरान भी उपयुक्त सिंचाई विधि अपनायी जाएं।

नमी संरक्षण

यदि पहले नहीं किया गया हो तो पलवार लगाना और अन्य मिट्टी एवं नमी संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए।

कीट एवं रोग प्रबंधन

जनवरी में भी तापमान बढ़कर उच्च रहने के कारण ऐसा लगता है कि फरवरी का महीना शुष्क होने वाला है। किंतु रातें काफी ठंडी रहती हैं। आर्द्रता की प्रतिशतता धीरे धीरे कम होने लगती है और वाष्पन का स्तर बढ़ जाता है। नदी के निकट क्षेत्र और खारे पानी वाले क्षेत्र तथा मध्यवर्ती भूभागों में शोषक कीट जैसे रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी और अन्य सफेद मक्खियों के प्रकोप के लिए अनुकूल वातावरण पैदा हो जाता है। केरल, तमिलनाडु, आँध्र प्रदेश, कर्नाटक और लक्षद्वीप

पत्तों और पुष्पक्रमों को नुकसान

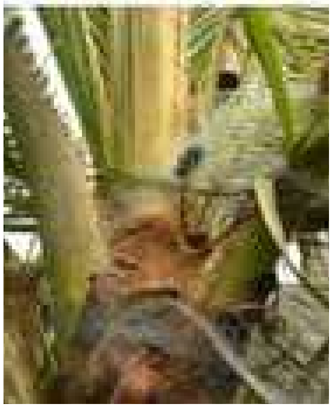

मछली जाल से संरक्षण

मेटाराइज़ियम प्रकोपित सूँडी

द्वीपसमूहों (कवरत्ती और मिनिकॉय) में रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी या नेस्टिंग सफेद मक्खी या दोनों का एकसाथ भारी प्रकोप पाया गया है। परजीविता स्तर में ऐसा परिवर्तन होगा जो विशेषतया अवयस्क ताड़ों और नर्सरियों में कीटों की आबादी बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करेगा। बारिश खत्म होने के बाद कज्जली फफूँद भक्षी भृंग की आबादी कम हो जाती है। नारियल पौधों और सजावटी पौधों के परिवहन के समय कड़ी स्वदेशी संगरोध अपनानी चाहिए। कृष्ण शीर्ष इल्ली और स्लग इल्ली जैसे मुख्य कीटों के प्रकोप की गुंजाइश वाले क्षेत्रों को ध्यानपूर्वक समझना होगा और तदनुसार प्रबंधन विधियाँ अपनानी होगी। पत्ता सड़न रोग और मूल तना विगलन रोग के रोगाणुओं की संख्या प्रकोप की गुंजाइश वाले क्षेत्रों में बढ़ सकती है।

गैंडा भृंग *(ऑरिक्टस रिनोसेरस)*

यह एक सर्वव्यापी कीट है, अत: गैंडा भृंग का प्रकोप हमेशा से होता रहता है। किंतु मानसून के समय इसका प्रकोप और बढ़ जाता है जब नए पौधों का रोपण भी किया जाता है। नव रोपित पौधों में भृंग के प्रकोप से कोंपल को नुकसान पहुँचता है और वह कुरूपित हो जाता है। अवयस्क ताड़ों पर भी कीट का प्रकोप अधिक होता है और कभी कभी वह हाथी के दाँत समान रोगलक्षण प्रकट करता है। नुकसान ग्रस्त अवयस्क ताड़ों की वृद्धि रुक जाती है और उस पर फूल निकलने में विलंब लग जाता है। हाल ही में फल पर छेद जैसे रोगलक्षण भी पाए गए हैं। यही नहीं, गैंडा भृंग का प्रकोप होने से उस ताड़ पर लाल ताड़ घुन अंडे डालने लगते हैं और कली सड़न रोग कारक रोगाणु भी इस दौरान पेड़ पर प्रवेश करता है।

प्रबंधन

- रोगरोधी उपचार के रूप में पेड़ के सबसे भीतरी तीन पर्ण कक्षों में या तो वानस्पतिक खली(नीम खली/चालमुगरा खली/पोंगम खली (250 ग्राम)) उतनी ही मात्रा में रेत मिश्रित करके भरें या 12 ग्राम नेफ्थलिन गोलियाँ रेत मिश्रित करके रखें।
- सुबह सुबह रोज़ाना ताड़ की छानबीन करें और प्रकोपित क्षेत्र से भृंगों को बीटल हुक से निकाल दें। यह प्रक्रिया अपनाने से कीटों की बढ़ती आबादी कम की जा सकती है।
- अवयस्क ताड़ों के कोंपल क्षेत्र को मछली पकड़ने की जाल से सुरक्षित रखें। इससे गैंड़ा भृंग को फँसाया जा सकता है और कीट का प्रकोप रोकने के लिए सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में 3 ग्राम क्लोरेंट्रानिलिप्रोल/फिप्रोनिल निहित छेदयुक्त सेशे रखें।
- पशुपालन उद्योग से जुड़े किसान खाद गड्ढ़ों को प्रति घन मीटर 5×10^{11} की दर पर हरी मस्कार्डिन कवक, मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि से उपचार करें ताकि गैंडा भृंग की बढ़ती सूँडियों पर जंतुमारी (एपिज़ोटिक) का प्रकोप करा सकें। यह उपाय समूचे इलाके के किसान एकसाथ अपनाने से कीट प्रकोप बहुत सफलतापूर्वक कम किया जा सकता है और यह कीटों की संख्या कम करने में परिस्थिति अनुकूल तरीका बन जाता है।
- प्रजनन गड्ढ़ों में भाँट *(क्लिरोडेंड्रोन इनफोर्चुनेटम)* नामक खरपतवार पौधा मिलाने से हार्मोन संबंधी विसंगतियों के कारण कीट की अवयस्क अवस्था में ही इनका विकास रुक जाता है।

• अंतर खेती और पारिस्थितिक इंजीनियरी सिद्धांतों द्वारा फसल विविधता लाने से कीटों को गुमराह किया जा सकता है और किसानों को लगातार आमदनी प्राप्त होती है और अतिरिक्त रोज़गार उत्पन्न होता है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी
(एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस)

इस अवधि के दौरान आक्रामक रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी *(एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस)* का प्रकोप नए क्षेत्रों में पाया गया और पहले से प्रकोप रिपोर्ट किए गए क्षेत्रों में दोबारा इसका प्रकोप पाया गया। दिन का तापमान अधिक होना और आपेक्षिक आर्द्रता कम होने जैसे अनुकूल जलवायु परिस्थितियों के कारण कीट की आबादी बढ़ जाती है। इस कीट का प्रकोप होने पर ताड़ की पत्तियों की निचली सतह पर सफेद मक्खी की कालोनी की उपस्थिति और पत्तियों की ऊपरी सतह पर काला फफूँद का जमाव पाया जा सकता है। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पत्ते शीघ्र जीर्ण हो जाते हैं और वयस्क पत्तियाँ जल्दी सूख जाती हैं। सफेद मक्खी का प्रकोप पत्तियों, डंठलों और फलों पर भी होता है और यह रिपोर्ट किया गया है कि केला, बर्ड ऑफ पैराडाइस, हेलिकोनिया प्रजाति आदि इसके परपोषी पादप हैं। सफेद मक्खियों का आहार लगातार बन जाने से ताड़ का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है जिसके लिए नारियल पेड़ की देखभाल करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

प्रबंधन

• छोटे ताड़ों में, जेट स्पीड से पानी का छिड़काव करने से सफेद मक्खी को पत्तियों से निकाला जा सकता है और कीट की आहार लेने की तथा प्रजनन की क्षमता कम की जा सकती है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी

• छोटे और वयस्क ताड़ों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए मृदा जाँच के अनुसार की गई सिफारिशों के आधार पर बेहतर पोषण प्रदान करें और पर्याप्त सिंचाई सुनिश्चित करें। जहाँ भी संभव हो सके अंतर फसलों का रोपण सहित ताड़ का कृषीय स्वास्थ्य प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है ताकि वाष्पशील संकेतों में विविधता लाया जा सके और सूक्ष्म जलवायु सुधार सके जिससे कि सफेद मक्खी की आबादी कम की जा सके।

• कीटनाशी का प्रयोग नहीं करना चाहिए जो कीट के दोबारा प्रकोप का कारण बन सकता है और यह कुदरती एफिलिनिड परजीवी *एनकार्शिया गुआडेलूपे* को पूरी तरह मार सकता है। परजीवी की वृद्धि के लिए कीटनाशी का प्रयोग थोड़े समय के लिए रोकने की सलाह दी जाती है।

• पीले चिपचिपे फँदे की स्थापना और *एनकार्शिया गुआडेलूपे* का प्रयोग करते हुए संरक्षी जैव नियंत्रण करने से कीटों की आबादी 70 प्रतिशत तक कम की जा सकती है और परजीविता 80 प्रतिशत तक बढ़ सकती है।

• काला फफूँद भक्षी भृंग *लियोक्रिनस नीलगिरियानस* के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करने से पत्तियों पर जमे सारे काले फफूँदों को यह खा जाता है और उन्हें इस प्रकार साफ करता है कि ताड़ों की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता बेहतर हो जाती है।

• नारियल खेती प्रणाली पर नेस्टिंग सफेद मक्खी सहित दूसरी सफेद मक्खियों की उपस्थिति की छानबीन बारीकी से करनी चाहिए।

नेस्टिंग सफेद मक्खी
(पैरालेरोड्स बोंडारी और पैरालेरोड्स मिनेइ)

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के अलावा नारियल की पत्तियों पर और दो नेस्टिंग सफेद मक्खियाँ *(पैरालेरोड्स बोंडारी और पैरालेरोड्स मिनेइ)* भी पायी गई हैं। नेस्टिंग सफेद मक्खी का आकार (1.1 मि.मी.) रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी (2.5 मि.मी.) के आकार से छोटा होता है। इसके निम्फ सपाट आकृति के होते हैं जिसकी पीठ में से फाइबर ग्लास समान तंतु निकला हुआ होता है जबकि रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी का निम्फ कॉन्वेक्स आकार का होता है। वयस्क

नारियल पत्तों पर नेस्टिंग सफेद मक्खी का प्रकोप

पत्ता सड़न रोगग्रस्त ताड़

रोगप्रकोपित पत्तियाँ

नेस्टिंग सफेद मक्खी पंछियों के घोंसले के समान अंडे सेने की जगह (ब्रूडिंग चेंबर) बनाती है और उसमें रहती है। पी.बोंडारी के पंखों पर 'X' आकार का टेढ़ा काला निशान होता है और दंडाकार के नर जननेंद्रिय पर दो छोटे उभार होते हैं जबकि पी.मिनेइ के पंखों पर काला निशान नहीं होता है और इसका जननेंद्रिय कुक्कुट के सिर के समान होता है। नेस्टिंग सफेद मक्खी रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के साथ होड़ करती है और कई मामलों में रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी का प्रकोप कम करती है।

प्रबंधन

- छोटे ताड़ों में, जेट स्पीड के साथ पानी छिड़कने से सफेद मक्खी को हटाया जा सकता है और इसके आहार लेने की क्षमता और प्रजनन क्षमता कम की जा सकती है।
- छोटे और वयस्क ताड़ों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए अच्छा पोषण और पर्याप्त मात्रा में पानी मिलना सुनिश्चित करना चाहिए।
- साइबोसेफलस प्रजाति के प्रभावी निटिडुलिड परभक्षी ताड़ प्रणाली में पाया गया था और जैविक नियंत्रण को सुरक्षित रखने के लिए कीटनाशी प्रयोग को कुछ समय के लिए रोकने की सलाह दी जाती है।

कृष्णशीर्ष इल्ली *(ओपिसिना एरेनोसेला)*

यदि कृष्णशीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाता है तो समुचित प्रबंधन उपाय अपनाएं।

पत्ता सड़न रोग *(कोलेटोट्रिकम ग्लोइयोस्पोरियोइड्स, एक्सेरोहिलम रोस्ट्रेटम)*

यह आम तौर पर जड़ मुर्झा रोग ग्रस्त ताड़ों पर पाया जाता है जिनमें नई निकली नारियल की कोंपलों पर और निकटस्थ पत्तों पर ऊतकक्षय पाया जाता है। यह रोग मुख्यतया दिसंबर महीने के दौरान मानसून के बाद के चरणों में पाया जाता है। रोगप्रकोपित पत्तों का ऊतकक्षय हो जाता है और यह ताड़ से अलग नहीं होता है और उस पर टिका रहता है। प्रारंभ में यह रोग छोटे छोटे धब्बे के रूप में प्रकट होता है जो बाद में बड़ा होकर एक दूसरे से मिल जाता है और व्यापक रूप से सड़ जाता है जिससे ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इस रोग का प्रकोप मुख्यतः जड़ मुर्झा रोग प्रकोपित क्षेत्रों में होता है।

प्रबंधन

- शिखर पर आवश्यकता आधार पर रोगग्रस्त कोंपल एवं आसपास के पत्तों को काटकर नष्ट कर देना चाहिए।
- रोगप्रकोपित कोंपल और उसके आसपास 300 मि.ली. पानी में हेक्साकोनाज़ोल 2 मि.ली. मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- ताड़ का स्वास्थ्य सुधारने के लिए मृदा की जाँच करके अपेक्षित पोषण और पर्याप्त सिंचाई सुनिश्चित करना है।

मूल तना विगलन रोग *(गैनोडेर्मा प्रजाति)*

यह एक विनाशकारी रोग है जो नारियल की खेती किए जाने वाले सभी इलाकों में पाया जाता है और उच्च पीएच वाली मिट्टी में और नम दबाव परिस्थिति में अत्यधिक गंभीर रूप में प्रकट होता है। रोग प्रकोप की प्रारंभिक स्थिति में रोगाणु जड़ तंत्र पर वार करता है जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकट नहीं होता है। तमिलनाडु के तंजावुर, आँध्र प्रदेश में पूर्वी गोदावरी जिले के कुछ इलाकों और कर्नाटक के अरसिकेरे में यह गंभीर रूप में पाया जाता है। सबसे बाहरी पत्ते पहले पीले रंग के और फिर धीरे धीरे भूरे रंग के हो जाते हैं और बाद में तने

मूल तना विगलन रोग

से जुड़े भाग से नीचे की ओर झुक जाता है जो नीचे की तरह लंबवत् रूप में लटककर तने के शीर्ष पर लहँगे के समान प्रकट होता है। समय के साथ रोग का प्रकोप बढ़ जाने से तने का शीर्ष शंकु आकार का हो जाता है और धड़ क्षेत्र पर रिसाव के लक्षण प्रकट हो जाते हैं। तने के मूलभाग पर लाल भूरे रंग का घाव प्रकट होता है, जिससे गाढ़े चिपचिपे पदार्थ रिसने लगता है। ये भूरे धब्बे ज़मीनी स्तर से एक मीटर की ऊँचाई तक फैल जाते हैं और कभी कभी तने से छाल निकलते हुए भी पाया जाता है। कभी-कभार प्रकोपित तने पर रोगाणु के फलन काय(बेसिडियोकार्प) का विकास होता है।

- तने के निकट कचरा और ताड़ का अपशिष्ट न जलाएं ताकि तना/जड़ को घाव लगने से बचाया जा सके।
- मृत ताड़ और गंभीर रूप से रोगप्रकोपित ताड़ों को काट कर निकालें तथा रोगग्रस्त ताड़ों के धड़ और जड़ भागों का नाश करें ताकि रोग संरोपों को हटाया जा सके।
- रोगप्रकोपित ताड़ों के चारों ओर(तने के निचले भाग से 1.2 मीटर की दूरी में) गड्ढ़े खोदकर (60 सें.मी. गहरा और 30 सें.मी. चौड़ा) आसपास के स्वस्थ ताड़ों से अलग रखें।
- प्रति वर्ष प्रति ताड़ छह महीने के अंतराल पर ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम(सीपीटीडी 28) टैल्क दवा (50 ग्राम) से संपुष्ट नीम खली (5 कि.ग्रा.) का प्रयोग करने से रोग की तीव्रता कम हो जाती है।
- 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाज़ोल जड़ों द्वारा देना (प्रति ताड़ 100 मि.ली. घोल) और 0.2 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल या 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण के 40 लीटर से नारियल थालों में मिट्टी को शराबोर करना अनुशंसित है।

कीटों और माइट कीटों तथा रोगकारक रोगाणुओं का सटीक और समय पर पहचान प्रभावी प्रबंधन तंत्र के कार्यान्वयन के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि रोग या रोगकीट का पता देरी से लगाया जाता है तो कीट प्रकोप से बचाव करने में भी अधिक समय लगेगा। अतः प्रभावी तलाशी के ज़रिए बारीकी से ताड़ों की छानबीन करने और समय पर रोग की पहचान करने से उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है और किसानों को दुगुनी आय प्राप्त होने लगती है। नारियल के कीटों और रोगों से निपटने के लिए ताड़ का स्वास्थ्य प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

मार्च

बीजफलों का एकत्रीकरण और भंडारण

पहले बताए गए अनुसार बीजफलों की तुड़ाई करके इसका भंडारण समुचित रूप से करें।

नर्सरी प्रबंधन

जैसा कि पहले बताया गया है नर्सरी प्रबंधन के लिए समुचित उपाय अपनाएं।

उर्वरक प्रयोग

सिंचित नारियल बागों में नारियल पेड़ों को रासायनिक उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई भाग का प्रयोग करें।

सिंचाई

नारियल बागानों में सिंचाई जारी रखनी चाहिए। इसके लिए उपयुक्त विधि अपनायी जाए।

नमी संरक्षण

नारियल की खेती की जाने वाले अधिकांश क्षेत्रों में गर्मी के चरम दिनों में सिंचाई करने के लिए पानी की दुर्लभता काफी गंभीर समस्या बन जाएगी। अतः नारियल किसानों को सिंचाई के लिए पानी का उपयोग काफी विवेकपूर्ण ढंग से करना अनिवार्य हो जाता है। पानी की बचत करने के लिए ड्रिप सिंचाई सुविधा का प्रयोग करना चाहिए। यदि पहले नहीं

उर्वरक प्रयोग

नारियल छिलके से पलवार

किया गया हो तो पलवार लगाना और अन्य मिट्टी एवं नमी संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए। पानी के अभाव वाले क्षेत्रों में जहाँ भी व्यवहार्य हो, नारियल पेड़ों की जान बचाने/सुरक्षित रखने के लिए अपेक्षित सिंचाई की व्यवस्था करनी चाहिए। इस प्रकार जान बचाने/संरक्षण के लिए सिंचाई करते समय थालों से पलवार लगाई गई सामग्रियाँ हटा देनी चाहिए और सिचाई के तुरंत बाद थालों में फिर से इन सामग्रियों से पलवार लगाना चाहिए।

छाया प्रदान करना

यदि नव रोपित पौधों को छाया प्रदान करने की व्यवस्था नहीं की गई है तो छाया प्रदान करें।

कीटों और रोगों का प्रबंधन

मार्च का महीना शुरू से अंत तक शुष्क रहता है, किंतु एकाध बार बारिश होने से गर्मी की तीव्रता कम हो जाती है और आर्द्रता थोड़ी बढ़ जाने से कीट प्रकोप के लिए अनुकूल वातावरण पैदा हो जाता है। सफेद मक्खी और नारियल एरियोफिड माइट जैसे शोषक कीट इस अवधि के दौरान बढ़ जाते हैं। स्लग इल्ली के प्रकोप वाले क्षेत्रों का कड़ी अनुवीक्षण करना चाहिए और कीट प्रकोपित पुराने पत्तों को नष्ट करते हुए इसका व्यापक फैलाव रोकने के लिए एहतियाती उपाय अपनानी चाहिए। रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के लिए यह जलवायु परिस्थितियाँ काफी अनुकूल होती हैं। इसलिए उपयुक्त स्वास्थ्य प्रबंधन विधियाँ अपनाते हुए पर्याप्त मात्रा में पोषण और पानी की व्यवस्था करके ताड़ को स्वस्थ बनाए रखें ताकि कीट के प्रकोप को झेलने के लिए ताड़ पर और अधिक पत्ते निकल सकें। रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी और नेस्टिंग सफेद मक्खी के प्रकोप की जाँच करने के लिए नर्सरी के नारियल पौधों का कड़ी अनुवीक्षण करना चाहिए। तमिलनाडु और आँध्र प्रदेश में चक्रवाती तूफान से क्षतिग्रस्त हुए क्षेत्रों में ताड़ के सड़े अपशिष्टों के गंध से आकृष्ट होकर लाल ताड़ घुन उस क्षेत्र के अकेले खड़े ताड़ों पर अंडा डालने के लिए केन्द्रित हो सकते हैं जिसका सख्ती से अनुवीक्षण करने की आवश्यकता है। ताड़ के थालों में फसलों का अपशिष्ट नहीं जलाना चाहिए क्योंकि यह तने के ऊतकों को नरम बना सकते हैं जो तना स्रवण और मूल तना विगलन रोगकारी रोगाणुओं के लिए रास्ता खोल सकता है। ताड़ के स्वास्थ्य का बेहतर अनुवीक्षण करने के लिए और कीट प्रकोप से बचने के लिए मार्च के महीने के दौरान कडी अनुवीक्षण करते रहना चाहिए।

लाल ताड़ घुन, *रिंकोफोरस फेरुजिनस*

गैंडा भृंग का प्रकोप होने पर घातक कीट लाल ताड़ घुन की आक्रामक क्षमताएं अधिक हो जाती हैं क्योंकि इस कीट को किसी ताड़ पर केन्द्रित होने और अंडा देने के लिए ताड़ पर घाव होना ज़रूरी होता है। मध्यम छल्ले के क्षेत्र का पीला होना, भूरे रंग का तरल पदार्थ रिसना, ताड़ पर छेद होना, तर्कु पत्ता क्षेत्र का रोधन और तने से सूँडियों के कुतरने की आवाज़ सुनाई देना आदि जैसे लक्षण कीट की क्षति को समय पर पहचानने में सहायक हैं। प्रारंभिक स्थिति में कीट के प्रकोप की पहचान करने में किसान असमर्थ हो जाते हैं क्योंकि यह कीट ताड़ के भीतर छिपा रहता है। बौनी किस्म के और 5-15 वर्ष की आयु के ताड़ों पर इसका प्रकोप अपेक्षतया अधिक होता

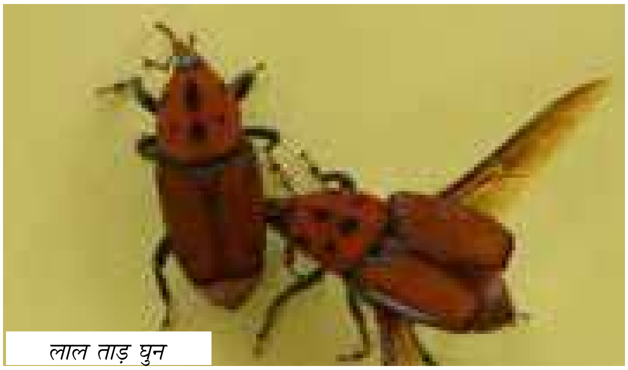

लाल ताड़ घुन

शिखर पर घुन का प्रकोप

रोग प्रकोप से शिखर का गिरना

है। प्रकोपित ताड़ के भीतर सभी अवस्था के कीट पाए जाते हैं। ताड़ का घातक शत्रु होने के कारण एक प्रतिशत प्रकोप को रोकथाम के उपाय अपनाने का समयसीमा निर्धारित किया गया है।

प्रबंधन

- अंडा देने के लिए तैयार घुनों को बाग से दूर रखने के लिए ताड़ पर कोई घाव लगने न देना अनिवार्य होता है और इसलिए पत्तों को काटते समय तने से कम से कम एक मीटर लंबाई में पर्णवृंत को छोड़कर काटना चाहिए।
- कीट प्रकोपित ताड़ों/शिखर गिरे ताड़ों को तुरंत काटकर नष्ट कर देना चाहिए।
- कीट का प्रकोप कम करने के लिए फसल ज्यामिति और समुचित दूरी बनाए रखना अत्यंत अनिवार्य है।
- प्रकोपित ताड़ों पर प्रकोपित स्थानों में इमिडाक्लोप्रिड 0.002 प्रतिशत(प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली.) या इंडोक्सोकार्ब 0.04 प्रतिशत(प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली.) का यथासमय प्रयोग करने से सूँडियाँ मर जाती हैं और ताड़ प्रकोप से मुक्त होकर उस पर नई कोंपल निकलने लगती है।
- प्रतिरक्षकों और परागणकर्ताओं को उत्तेजित करते हुए नारियल आधारित फसल प्रणाली के ज़रिए फसलों में विविधता (पारिस्थितिकीय जैवइंजीनियरी) रखने से ताड़ से जुड़े वाष्पशील संकेत कम होगा और कीटों की संख्या कम करने में मदद मिलेगी। एकल फसल प्रणाली की अपेक्षा बहुफसल प्रणाली अपनाने से कीट का प्रकोप कम हो जाता है।

नारियल एरियोफिड माइट, *ऐसेरिया गुरुरोंनिस*

नारियल एरियोफिड माइट का प्रकोप होने पर जैसा कि पहले बताया गया है समुचित उपाय अपनाया जाए।

स्लग इल्ली *(डार्ना नैरेरिया)*

आँध्र प्रदेश के पूर्व गोदावरी जिले में और कर्नाटक के तुम्कूर में स्लग इल्ली, *डार्ना नैरेरिया* का प्रकोप हो सकता है क्यों कि इस दौरान नदी के तटों पर और खारे पानी वाले इलाकों में लगाए गए नारियल पेड़ों पर इस कीट की आबादी बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण पैदा होता है। कई सैकड़ों इल्लियाँ पेड़ पर एकत्र हो जाएंगी और ताड़ की पत्तियों की निचली सतह को अपना आहार बना लेगी जिससे चमकदार चित्तियाँ उत्पन्न होती हैं और इसके साथ साथ धूसर पर्ण चित्ती रोग का प्रकोप होने से सारी पत्तियाँ जली हुई सी प्रतीत होती हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पत्तियाँ सूखकर गिर जाती हैं और मात्र मध्यशिरा रह जाती है। उच्च तापमान और ठंडा मौसम इसका प्रकोप बढ़ने के कारण हो सकते हैं।

स्लग इल्ली से क्षतिग्रस्त नारियल पेड़

प्रबंधन

- कीट प्रकोप के प्रारंभ में ही प्रकोपित पत्तों का तुरंत ही पूरी तरह से नाश करना चाहिए ताकि कीटों की संख्या और अधिक बढ़ने से रोका जा सके। ध्यान रहे कि इस कीट में ज़हरीले स्कोली मौजूद होने के कारण इनसान की त्वचा के साथ संपर्क में आने पर अत्यंत खुजली उत्पन्न होती है।

स्लग इल्ली

• यूलोफिड लार्वा परजीवी *पेडियोबियस इम्ब्रुएस* से जैविक नियंत्रण करने के साथ साथ प्रकाश जाल की स्थापना और प्रति लीटर 5 ग्राम की दर पर *बैसिलस थुरिंजिएनसिस* का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

तना स्रवण *(थिलावियोप्सिस (सेराटोसिस्टिस) पैराडोक्सा)*

यह केरल की अम्लीय मिट्टियों में अधिकांशतः सीमित रोग है और इस अवधि के दौरान इसका प्रकोप अधिक होता है। तने पर लाल-भूरे रंग के चिपचिपे तरल पदार्थ रिसने लगता है जो सूख जाने पर काले रंग का हो जाता है। प्रारंभिक स्थिति में लंबी दरार के साथ रिसने वाले छोटे धब्बों के रूप में यह प्रकट होता है, जो बाद में एकसाथ मिलकर बहुत बड़ा घाव बन जाता है। इसके निचले भाग के ऊतक बेरंग हो जाते हैं और बाद में ये सड़ जाते हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में बाहरी पत्ते पीले हो जाते हैं और ये सूखकर समय से पूर्व गिर जाते हैं जिससे ताड़ के संपूर्ण स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। डायोकैलेंड्रा और क्साइलिबोरस जैसे स्कोलिटिड भृंगों के प्रकोप से तना और भी कमज़ोर हो जाता है।

प्रबंधन

- कचरा एवं ताड़ के अन्य अपशिष्ट तने के निकट नहीं जलाएं ताकि तना/जड़ पर घाव लगने से बचाया जा सके।
- पर्याप्त सिंचाई और मृदा एवं जल संरक्षण उपाय अपनाना अनुशंसित है।
- ट्राइकोडेर्मा हर्ज़ियानम से संपुष्ट 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग और मृदा जाँच आधारित पोषण प्रबंधन तरीका अपनाना चाहिए।
- तने के रिसने वाले घावों पर ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम टैल्क के पेस्ट का प्रयोग भी तना स्रवण रोग का फैलाव रोकने के लिए प्रभावी पाया गया है।

सेवानिवृत्ति

श्री खोकन देबनाथ, उप निदेशक (विकास) 31 अक्तूबर 2021 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 36 वर्ष बोर्ड में सेवा की।

श्री गितेन गोस्वामी, चालक ग्रेड़ I, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी 31 दिसंबर 2021 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 36 वर्ष बोर्ड में सेवा की।

मूल तना विगलन रोग *(गैनोडेर्मा प्रजाति)*

इस रोग का प्रकोप होने पर पहले बताए गए अनुसार उचित प्रबंधन विधि अपनाएं।

कीटों और रोगों की क्षति की संभावनाएं कम करने के लिए टिकाऊ अनुवीक्षण और रोगरोधी उपाय अपनाना होगा और सही समय पर स्वास्थ्य प्रबंधन रणनीतियाँ अपनाने की आवश्यकता है। ताड़ का स्वास्थ्य बनाए रखते हुए टिकाऊ उत्पादन और कीटों एवं रोगों के प्रकोप से ताड़ को सुरक्षित रखने के लिए मार्च में सामयिक कीट प्रबंधन रणनीतियाँ अपनायी जानी चाहिए। ■

सर्वोत्तम कृषि पद्धतियाँ अपनाकर भारत ने बागवानी उत्पादन दुगुना कर दिया- श्री तोमर

माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत के लिए यह गर्व की बात रही है कि हमने पिछले कुछ साल में बागवानी उत्पादन दोगुना कर लिया और कमी से बढ़त की ओर अग्रसर हो गए हैं। सर्वोत्तम पद्धतियाँ अपनाकर, उन्हें दुनिया के साथ साझा करके हम न केवल फल-सब्जी उत्पादन में सुधार कर रहे हैं बल्कि टिकाऊ और बेहतर भविष्य की मशाल भी थामे हुए हैं। वे संयुक्त राष्ट्र संगठन द्वारा खाद्य एवं कृषि संगठन के सहयोग के साथ घोषित 'फलों और सब्जियों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष, 2021' मनाने के लिए, खाद्य एवं कृषि संगठन के सहयोग से कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा 29 अक्तूबर 2021 को आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में सभा को संबोधित कर रहे थे।

श्री तोमर ने कहा कि भारत बागवानी फसलों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है, जो वैश्विक फल-सब्जियों के उत्पादन का लगभग 12 प्रतिशत उत्पादन करता है। विश्व स्तर पर लोकप्रिय विदेशी व महत्वपूर्ण स्वदेशी फल-फसलों को बढ़ावा देने के लिए, केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने वाणिज्यिक महत्व की 10 विदेशी (एक्सोटिक) फल-फसलों और उच्च पोषण एवं पौष्टिक गुणों वाली 10 महत्वपूर्ण स्वदेशी (इंडिजेनस) फल-फसलों की पहचान की है। राज्य बागवानी विभागों को भी इन फसलों के लिए क्षेत्र विस्तार के संबंध में वर्ष 2021-22 के लिए लक्ष्य दिए गए हैं। चालू वर्ष के दौरान विदेशी फलों के लिए 8951 हेक्टर क्षेत्र व देशी फलों के लिए 7154 हेक्टर क्षेत्र को खेती के दायरे में लाया जाएगा।

उन्होंने कहा कि बागवानी फसलों की भौगोलिक विशेषज्ञता के आधार पर क्लस्टर विकास दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसका कार्यक्रम शुरू किया जा चुका है। सरकार ने गांवों में और खेतों के पास ही क्षेत्रों में इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने, सभी आपूर्ति श्रृंखला सेवाओं, ई-मार्केटिंग प्लेटफॉर्मों, भंडारगृहों, पैक हाउसों, ग्रेडिंग इकाइयों, पैकिंग इकाइयों, कोल्ड चैन, प्राथमिक प्रसंस्करण केंद्रों तथा संबंधित लॉजिस्टिक्स सुविधाओं के लिए एकत्रीकरण स्थानों के वित्तपोषण हेतु एक लाख करोड़ रुपए का एग्री इंफ्रा फंड शुरू किया है।

श्री तोमर ने कहा कि सार्वजनिक-निजी भागीदारी में हमारी सक्रिय भूमिका ने हमें फसल-कटाई उपरांत अवसंरचना में सुधार करने में मदद की है क्योंकि हम बागवानी में नए उभरते प्लेयर्स और कृषि स्टार्टअप्स के साथ काम करते रहे हैं, जो भारतीय कृषि परिदृश्य का उज्जवल भविष्य हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि "21वीं सदी के भारत को कृषि उत्पादन में वृद्धि के बीच फसल-कटाई उपरांत खाद्य प्रसंस्करण क्रांति और मूल्यवर्धन की आवश्यकता है। आज हमें कृषि के हर क्षेत्र, हर भोजन, हर सब्जी, फल, मत्स्य पालन और सभी में प्रसंस्करण पर सबसे अधिक ध्यान केंद्रित करना होगा। किसानों को अपने गांव के पास आधुनिक भंडारण सुविधाएं मिलनी चाहिए"।

श्री संजय अग्रवाल, सचिव, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार ने कहा कि बागवानी भारतीय कृषि का विकास इंजन बन गया है। फलों और सब्जियों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष, हमारे दैनिक जीवन में फलों और सब्जियों के महत्व के साथ-साथ किसानों की आय दोगुनी करने के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए संयुक्त राष्ट्र का एक प्रयास है। इस आयोजन का लक्ष्य न केवल स्वदेशी पर ध्यान केंद्रित करना है, बल्कि इसे वैश्विक बनाना भी है। इसे प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

भारत में एफएओ के प्रतिनिधि श्री टोमियो शिचिरी ने भी संबोधित किया। अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ श्री गर्थ एटकिंसन ने 'बागवानी आपूर्ति श्रृंखला में वैश्विक बदलाव' पर प्रस्तुति दी।

संयुक्त सचिव (एमआईडीएच) श्री राजबीर सिंह ने देश में बागवानी क्षेत्र पर विवरण प्रस्तुत किया और संचालन किया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक डा ए.के. सिंह भी मौजूद थे।

सम्मेलन में मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के अलावा इज़राइल व नीदरलैंड के दूतावास, ग्रीन इनोवेशन सेंटर, जीआईजेड के वरिष्ठ अधिकारी, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, नारियल विकास बोर्ड, आईसीएआर के संस्थानों व देश के अग्रणी उत्पादकों, प्रसंस्करणकर्ताओं, किसानों सहित सभी राज्य बागवानी मिशनों के अधिकारी भी शामिल हुए। इस अवसर पर बागवानी क्लस्टर विकास कार्यक्रम व क्यूआर कोड़ के दिशानिर्देशों का विमोचन किया गया।

वाणिज्य सप्ताह

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार ने 20 से 26 सितंबर के दौरान वाणिज्य सप्ताह का अनुपालन किया जिसमें भारत को उभरती आर्थिक शक्ति के रूप में प्रदर्शित करते हुए देश भर में अनेक कार्यक्रम एवं समारोह और निर्यातक सम्मेलन आयोजित किए गए। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के सिलसिले में आर्थिक प्रगति, विशेषकर भारत से निर्यात को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करके यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार तथा विभिन्न निर्यात संवर्धन परिषदों द्वारा 22 सितंबर 2021 को कलैवनार अरंगम, चेन्नै में आयोजित वाणिज्य सप्ताह में नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने भाग लिया। श्री एम.के.स्टालिन, माननीय मुख्य मंत्री, तमिलनाडु ने सम्मेलन का उद्घाटन किया और तमिलनाडु के लिए निर्यात नीति घोषित की। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि सारे जहान में 'तमिलनाडु निर्मित' ही सुनाई देना चाहिए। माननीय मुख्य मंत्री के साथ श्री तंगम तेन्नरसु, माननीय उद्योग मंत्री, तमिलनाडु, श्री टी.एम.अन्बरशन, माननीय ग्रामीण उद्योग मंत्री, तमिलनाडु, डा.वी.इरै अन्बु भा.प्र.से., मुख्य सचिव, तमिलनाडु सरकार और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने नाविबो स्टाल का दौरा किया और विभिन्न नारियल उत्पादों के बारे में पूछताछ की। बोर्ड ने नारियल प्रौद्योगिकी मिशन योजना के तहत सहायता प्राप्त सर्वश्री नेटा नूट्रिको कोकनट फुड प्रोडक्ट्स लि., एरणाकुलम, सर्वश्री शक्ति कोको प्रोडक्ट्स, पोल्लाच्ची, सर्वश्री प्योर ट्रोपिक, सेंगपल्ली, तिरुपुर, सर्वश्री मदुरै एग्रो प्रोसस प्रा.लिमिटेड, कोयंबत्तूर और सर्वश्री श्रीराम कोकनट प्रोडक्ट्स, बतलागुंडु जैसे विभिन्न विनिर्माण इकाइयों के विविध

कलैवनार अरंगम, चेन्नै में संपन्न वाणिज्य सप्ताह में नाविबो का स्टाल। चित्र में श्रीमती बाला सुधाहरि, प्रभारी निदेशक और श्री सी. शशिकुमार, विकास अधिकारी, नाविबो दर्शित हैं

मूल्य वर्धित नारियल उत्पादें जैसे कि नेटा-डी-कोको, डाब पानी, नारियल दूध पाउडर, नारियल दूध क्रीम, डेसिकेटड नारियल, नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल, नारियल आटा और नारियल शर्करा प्रदर्शित किए। प्रदर्शन स्टाल में नारियल प्रौद्योगिकी मिशन, निर्यात संवर्धन आदि नाविबो की योजनाएं प्रदर्शित करने वाले आकर्षक सूचनात्मक पोस्टर लगाए गए। नारियल विकास बोर्ड के स्टाल में नाविबो योजनाओं पर लीफलेट तथा तमिल, अंग्रेज़ी और हिंदी भाषाओं में प्रकाशित पत्रिकाएं वितरित की गईं। केंद्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान, चर्म निर्यात परिषद, राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, फुट वीयर डिज़ाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट, चमड़ा क्षेत्र कौशल परिषद, कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीईडीए), स्पाइसेस बोर्ड, कयर बोर्ड, विदेश व्यापार महानिदेशालय, भारतीय निर्यात परिषद, एचडीएफसी बैंक आदि ने सम्मेलन में अपने उत्पादें एवं प्रौद्योगिकियाँ प्रदर्शित कीं।

तमिलनाडु के विभिन्न जिलों और अन्य राज्यों से उद्यमियों, व्यवसाय से जुड़े लोगों और किसानों ने नाविबो स्टाल का दौरा किया और नारियल के मूल्य वर्धन, नारियल खेती, किस्में,

तिरुपूर, तमिलनाडु में संपन्न वाणिज्य सप्ताह में बोर्ड के स्टाल का दृश्य

नर्सरी, मूल्य वर्धन हेतु योजनाएं तथा नाविबो की योजनाओं पर जानकारियाँ प्राप्त कीं। अधिकांश आगंतुकों ने नारियल आधारित मूल्य वर्धित उत्पादों के निर्यात संबंधी ब्यौरे तथा बोर्ड की योजनाओं के बारे में पूछताछ की।

विदेश व्यापार महानिदेशालय, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, कोयंबत्तूर और जिला उद्योग केंद्र, तमिलनाडु सरकार, तिरुपूर द्वारा आयोजित दूसरा निर्यातक सम्मेलन 24 सितंबर, 2021 को इंडिया निट फेयर कोम्प्लेक्स, अनैपुदुर, तिरुपूर में संपन्न हुआ। नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने प्रबीउ फार्म, धली के ज़रिए कार्यक्रम में भाग लिया।

निर्यातक सम्मेलन का उद्घाटन श्री एम.पी.सामिनाथन, माननीय सूचना एवं प्रचार मंत्री, तमिलनाडु सरकार ने श्री के.सेल्वराज, विधायक, तिरुपूर साउथ, श्री विनीत भा.प्र.से., जिलाधीश, तिरुपूर जिला, तमिलनाडु सरकार, श्री डी.श्रीधर, आईटीएस, संयुक्त डीजीएफटी, कोयंबत्तूर और केंद्रीय व राज्य सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की समुपस्थिति में किया। सम्मेलन का मुख्य विषय 'वैश्विक बाज़ार में भारत की उभरती निर्यात संभाव्यता' था। उद्घाटन सत्र के बाद एक तकनीकी सत्र संपन्न हुआ। निर्यातक सम्मेलन के दौरान एक दिवसीय प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

विभिन्न केंद्रीय/राज्य सरकारी संगठनों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, गैर सरकारी संगठनों, किसान उत्पादक संगठनों, जिला उद्योग केंद्र, कयर बोर्ड, कैनरा बैंक और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने सम्मेलन में भाग लिया।

बोर्ड के स्टाल में नारियल दूध पाउडर, नारियल दूध, नारियल क्रीम, डेसिकेटड नारियल, नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल, नारियल आटा, पाम शर्करा, नारियल खोपड़ी पाउडर, नारियल खोपड़ी कोयला, सक्रियित कार्बन, नारियल खोपड़ी कोयला इष्टिका, नारियल कयर/खोपड़ी/लकड़ी से निर्मित हस्तशिल्प और नारियल के मूल्य वर्धन संबंधी अच्छी सूचनात्मक पोस्टर, बैनर, चार्ट, लीफलेट, पामफ्लेट तथा पुस्तिकाएं प्रदर्शित किए गए। बोर्ड की पत्रिकाएं तथा अन्य प्रकाशन भी इस अवसर पर वितरित किए गए।

बोर्ड ने अपने बैनर के अंतर्गत नौ विनिर्माण कंपनियों जैसे सर्वश्री कोको एनर्जी, अन्नूर, सर्वश्री मदुरै एग्रो प्रोसस प्रा.लि., कोयंबत्तूर, सर्वश्री शक्ति कोको प्रोडक्ट्स, पोल्लाच्ची, सर्वश्री सन बयो नैचुरल्स इंडिया लि., वलिपनंकाट, कंगयम, सर्वश्री श्रीराम कोकनट प्रोडक्ट्स, बट्लागुंड, सर्वश्री इन्डोमित्रा फार्म प्रोडक्ट्स प्रा.लि., अरसुर, कोयंबत्तूर, सर्वश्री केएलएफ निर्मल इंडस्ट्रीस प्रा.लि., पेरुंतुरै, सर्वश्री प्योर ट्रोपिक, सेंगापल्ली, तिरुपुर और सर्वश्री इंडियन कोकनट प्रोडक्ट्स, इरिपट्टी, पोल्लाच्ची के विभिन्न नारियल उत्पादें प्रदर्शित किए। श्री जी. रघोत्तमन, फार्म प्रबंधक ने स्टाल में आए किसानों, उद्यमियों, बैंक अधिकारियों, गैर सरकारी संगठनों तथा किसान उत्पादक संगठनों को बोर्ड की योजनाओं, विशेषकर नारियल प्रौद्योगिकी मिशन पर संक्षिप्त विवरण दिया।

प्रदर्शनी में अंतर्राष्ट्रीय और देशीय विशेषज्ञों की भी उपस्थिति रही जिससे एक पेशेवर मंच सृजित हुआ। श्री एम.पी.सामिनाथन, माननीय सूचना एवं प्रचार मंत्री, तमिलनाडु सरकार, श्री के.सेल्वराज, विधायक, तिरुपुर साउथ, श्री विनीत भा.प्र.से., जिलाधीश, तिरुपुर जिला, तमिलनाडु सरकार के साथ साथ राज्य व केंद्रीय सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों ने बोर्ड के स्टाल का दौरा किया और मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों के बारे में पूछताछ की। किसानों, विद्यार्थियों, व्यापार समूहों, विभिन्न राज्य व केंद्रीय सरकारी विभागों से अधिकारियों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, गैर सरकारी संगठनों, किसान उत्पादक संगठनों आदि सहित अनेक आगंतुकों ने बोर्ड के स्टाल का दौरा किया।

वाणिज्य विभाग ने संघ शासित क्षेत्र लक्षद्वीप, विदेश व्यापार महानिदेशालय तथा समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) के तत्वावधान में 21 और 22 सितंबर 2021 को पंचमत स्टेज, कवरत्ती में वाणिज्य सप्ताह आयोजित किया। श्री ए.अन्बरशु भा.प्र.से., प्रशासक का सलाहकार, संघ शासित क्षेत्र लक्षद्वीप ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री अमित सतीजा भा.प्र.से., (वित्त सचिव),

कवरत्ती, लक्षद्वीप में संपन्न वाणिज्य सप्ताह में बोर्ड के स्टाल का दृश्य

श्री दामोदर ए.टी., भा.व.से., (सचिव, कृषि) और श्री ओ.पी.मिश्रा (विशेष सचिव, कृषि) कार्यक्रम में उपस्थित रहे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोची, नारियल विकास बोर्ड, कोची, कृषि विज्ञान केंद्र, एलडीसीएल और द्वीप के स्वयं सहायता समूहों ने कार्यक्रम में भाग लिया और अपने उत्पादें प्रदर्शित किए। द्वीप के निवासियों को नारियल के विभिन्न उत्पादों से परिचित कराने के लिए बोर्ड के स्टाल में विभिन्न उत्पादें जैसे कि नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल पाउडर, नारियल दूध पाउडर, नारियल दूध क्रीम, डाब पानी, सक्रियित कार्बन आदि प्रदर्शित किए गए।

नारियल की समृद्धि के लिए प्रौद्योगिकियों का प्रभावी उपयोग - किसान उत्पादक संगठनों की भूमिका

मंच का दृश्य

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने 21 अक्तूबर 2021 को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान-भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोट में 'नारियल की समृद्धि के लिए प्रौद्योगिकियों का प्रभावी उपयोग - किसान उत्पादक संगठनों की भूमिका' पर संवाद कार्यक्रम आयोजित किया। डा.तम्पान सी., प्रधान वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) ने सभा का स्वागत किया और संवाद कार्यक्रम का उद्देश्य एवं संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

डा.अनिता करुण, प्रभारी निदेशक, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने वैज्ञानिक-एफपीओ संवाद कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डा.अनिता करुण ने उद्घाटन भाषण में अपना विचार व्यक्त किया कि नारियल क्षेत्र में गठित किसान उत्पादक संगठन उच्च उत्पादकता हेतु वैज्ञानिक फसल प्रबंधन प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण बढ़ाने के लिए लघु और सीमांत नारियल किसानों को सशक्त बनाने में और मूल्य वर्धन हेतु नारियल के प्रसंस्करण के ज़रिए आय एवं रोज़गार के अवसर बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

किसानों द्वारा नारियल आधारित आय सृजन प्रौद्योगिकियों की बेहतर उपयोगिता में किसान उत्पादक संगठनों की भूमिका, नारियल बागों में मसाला फसलों की अंतरखेती के लिए प्रौद्योगिकियों की बेहतर उपयोगिता में किसान उत्पादक संगठनों की भूमिका और किसान उत्पादक संगठनों द्वारा संचालित नारियल आधारित उद्यमों में मूल्य वर्धन हेतु प्रौद्योगिकियों की उपयोगिता की संभाव्यता पर क्रमशः डा.सुब्रमणियन,

प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, डा. वी.श्रीनिवासन, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान और डा.षमीना बीगम, वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने सत्र चलाया।

'नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठन - स्थिति और चुनौतियाँ' विषयक सत्र में कोषिक्कोट जिले के नारियल उत्पादक समितियों, नारियल उत्पादक फेडरेशनों और नारियल उत्पादक कंपनियों ने उनके द्वारा चलाई गई गतिविधियाँ, सामना करनी पड़ी बाधाएं एवं नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठनों के सुदृढ़ीकरण के लिए सुझाव प्रस्तुत किए।

श्री सुभाषबाबु के., भूतपूर्व महा प्रबंधक, केराफेड और कृषि उप निदेशक(सेवानिवृत्त) ने नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठनों को पुनरुज्जीवित करने के लिए नाविबो सहित नारियल विकास एजेंसियों और राज्य कृषि विभाग से अपेक्षित विभिन्न प्रकार के समर्थन पर सुझावें प्रस्तुत किए।

डा.पी.राजीव, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, समाज विज्ञान, आईआईएसआर ने किसान उत्पादक संगठनों द्वारा मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों के प्रभावी विपणन के लिए हस्तक्षेप सुझावित किए।

नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठनों को पुनरुज्जीवित करने हेतु संपन्न संवाद कार्यक्रम में विचार-विमर्श के दौरान विकसित मुख्य सुझावें निम्नानुसार हैं:

- नारियल विकास बोर्ड और राज्य कृषि विभाग, केरल सरकार द्वारा उचित नीतियों तथा हस्तक्षेपों के ज़रिए नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठनों के प्रकार्यों को पुनरुज्जीवित करना।
- वैज्ञानिक फसल प्रबंधन प्रौद्योगिकियों के प्रसार हेतु किसान सहभागिता प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठनों द्वारा अनुसंधान संस्थानों और विकास एजेंसियों के साथ सहयोगात्मक पहल करना।
- नारियल विकास बोर्ड और राज्य कृषि विभाग, केरल सरकार द्वारा नारियल विकास योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सारे सीपीएस एवं सीपीएफ को भी शामिल करना।
- गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों के उत्पादन एवं विपणन के लिए विकेंद्रीकृत नारियल नर्सरियों का प्रबंधन करने, राज्य के विभिन्न कृषि-पारिस्थितिकी क्षेत्रों के नारियल बागों के मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए अनुकूलित उर्वरक सामग्रियों का उत्पादन एवं आपूर्ति करने और नारियल बागों में एकीकृत कीट/रोग प्रबंधन को क्षेत्र व्यापक तौर पर अपनाने के लिए सामूहिक कार्रवाई आयोजित करने के लिए नारियल उत्पादक समिति/नारियल उत्पादक फेडरेशनों को सशक्त बनाने हेतु कदम उठाना।
- प्रौद्योगिकी अंतरण शुल्क की प्रचलित दर को परिशोधित करके एफपीओ द्वारा प्रबंधित नारियल आधारित उद्यमों को नाममात्र शुल्क पर नारियल अनुसंधान संस्थानों से प्रौद्योगिकी समर्थन उपलब्ध कराना।
- नारियल अनुसंधान/विकास एजेंसियों के अधीन फार्मों से नारियल पौधों की आपूर्ति हेतु नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठनों को प्राथमिकता देना।
- नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठनों के कन्सोर्शियम का गठन और नारियल किसान उत्पादक संगठनों द्वारा उत्पादित और बाज़ार में लाए गए मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों के लिए सामान्य ब्रांडिंग सुगम बनाना।
- नारियल किसान उत्पादक संगठनों के लिए पर्याप्त कार्यशील पूंजी उत्पन्न करने हेतु सरकारी समर्थन से समग्र निधि जुटाया जाय।
- नारियल उत्पादक समितियों/नारियल उत्पादक फेडरेशनों के ज़रिए नारियल उत्पादकों से नारियल की खरीद सुगम बनाया जाय और फलों का प्राथमिक प्रसंस्करण सुगम बनाने हेतु खोपरे के एकत्रीकरण के लिए नोडल एजेंसियों का गठन और सुरक्षित भंडारण/भंडागारण के लिए केंद्रीय सुविधा बनायी जाए।
- यह सुनिश्चित किया जाय कि मात्र केरल से खरीदे गए फलों से बनाए गए खोपरे का उपयोग करके उत्पादित नारियल तेल को ही केरल राज्य सरकार के अधीन सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों द्वारा बिक्री हेतु खरीदा जाता है।

केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान और भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों के अलावा श्री प्रदीपकुमार, अध्यक्ष, कोषिक्कोट नारियल उत्पादक कंपनी ,

श्री गोपालन पणिक्केरकंडी, अध्यक्ष, कोयिलांडी सीपीसी, श्री ई.एस.जेइम्स, अध्यक्ष, पेराम्ब्रा सीपीसी, श्री श्रीधरन पालयत्त, अध्यक्ष, पषश्शी सीपीसी और श्री अब्दुल रहिमान, अध्यक्ष, तामरश्शेरी सीपीसी सहित कोषि़क्कोट जिले के नारियल किसान उत्पादक संगठनों के प्रतिनिधियों ने संवाद कार्यक्रम में भाग लिया।

डा.लिजो थोमस, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोषि़क्कोट ने संवाद कार्यक्रम के दौरान संपन्न परिचर्चा और नारियल की समृद्धि के लिए प्रौद्योगिकियों के प्रभावी उपयोग हेतु किसान उत्पादक संगठनों को सक्षम बनाने के लिए विकसित सुझावों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। डा.लिजो थोमस ने सभा का धन्यवाद भी ज्ञापित किया।

(रिपोर्ट: डा.तम्पान सी., डा.षमीना बीगम, डा.पी.सुब्रमणियन, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ और डा.लिजो थोमस, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोषि़क्कोट)

नारियल विकास बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह -2021 का अनुपालन किया गया

श्री राजीव भूषण प्रसाद, प्रभारी मुख्य नारियल विकास अधिकारी सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2021 में सत्यनिष्ठा शपथ दिलाते हुए। श्री आर.मधु, सचिव और श्रीमती दीप्ति नायर एस., उप निदेशक(विपणन) भी चित्र में दर्शित हैं

नारियल विकास बोर्ड ने केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार 'स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता' विषय पर 26 अक्तूबर से 1 नवंबर 2021 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2021 का अनुपालन किया। बोर्ड के मुख्यालय के साथ साथ क्षेत्रीय कार्यालय, राज्य केंद्र और प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्मों सहित सभी इकाई कार्यालयों में भ्रष्टाचार के खिलाफ शून्य सहिष्णुता (जीरो टॉलेरेंस) की नीति को बढ़ावा देने हेतु सतर्कता जागरूकता सप्ताह का अनुपालन किया गया।

बोर्ड के पदाधिकारी शपथ लेते हुए

श्री राजीव भूषण प्रसाद, प्रभारी मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड द्वारा दिलायी सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा के साथ 26 अक्तूबर 2021 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह का शुभारंभ हुआ। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अनुपालन के सिलसिले में अधिकारियों और अन्य हितधारकों एवं आगंतुकों के बीच जागरूकता पैदा करने हेतु कार्यालय में पोस्टर तथा बैनर प्रदर्शित किए गए। केंद्रीय सतर्कता आयोग के निदेशानुसार आंतरिक प्रक्रियाओं में सुधार लाने और सार्वजनिक सेवाओं का निष्पादन बेहतर बनाने हेतु व्यवस्थित सुधार करने के लिए गतिविधियाँ शुरू की गईं। बैठक के दौरान जीवन के सारे पहलुओं पर सत्यनिष्ठा बनाए रखने की अहमियत तथा देश की प्रगति में इसकी प्रासंगिकता पर बल दिया गया।

समापन समारोह 1 नवंबर 2021 को आयोजित किया गया। 10 नवंबर 2021 को प्रत्यक्ष और ऑनलाइन दोनों रूप से आयोजित सत्र में श्री अरिन चंद्र बोस, सेवानिवृत्त उप पुलिस अधीक्षक, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने 'सतर्कता की भूमिका एवं निवारणात्मक सतर्कता के तहत विविध गतिविधियाँ' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने देश में भ्रष्टाचार से लड़ने में विभिन्न एजेंसियों की भूमिका पर भाषण दिया।

श्री अरिन चंद्र बोस, सेवानिवृत्त उप पुलिस अधीक्षक, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो 'सतर्कता की भूमिका एवं निवारणात्मक सतर्कता के तहत गतिविधियाँ' विषय पर सभा को संबोधित करते हुए

कृषि-जैव विविधता का संरक्षण और उपयोगः 'बेडकम नारियल' को बढ़ावा देने हेतु परियोजना

केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक टीम बेदडका ग्राम पंचायत के नारियल बाग में

कृषि क्षेत्र के टिकाऊ विकास के लिए कृषि-जैव विविधता का संरक्षण और उपयोगीकरण अनिवार्य है। गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों की मांग को पूरा करने हेतु किसानों के बाग में उपलब्ध उत्कृष्ट नारियल आनुवंशिक संसाधनों का उपयोग करके नारियल के पौधों का उत्पादन बढ़ाना महत्वपूर्ण ह्स्वकालिक रणनीति है। किसानों के बागों में उपलब्ध स्थानीय रूप से अनुकूलित नारियल किस्मों के मातृ ताड़ों का उपयोग करके नारियल पौधे उत्पादित करने हेतु एफपीओ द्वारा विकेंद्रीकृत नर्सरियों की स्थापना एवं इनका प्रबंधन किया जा सकता है और नारियल किसानों की सक्रिय भागीदारी से स्थानीय स्तर पर पौध उपलब्ध कराया जा सकता है।

'बेडकम नारियल' जो कि नारियल का एक उत्कृष्ट पारिस्थितिक प्ररूप है, का संरक्षण करने और इसे लोकप्रिय बनाने हेतु एक नूतन परियोजना भारतीय कृषि अनुसंधान

'बेडकम नारियल' को बढ़ावा देने हेतु आयोजित बैठक की झाँकियाँ

परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ के तकनीकी समर्थन के साथ स्थानीय स्वशासनों द्वारा विकेंद्रीकृत योजना के भागस्वरूप शुरू की गई है। 'बेडकम नारियल' नारियल की एक स्थानीय पारिस्थितिक प्ररूप है जो लंबी किस्म का है तथा बारानी परिस्थितियों एवं पानी की कमी वाले क्षेत्रों में भी संतोषजनक रूप से पैदावार देता है। कासरगोड़ जिले के विविध भागों के किसान जिले के बेदडका ग्राम पंचायत के चुनिंदे नारियल बागों से इस किस्म के बीजफलों को एकत्र कर रहे हैं। कृषि आदान सामग्रियों के कम उपयोग की परिस्थिति में भी यह अपेक्षाकृत अच्छी उपज देती है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ के वैज्ञानिक टीम के साथ डा.के.षंसुद्दीन इस स्थानीय नारियल पारिस्थितिक प्ररूप की विशेषताओं एवं कार्य क्षमता पर जानकारी एकत्र कर रहे हैं। गैर गहन कृषि के लिए अनुकूलित यह पारिस्थितिक प्ररूप कृषि पारिस्थितिकी के तहत खेती के लिए और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों को कम करने के लिए भी उपयुक्त है।

केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ के वैज्ञानिकों के सुझावों के आधार पर बेदडका ग्रामपंचायत ने वर्ष 2021-22 के लिए विकेंद्रीकृत योजना कार्यक्रम के अधीन कृषि जैव विविधता के संरक्षण एवं उपयोग के व्यापक लक्ष्य के सिलसिले में स्थानीय नारियल पारिस्थितिक प्ररूप 'बेडकम नारियल' को बढ़ावा देने हेतु एक योजना रूपायित की है। यह कासरगोड़ जिला पंचायत, करडका ब्लॉक पंचायत तथा बेदडका ग्राम पंचायत को शामिल करते हुए बराबर बजट समर्थन सहित संयुक्त परियोजना के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कृषि अधिकारी, बेदडका कृषि भवन परियोजना का कार्यान्वयन अधिकारी है।

योजना के प्रमुख संघटकों में 'बेडकम नारियल' की खेती करने वाले किसानों की समिति का गठन सुगम बनाना, पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण के तहत किसान किस्म के रूप में 'बेडकम नारियल' का पंजीकरण सुसाध्य बनाना, किसानों के बागों में 'बेडकम नारियल' के मातृवृक्षों की पहचान एवं प्रलेखन, बीजफलों का एकत्रीकरण तथा ग्राम पंचायत के चुनिंदे स्थानों में नर्सरी की स्थापना और किसानों को वितरित करने हेतु इस किस्म के गुणवत्तापूर्ण पौधों को उपलब्ध कराना शामिल है। शुरुआत में 10000 बीजफलों को एकत्रित करने का प्रस्ताव है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा किसान उत्पादक संगठन एवं कार्षिका कर्म सेना (बेदडका कृषि भवन के तहत कार्यरत कुशल मज़दूर समूह) के चुनिंदे सदस्यों के लिए क्षमता विकास कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

'बेडकम नारियल' को बढ़ावा देने हेतु किसान समिति के गठन के भाग स्वरूप बेदडका में 17 नवंबर 2021 को एक बैठक आयोजित की गयी। डा.रवि भट्ट, अध्यक्ष, फसल उत्पादन प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय

रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने बैठक का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में डा.रवि भट्ट ने नारियल क्षेत्र के टिकाऊ विकास के लिए किसानों के बागों में उपलब्ध नारियल के उत्कृष्ट आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण एवं उपयोग की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

डा.तम्पान सी., प्रधान वैज्ञानिक, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ ने 'बेडकम नारियल' को बढ़ावा देने हेतु परियोजना के तहत परिकल्पित गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत की और नर्सरियों के प्रबंधन के लिए मज़दूर समूह एवं एफपीओ प्रतिनिधियों को लाभान्वित बनाने हेतु आयोजित किए जाने वाले क्षमता विकास कार्यक्रम पर बात की।

एड्वोकेट सी. रामचंद्रन, सदस्य, जिला योजना समिति ने सभा को संबोधित करते हुए योजना के कार्यान्वयन के लिए स्थानीय स्वशासन की भूमिका तथा किसान समिति द्वारा की जानेवाली गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

श्री माधवन, उपाध्यक्ष, बेदडका ग्राम पंचायत ने बैठक की अध्यक्षता की। श्री एन.एम.प्रवीण, कृषि अधिकारी, कृषि भवन, बेदडका, श्री के.मुरलीधरन, अध्यक्ष, किसान समिति और श्री के.बालकृष्णन, सचिव, किसान समिति ने भी इस अवसर पर बात की। बैठक के भाग स्वरूप 'बेडकम नारियल' पारिस्थितिक प्ररूप की खेती करनेवाले किसानों के चुनिंदे नारियल बागों में प्रक्षेत्र दौरा भी आयोजित किया गया। श्रीमती लता गोपी, अध्यक्षा, विकास स्थायी समिति ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

(डा.सी.तम्पान और डा.के.षंसुद्दीन, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट)

मेषुक्काट्टिल के नारियल तेल को भारत का सर्वप्रथम बीआईएस टैग प्राप्त हुआ - आईएस 542 : 2018 प्रमाणीकरण

आलुवा स्थित मेषुक्काट्टिल मिल को अपने नारियल तेल के लिए खाना पकाने के तेल विभाग में आईएस 542 :2018 के अनुसार भारत का सर्वप्रथम बीआईएस प्रमाणीकरण प्राप्त हुआ जो महत्वपूर्ण रासायनिक अपेक्षाओं के विनिर्देशों से नारियल तेल की शुद्धता के स्तर की पहचान करता है और तेल में मिलावट और कीटनाशी अपशिष्टों को रोकने के लिए सख्त उपाय प्रदान करता है।

बीआईएस उपभोक्ता सुरक्षा के लिए कटिबद्ध है और निर्माताओं को प्रमाणीकरण के दायरे में लाने के लिए सारे उपाय अपनाता है। कई नारियल तेल उत्पादक कंपनियाँ एफएसएसएआई प्रमाणीकरण का अनुसरण कर रही हैं जो खाद्य तेलों में मिलावट को रोकने के लिए अपर्याप्त बताया गया है।

बीआईएस प्रमाणीकरण प्राप्त करने के बाद शुरुआत में कंपनी केरल में अपने ब्रांड एमएम ओरिजिनल के साथ बाज़ार प्रवेश की योजना बना रही है। केरल में नारियल तेल का बाज़ार प्रति महीने 20,000 टन प्राक्कलित किया गया है और गुणवत्ता के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं के लिए कंपनी 120 टन की बिक्री लक्षित करती है।

मेषुक्काट्टिल मिल के प्रतिनिधि बीआईएस प्रमाणीकरण प्राप्त करते हुए

केरल में 600 से अधिक नारियल तेल निर्माण इकाइयाँ हैं और राज्य खाद्य नारियल तेल के सबसे बड़े उपभोक्ताओं में एक भी है। लेकिन उत्पाद की गुणवत्ता राज्य में एक चिंताजनक मामला रही है।

इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर 2021

सुश्री शोभा करंदलाजे, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार आईआईटीएफ 2021 में बोर्ड के स्टाल में

डा.वाई.आर.मीणा, अपर आयुक्त, विस्तार बोर्ड के स्टाल में

नारियल विकास बोर्ड, बाज़ार विकास सह सूचना केंद्र, दिल्ली ने 'आत्मनिर्भर भारत' विषय पर 14 से 27 नवंबर 2021 तक प्रगति मैदान, नई दिल्ली में संपन्न 40 वें इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर 2021 में भाग लिया। बोर्ड ने स्टाल में अपनी योजनाओं और नारियल के गुणों पर विभिन्न सूचनात्मक पोस्टर, बोर्ड के प्रकाशन, मूल्यवर्धित नारियल उत्पादें तथा नारियल आधारित हस्तशिल्प प्रदर्शित किए।

कृषि मेला

श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ बोर्ड के स्टाल में

नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव ने जगदलपुर, बस्तर में 24 नवंबर 2021 को संपन्न कृषि मेले में भाग लिया। बोर्ड ने विभिन्न मूल्य वर्धित नारियल उत्पादें, प्रकाशन तथा सूचनापरक पोस्टर प्रदर्शित किए।

श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और बोर्ड के स्टाल का दौरा किया तथा बोर्ड के पदधारियों के साथ बातचीत की। नाविबो के स्टाल में श्री ईश्वर चंद्र, फार्म प्रबंधक ने मंत्री जी का स्वागत किया।

स्वास्थ्य, सौंदर्य एवं खुशहाली 2021

नारियल विकास बोर्ड, कोची ने 21 से 23 अक्तूबर 2021 तक कोची में संपन्न वर्चुअल एक्स्पो स्वास्थ्य, सौंदर्य एवं खुशहाली 2021 में भाग लिया। एक्स्पो में सर्वश्री तेजस्विनी सीपीसी, सर्वश्री नेटा नूट्रिको, सर्वश्री अन्वी कोकनट प्रोडक्ट्स और सर्वश्री सूर्यशोभा इंडस्ट्रीस ने नाविबो के साथ अपने उत्पादों को वर्चुअल तरीके से प्रदर्शित किया।

वर्चुअल एक्स्पो का दृश्य

उन्नत नारियल खेती पर क्षेत्रीय जागरूकता अभियान

नारियल विकास बोर्ड, कोची द्वारा प्रायोजित उन्नत नारियल खेती पर प्रथम क्षेत्रीय जागरूकता अभियान केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ के तकीनीकी मार्गदर्शन से कृषि विज्ञान केंद्र-लक्षद्वीप, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और तणल-चारिटबिल संगठन द्वारा 6 सितंबर 2021 को कवरत्ती के तणल कैंपस में आयोजित किया गया। कवरत्ती द्वीप के 50 किसानों ने अभियान में भाग लिया।

श्री टी.अब्दुल खादर, अध्यक्ष, लक्षद्वीप पंचायत ने अभियान का उद्‌घाटन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य द्वीपसमूह में नारियल के उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने हेतु नारियल खेती में उभरती प्रौद्योगिकियों की अहमियत को उजागर करना था। पंचायत के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया और इस अवसर पर भाषण दिया। बैठक में कवरत्ती के पुराने नारियल ताड़ारोहकों एवं सर्वोत्तम किसानों को सम्मानित किया गया।

नारियल ताड़ारोहक कल्याण समिति, जो कि लक्षद्वीप में इसप्रकार की पहली समिति है, के औपचारिक पंजीकरण के बाद इसे तणल और कृषि विज्ञान केंद्र-लक्षद्वीप द्वारा आयोजित जागरूकता अभियान के लिए एकत्रित समूह के सामने पेश किया गया। श्री टी.अब्दुल खादर ने बताया कि नारियल ताड़ारोहण मशीन द्वीप के प्रमुख नवाचारों में से एक है जिसे बढ़ावा दिया जाना है। श्री मौलाना, अध्यक्ष, तणल ने इस अवसर पर लक्षद्वीप में नारियल की खेती की अहमियत और

सभा का दृश्य

कृषि एवं संबंधित क्षेत्रों से द्वीप के युवकों की रुचि घटने के बारे में बताया। उन्होंने सूचित किया कि तणल इस परिस्थिति में बदलाव लाने हेतु युवकों को कृषि की ओर आकर्षित करने तथा उनकी रुचि बनाए रखने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र के साथ काम करेगा। कृषि विज्ञान केंद्र-लक्षद्वीप और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने नारियल विकास बोर्ड के वित्तीय समर्थन के साथ इस कार्यक्रम के आयोजन की पहल की थी।

डा.पी.एन.अनंत, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष ने नवीनतम प्रौद्योगिकियों, जैविक उर्वरकों का प्रयोग, आधुनिक सिंचाई प्रणालियों का उपयोग और नारियल पेड़ों में सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो के जैविक उत्पादों के उपयोग पर बात की। डा. अब्दुल गफूर, एसएमएस, कृषि विज्ञान केंद्र ने कार्यक्रम का समन्वयन किया। अन्य द्वीपों में भी इस प्रकार के जागरूकता अभियान आयोजित किए जाएंगे।

नारियल आधारित सुविधाजनक आहार पर प्रशिक्षण

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी, असम ने नारियल आधारित सुविधाजनक आहार पर 6 से 9 दिसंबर 2021 तक नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। कामरूप, असम से 10 सहभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। डा.ज्योत्स्ना बरुआ, सेवानिवृत्त प्रोफसर, विस्तार शिक्षा निदेशालय, गुवाहटी और डा.संजिब दत्त, सेवानिवृत्त एसएडीओ, कृषि विभाग, असम ने स्रोत वक्ता के रूप में कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का दृश्य

नाविबो के इकाई कार्यालयों द्वारा एफओसीटी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

तिरुप्पूर

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-तमिलनाडु के तेंकाशी और तिरुप्पूर जिले के कृषि विज्ञान केंद्रों के सहयोग से 25 से 30 अक्तूबर 2021 तक फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री (एफओसीटी) कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

नलबारी

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने कृषि विज्ञान केंद्र, नलबारी के सहयोग से कृषि विज्ञान केंद्र परिसर, नलबारी, असम में 25 से 30 अक्तूबर 2021 तक फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री (एफओसीटी) कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। 20 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

भाट्ये

नाविबो, राज्य केंद्र, ठाणे ने क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केंद्र, भाट्ये, महाराष्ट्र में 25 से 30 अक्तूबर 2021 तक फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री (एफओसीटी) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

लक्षद्वीप

कृषि विज्ञान केंद्र, लक्षद्वीप, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कवरत्ति ने 22 से 27 नवंबर 2021 तक फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री (एफओसीटी) कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। श्री अब्दुल कादर, अध्यक्ष, लक्षद्वीप ग्राम द्वीप पंचायत ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डा.पी.एन.अनंत, वरिष्ठ वैज्ञानिक और अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र-लक्षद्वीप, डा.मोहम्मद कोया, वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और श्री शरीफ, जिला कृषि अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

तिरुवनंतपुरम

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम ने कृषि विज्ञान केंद्र, वेल्लनाड, तिरुवनंतपुरम के सहयोग से 6 से 11 दिसंबर 2021 तक फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री (एफओसीटी) कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

सिंहेश्वर

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने प्रबीउ फार्म, सिंहेश्वर, मधेपुरा में 13 से 18 दिसंबर 2021 तक फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

मंगलदोई

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, असम ने जिला कृषि कार्यालय, दरंग के सहयोग से 20 से 25 दिसंबर 2021 तक हरिमुरिया, मंगलदोई, असम में फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

24वाँ प्लैक्रोसिम संपन्न

डा.आर.चंद्र बाबु, माननीय कुलपति, केरल कृषि विश्वविद्यालय 24वें प्लैक्रोसिम बैठक का उद्‌घाटन करते हुए

24वाँ रोपण फसल सिम्पोसियम 'महामारी से जूझते हुए आगे: रोपण फसल क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार' विषय पर कोची में 14 से 16 दिसंबर 2021 तक संपन्न हुआ। प्रस्तुत कार्यक्रम भारत की आज़ादी के 75वें वर्षगाँठ के स्मरणोत्सव के रूप में आज़ादी का अमृत महोत्सव के सिलसिले में आयोजित किया गया।

डा.आर.चंद्र बाबु, माननीय कुलपति, केरल कृषि विश्वविद्यालय ने कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया। श्री ए.जी.तंकप्पन, अध्यक्ष, स्पाइसेस बोर्ड, भारत; श्री ए.पी.एम. मोहम्मद हनीष भा.प्र.से., प्रधान सचिव, उद्योग, वाणिज्य और रोपण विभाग, केरल सरकार; श्री के.एस.श्रीनिवास भा.प्र.से., अध्यक्ष, एमपीईडीए, कोची; डा.के.एन.राघवन भा.रा.से., कार्यपालक निदेशक, रबड़ बोर्ड; श्री डी.सत्यन भा.व.से., सचिव, स्पाइसेस बोर्ड; श्री एस.एस.वी.स्वामी भा.प्र.से., विकास आयुक्त, कोचिन विशेष आर्थिक क्षेत्र, कोची; डा.पूनम पांडे, सलाहकार-ग्लोबल प्रोजक्ट ऑन प्राइवेट बिसिनेस, एक्शन फॉर बयोडाइवेर्सिटी, जीआईज़ेड, जर्मनी और अन्य प्रतिनिधिगण ने इस अवसर पर सभा को संबोधित किया। प्रतिनिधिगण ने रोपण फसल क्षेत्र के विविध अवसरों, समस्याओं और अन्य संभावनाओं पर बात की और सहभागियों से अनुरोध किया कि वैज्ञानिक आशयों और रोपण क्षेत्र के समग्र विकास एवं किसानों की समृद्धि के लिए समस्याओं का समाधान करने और रणनीतियों का विकास करने में नई उभरती प्रगतिशील

प्रौद्योगिकियों के आदान-प्रदान हेतु इस मंच का प्रभावी उपयोग करें।

रोपण और मसाला फसलों पर संपन्न तकनीकी सत्र में विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों और शिक्षक हस्तियों द्वारा जलवायु परिवर्तन, आनुवंशिकी और जीनोमिक्स, टिकाऊ उत्पादन प्रणाली, पौधा स्वास्थ्य प्रबंधन, मूल्यवर्धन, यांत्रिकीकरण, कटाई उपरांत प्रौद्योगिकी, प्रौद्योगिकी अंतरण, व्यापार और नीति निर्माण को शामिल करते हुए आलेख, मौखिक प्रस्तुति और पोस्टर प्रस्तुति की गईं। सिम्पोसियम में विविध अनुसंधान संस्थाओं से वैज्ञानिकों, अकादमी संस्थाओं से पेशेवर शिक्षकों, राज्य और केंद्रीय सरकारी संगठनों तथा निजी क्षेत्र के अधिकारीगण, उद्यमीगण और देशभर के किसानों ने भाग लिया।

नारियल विकास बोर्ड इस कार्यक्रम के सह आयोजक थे। सिम्पोसियम में श्री प्रमोद पी.कुरियन, सहायक निदेशक और श्री कुमारवेल एस., विकास अधिकारी ने बोर्ड का प्रतिनिधित्व किया। 14 दिसंबर 2021 को संपन्न विशेष सत्र में श्री प्रमोद पी.कुरियन, सहायक निदेशक, नाविबो ने बोर्ड द्वारा चलाई जा रही अनुसंधान नवाचार गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया और जड़मुर्झा रोग प्रकोपित नारियल बागों के लिए प्रभावी प्रबंधन विधियाँ, केरल से सटे हुए तमिलनाडु के जिलों में, विशेषतया कोयंबत्तूर और तिरुप्पुर जिलों में जड़मुर्झा रोग का फैलाव नियंत्रित करने हेतु उपाय, रोपण सामग्रियों के उत्पादन हेतु बड़े पैमाने पर प्रवर्धन तकनीकों का मानकीकरण, सफेद मक्खी के लिए किसान अनुकूल कम लागत/लागत प्रभावी प्रबंधन उपाय, उत्पादन लागत कम करना आदि जैसे कतिपय विषयों को सामने रखा जिन पर नारियल क्षेत्र के अनुसंधान और विकास समर्थन को ध्यान केंद्रित करना आवश्यक होता है।

सिम्पोसियम के सिलसिले में आयोजित प्रदर्शनी पवलियन में बोर्ड ने विविध मूल्यवर्धित उत्पादें और प्रकाशन प्रदर्शित किए। आगंतुकों को इन उत्पादों के बारे में और बोर्ड की गतिविधियों के बारे में जानकारी भी प्रदान की गई।

स्पाइसेस बोर्ड, भारत और भारतीय रोपण फसल समिति ने सिम्पोसियम की मेज़बानी की। नारियल विकास बोर्ड, कॉफी बोर्ड, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, भा.कृ.अनु.प.-काजू अनुसंधान निदेशालय, भा.कृ.अनु.प.-भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान, भा.कृ.अनु.सं.-भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, रबड़ बोर्ड, टोकलाई चाय अनुसंधान संस्थान, यूनाइटेड प्लैंटेर्स एसोसिएशन ऑफ सथेर्न इंडिया और सोसाइटी फॉर प्रोमोशन ऑफ ऑयल पाम रिसेर्च एंड डेवलपमेंट ने कार्यक्रम सह-आयोजित किया।

किसान प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम

आलप्पुष़ा जिले के फेडरेशनों के नारियल किसानों के लिए 23 नवंबर 2021 को किसान प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के सिलसिले में दो संभावी किसानों के नारियल आधारित बागों में प्रक्षेत्र दौरा भी आयोजित किया गया। सहभागी किसानों को नारियल पेड़ों के बीच की जगह में मछलीपालन और पुष्पकृषि सहित सब्जियों और फल पौधों के साथ फल पौधे आधारित मिश्रित खेती प्रणाली के बारे में आँखोंदेखी जानकारी प्राप्त हुई। सहभागियों ने श्री कोच्चुमोन, किसान द्वारा विविध प्रकार के फल पौधों की खेती करने के लिए अपनाए गए वैज्ञानिक तरीके तथा एड्वोकेट टी.एम.मात्तुन्नी, किसान द्वारा अनुरक्षित सजावटी पौधों की व्यापक श्रेणी की तारीफ की। डा.अब्दुल हारिस, प्रधान वैज्ञानिक, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम ने तकनीकी सत्र संभाला जिसमें उन्होंने सहभागियों को एकीकृत पोषण प्रबंधन, एकीकृत कीट प्रबंधन और एकीकृत रोग प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करते हुए नारियल खेती पर संक्षिप्त विवरण दिया।

किसान प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम के सहभागी

राष्ट्रीय राजभाषा वेबिनार

नारियल विकास बोर्ड में 14 दिसंबर 2021 को राजभाषा और सूचना प्रौद्योगिकी विषय पर राष्ट्रीय राजभाषा वेबिनार आयोजित किया गया। अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित इस वेबिनार में बोर्ड के मुख्यालय एवं इकाई कार्यालयों के सभी पदधारियों ने भाग लिया। डा.एस.एन.महेश, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र, डीआरडीओ, बेंगलूरु ने स्रोत वक्ता के रूप में वेबिनार का संचालन किया। उन्होंने कंप्यूटर में हिंदी में कार्य आसान बना देने वाली अद्यतन प्रौद्योगिकियों पर प्रकाश डाला और इनके प्रयोग की विधि पर प्रस्तुति दी। उन्होंने हिंदी में काम करने के विविध सोफ्टवेयर, कंप्यूटर में इनके विस्थापन की विधि, हिंदी में प्रयुक्त विविध फोंट, वॉइस टाइपिंग, टेक्स्ट टु वॉइस आदि विविध अनुप्रयोगों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने वेबिनार के सहभागियों द्वारा उठाए गए सवालों का भी जवाब दिया। श्रीमती एस.बीना, सहायक निदेशक(रा.भा.) ने सभा का स्वागत किया और श्रीमती संगीता टी.एस., वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय राजभाषा वेबिनार की झलक

ब्लोक स्तरीय संगोष्ठी

रत्नागिरी

नाविबो, राज्य केंद्र, ठाणे ने कृषि विज्ञान केंद्र, लांजा, रत्नागिरी के सहयोग से 27 अक्तूबर 2021 को कृषि विज्ञान केंद्र, लांजा, रत्नागिरी में ब्लॉक स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की। डा.अमेय देबनाथ, उप निदेशक, नाविबो ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डा.संदीप एस.पाटील, एसएमएस, विस्तार, प्रो.सुधेशकुमार एस. चव्हाण, एसएमएस, पौधा संरक्षण, प्रो.महेश महाले, एसएमएस, कृषि विज्ञान इस कार्यक्रम में उपस्थित थे और बोर्ड की योजनाओं, वैज्ञानिक नारियल खेती तथा एकीकृत पोषण प्रबंधन तकनीक, नारियल बागों में अंतर फसलें और नारियल के कीट व रोग प्रबंधन पर भाषण दिया। संगोष्ठी में 50 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

किलतान

नारियल विकास बोर्ड, कोची ने कृषि विज्ञान केंद्र-लक्षद्वीप, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के ज़रिए तणल कैंपस, किलतान में 28 नवंबर 2021 को किलतान, लक्षद्वीप में नारियल खेती में प्रगति विषय पर क्षेत्रीय जागरूकता अभियान आयोजित किया। श्री कुंजी कोया, ब्लोक विकास अधिकारी, किलतान ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री अब्दुल हमीद, अध्यक्ष, तणल चैरिटबल संगठन, डा.पी.एन.अनंत, वरिष्ठ वैज्ञानिक और अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र इस अवसर पर मौजूद रहे और द्वीप में नारियल का उत्पादन बढ़ाने हेतु जैविक आदान सामग्रियों पर बात की।

मोरीगाँव

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी, असम ने जिला कृषि कार्यालय, मोरीगाँव के सहयोग से 7 दिसंबर 2021 को रिसोर्स सेंटर फोर सस्टेनबल डेवलपमेंट कैंपस, सानुबारी, मोरीगाँव जिला, असम में ब्लोक स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की।

तूत्तुकुटी

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने कृषि विज्ञान केंद्र, भा.कृ.अनु.प.-एससीएडी, वागैकुलम, तूत्तुकुटी, तमिलनाडु में 9 दिसंबर 2021 को ब्लोक स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की।

होजाई

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी, असम ने जिला कृषि कार्यालय, होजाई के सहयोग से 10 दिसंबर 2021 को होजाई जिला, असम में ब्लोक स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की।

बोर्ड में स्वच्छता पखवाड़ा का अनुपालन किया गया

स्वच्छता पखवाड़ा अभियान की झलक

नारियल विकास बोर्ड में 16 से 31 दिसंबर 2021 तक स्वच्छता पखवाड़ा अभियान का अनुपालन किया गया। बोर्ड ने कोविड-19 महामारी की परिस्थिति में गृह मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी दिशानिर्देशों के अंतर्गत स्वच्छता पखवाड़ा अभियान का लक्ष्य हासिल करने हेतु कार्रवाई प्रारंभ की। बोर्ड के मुख्यालय के अलावा क्षेत्रीय कार्यालयों, राज्य केंद्रों और प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्मों सहित सारे इकाई कार्यालयों में भी स्वच्छता पखवाड़ा का अनुपालन किया गया। इस सिलसिले में 22 दिसंबर 2021 को कार्यालय परिसर में अधिकारियों और कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता के साथ सफाई गतिविधियाँ चलाई गईं।

हस्तशिल्प प्रशिक्षण आयोजित

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने बालम गढ़िया गाँव, मधेपुरा में 15 प्रशिक्षणार्थियों के लिए 14 से 19 दिसंबर 2021 तक छह दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया। श्रीमती मीरा देवी कार्यक्रम की मास्टर हस्तशिल्प प्रशिक्षक रही। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को नारियल की खोपड़ी और लकड़ी से विविध हस्तशिल्प निर्मित करने पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के सहभागी निर्मित हस्तशिल्पों के साथ

क्षेत्र स्तरीय संगोष्ठी

सभा का दृश्य

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, कोलकाता ने 22 दिसंबर 2021 को पश्चिम बंगाल में नोर्थ 24 परगना जिले के कृषि विज्ञान केंद्र में क्षेत्र स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की। राज्य विभाग और कृषि विज्ञान केंद्र के विषय विशेषज्ञों ने वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकियों और नारियल के मूल्य वर्धन पर सहभागियों को संक्षिप्त विवरण दिया।

अक्षया के हाथों पत्तों से बनती है नई चित्रकारी; रिकार्ड बुक में प्रवेश

सुश्री अक्षया को इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स में शामिल किया गया है जिसने कटहल के पत्तों पर भारत के सभी प्रधान मंत्रियों के नाम तराशे थे। वह केरल के आलप्पुषा जिले में पटनिलम के निवासी श्री चंद्रन और श्रीमती शोभना की सुपुत्री है। अक्षया ने एक ही दिन में कटहल के 15 पत्तों पर जवाहर लाल नेहरू से लेकर नरेंद्र मोदी तक के 15 प्रधान मंत्रियों के नाम तराशकर रिकार्ड बनाया। उन्होंने पदक और प्रमाणपत्र हासिल किए। 22 वर्ष आयु की अक्षया बहुत कम उम्र में ही चित्रकला के शौकीन थी और बाद में लॉकडाउन के दौरान लीफ आर्ट की ओर मुड़ गई।

पहले उसने कटहल के पत्तों पर मोहनलाल, मम्मूट्टी, विजय, फहद फासिल, सूर्या और लेना आदि फिल्मी अभिनेताओं के चेहरे तराशे थे। तदुपरांत नारियल के पत्तों पर नक्काशी करना शुरू किया। नारियल के पत्ते पर सबसे पहले निविन पॉली का चेहरा तराशा गया और उसके बाद कमल हासन, विजय, उण्णी मुकुन्दन, असिफ अली, पृथ्वीराज तथा अन्य कई फिल्मी सितारों के चेहरे तराशे गए।

अक्षया ने कहा कि वह नारियल के पत्तों पर चित्र तराशने वाली केरल की पहली लड़की हो सकती है। वह अपने इंस्टाग्राम द्वारा भी तस्वीरें शेयर करती है। अक्षया ने कहा कि नारियल के पत्ते पर कमल हासन की जो तस्वीर तराशी गयी थी, उनकी बेटी श्रुति हासन ने इंस्टाग्राम स्टोरी द्वारा उसे शेयर की थी। कोषिक्कोट के नेशनल अस्पताल में लैब तकनीशियन के रूप में कार्यरत अक्षया खाली समय कला में व्यस्त रहती है। उसे अपने माता-पिता और बहन अनुलया से भी समर्थन मिलता है। उसका अगला लक्ष्य एशिया बुक ऑफ रिकार्ड्स है।

बाज़ार समीक्षा

सितंबर 2021

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव सितंबर 2021 के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 17400 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 17900 रुपए पर खुला।

कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 17000 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 17700 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 14800 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 267 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 14533 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 10750 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 10650 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 10800 रुपए पर खुला।

कोची बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 450 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 10300 रुपए पर और आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 400 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 10250 रुपए पर और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 150 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 10650 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 10100 रुपए पर खुला और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 9900 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 19000 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 100 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 18900 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 16000 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 16500 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 15750 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 500 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 15250 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए पर खुला और महीने के आखिर में उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति मेट्रिक टन 28500 रुपए पर खुला और महीने के आखिर में उसी भाव पर बंद हुआ। कर्नाटक के बेंगलूर बाज़ार में

नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 22500 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर बना रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

अक्तूबर 2021

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव अक्तूबर 2021 के दौरान कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 17000 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 17700 रुपए पर खुला। कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में भाव प्रति क्विंटल 100 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 400 रुपए की शुद्ध हानि के साथ बंद हुआ।

कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 16900 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 17300 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 14467 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 14267 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 10300 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 10250 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 10600 रुपए पर खुला।

कोची बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 100 रुपए और आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 50 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 10200 रुपए पर और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 150 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 10450 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9900 रुपए पर खुला और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 9700 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोष़िक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 18900 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 100 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 18800 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 16300 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 16700 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोष़िक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 15250 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 300 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 15550 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए पर खुला और महीने के आखिर में उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 28500 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति टन 29000 रुपए पर बंद हुआ।

कर्नाटक के बेंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 22500 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर बना रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

इंडोनेशिया और श्रीलंका में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव में बढ़ाव का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/

देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और श्रीलंका में खोपरे के भाव में बढ़ाव का रुख रहा और भारत में घटाव का रुख दर्शित हुआ। फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नवंबर 2021

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव नवंबर 2021 के दौरान कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 16900 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 17300 रुपए पर खुला।

कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में भाव प्रति क्विंटल 100 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 200 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ बंद हुआ।

कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 17000 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 17500 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 14267 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 466 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 14733 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 10200 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 10450 रुपए पर खुला।

कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 50 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल 10250 रुपए पर और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 300 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल 10750 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9700 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 9900 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोष़िक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 19000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 16300 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 900 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 17200 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 15550 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 15350 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए पर खुला और महीने के आखिर में उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 29000 रुपए पर खुला और प्रति टन 1000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति टन 30000 रुपए पर बंद हुआ।

कर्नाटक के बेंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 22500 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 2500 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति हज़ार फल 20000 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के पहले तीन सप्ताहों के दौरान मेंगलूर बाज़ार से नारियल का भाव रिपोर्ट नहीं किया गया। महीने के आखिरी सप्ताह के दौरान मेंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 32000 रुपए रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत में महीने के दौरान खोपरे के भाव में बढ़ोत्तरी का रुख रहा और फिलीपीन्स में घटाव का रुख रहा।

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

भारतीय नारियल पत्रिका की एजेंसी संबंधी शर्तें

1. भारतीय नारियल पत्रिका का वार्षिक शुल्क 40 रुपए और आजीवन शुल्क 1000 रुपए है।
2. एजेंसी के लिए ऐसे व्यक्ति हकदार होंगे जो कम से कम 10 ग्राहकों को दर्ज करते हों।
3. एजेंटों को 25 प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा।
4. ग्राहकों को दर्ज करने के बाद कमीशन काटकर बाकी रकम अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची-682011 के पक्ष में मनी आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट (एरणाकुलम में देय) द्वारा भेजें। मनी आर्डर का कमीशन एजेंट को चुकाना होगा।
5. रकम के साथ साथ ग्राहकों के नाम व पता भी स्पष्ट रूप से लिखकर भेजें। रकम प्राप्त होते ही पत्रिका प्रत्येक ग्राहक को डाक द्वारा भेजी जाएगी।
6. हमारे कार्यालय में दर्ज ग्राहकों के नाम व पता एवं पत्रिका भेजने की तारीख से एजेंट को अवगत कराया जाएगा।
7. अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची-11 के पते पर संपर्क करें तो एजेंसी का आवेदन प्रपत्र मिल जाएगा।

बाज़ार भाव-देशीय

सितंबर 2021

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)		
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषिक्कोट	कंगयम	कोषिक्कोट	तिप्तूर	कोषिक्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर
01.09.2021	17400	17400	17900	14800	10750	10650	10800	10100	19000	16000	15750	16000	28500	22500
04.09.2021	17400	17400	17900	14733	10750	10650	10600	10000	18700	16000	15750	16000	28500	22500
11.09.2021	17000	17100	17500	14333	10300	10350	10500	9600	18900	16200	15750	16000	28000	22500
18.09.2021	17000	17000	17500	14433	10300	10250	10550	9700	18600	16300	15250	16000	28500	22500
25.09.2021	17000	17000	17700	14533	10300	10250	10700	9800	18600	16350	15250	16000	28500	22500
30.09.2021	17000	17000	17700	14533	10300	10250	10650	9900	18900	16500	15250	16000	28500	22500

अक्तूबर 2021

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)		
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषिक्कोट	कंगयम	कोषिक्कोट	तिप्तूर	कोषिक्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर
01.10.2021	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	17700	14467	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	10600	9900	18900	16300	15250	16000	28500	22500
04.10.2021	17000	17000	17700	14400	10300	10250	10600	9800	19400	16100	15250	16000	28500	22500
11.10.2021	16800	16800	17500	14333	10100	10100	10400	9700	19500	16300	15250	16000	28500	22500
18.10.2021	16900	16900	17500	14533	10200	10200	10500	9800	20500	16500	15550	16000	29000	22500
25.10.2021	16900	16900	17300	14333	10200	10200	10450	9800	20600	16700	15550	16000	29000	22500
30.10.2021	16900	16900	17300	14267	10200	10200	10450	9700	18800	रि.प्रा.न.	15550	16000	29000	22500

नवंबर 2021

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल			
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषिक्कोट	कंगयम	कोषिक्कोट	तिप्तूर	कोषिक्कोट	नेटुमंगाट[1]	पोल्लाच्ची[2]	बैंगलूर[3]	मैंगलूर काला नारियल[3] (1 टन)
01.11.2021	16900	16900	17300	14267	10200	10200	10450	9700	19000	16300	15550	16000	29000	22500	रि.प्रा.न.
06.11.2021	17000	17000	17300	14533	10250	10250	10650	9900	19150	17200	15550	16000	29000	22500	रि.प्रा.न.
13.11.2021	17000	17000	17500	14667	10250	10250	10800	10000	19750	17000	15350	16000	29000	22500	रि.प्रा.न.
20.11.2021	17000	17000	17500	14600	10250	10250	10750	9900	19750	16900	15350	16000	29000	20000	33000
27.11.2021	17000	17000	17500	14667	10250	10250	10750	9900	19500	17200	15350	16000	30000	20000	32000
30.11.2021	17000	17000	17500	14733	10250	10250	10750	9900	19000	रि.प्रा.न.	15350	16000	30000	20000	32000

1. (स्रोत: ईपेपर, केरला कौमुदी)
2. (स्रोत: स्टार मार्केट बुलेटिन)
3. (स्रोत: स्टार मार्केट बुलेटिन)

बाज़ार भाव-अंतर्राष्ट्रीय

सितंबर 2021

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
04.09.2021	174	175	259	380	1409	रि.प्रा.न.	1439	2785	1969	798	880	1447	1336
11.09.2021	173	228	270	374	1464	रि.प्रा.न.	1409	3025	1915	791	845	1513	1283
18.09.2021	171	228	रि.प्रा.न.	381	1478	रि.प्रा.न.	1424	रि.प्रा.न.	1929	802	842	रि.प्रा.न.	1296
25.09.2021	169	228	रि.प्रा.न.	381	1595	रि.प्रा.न.	1425	रि.प्रा.न.	1942	825	863	रि.प्रा.न.	1309

अक्तूबर 2021

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
02.10.2021	182	221	250	383	1627	रि.प्रा.न.	1383	2840	1944	854	866	1445	1331
09.10.2021	189	211	246	383	1680	रि.प्रा.न.	1477	2947	1908	908	893	1448	1290
16.10.2021	190	227	244	390	1800	रि.प्रा.न.	1510	2947	1953	943	904	1411	1317
23.10.2021	204	233	275	390	2106	रि.प्रा.न.	1543	2728	1926	1014	962	1438	1304
30.10.2021	रि.प्रा.न.	240	291	390	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1563	3098	1918	रि.प्रा.न.	959	1511	1304

नवंबर 2021

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
06.11.2021	213	245	311	381	2052	रि.प्रा.न.	1581	3073	1911	1014	954	1562	1275
13.11.2021	214	246	305	381	1836	रि.प्रा.न.	1542	3007	1928	994	946	1584	1315
20.11.2021	213	246	306	381	1958	रि.प्रा.न.	1617	3017	1920	1006	984	1589	1302
27.11.2021	रि.प्रा.न.	237	रि.प्रा.न.	381	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1639	रि.प्रा.न.	1928	रि.प्रा.न.	988	रि.प्रा.न.	1302

** भारत : नारियल तेल - कंगयम बाज़ार, खोपरा - कंगयम बाज़ार, नारियल - पोल्लाच्ची बाज़ार*

नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

श्री राजबीर सिंह भा.व.से.
अध्यक्ष : 0484 2375216
श्री राजीव भूषण प्रसाद
प्रभारी मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999
श्री आर. मधु
सचिव : 2377737

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
पो.बो.सं. 1021, केरा भवन, कोची - 682 011,
केरल, भारत
कार्यालय ईपीएबीएक्सः 2376265, 2376553,
2377266, 2377267

ग्राम्स : KERABOARD
फैक्स : 91 484 2377902
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in,
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्नाटक
इ. अरवाड़ी
प्रभारी निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हूलिमावु,
बन्नेरघट्टा रोड, बंगलुरु - 560076.
दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेल : ro-bnglr@coconutboard.gov.in

असम
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, उत्तर पूर्वी
राज्य कार्यालय/ प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाउसफेड काम्प्लेक्स, (छठा तल),
वायरलेस बसिष्ठा रोड, लास्ट गेट,
दिसपुर, गुवाहटी -781 006
दू.भा. : (0361) 2220632
फैक्स : 0361-2229794
ई-मेल : ro-guwahati@coconutboard.gov.in

तमिलनाडु
श्रीमती बाला सुधाहरि
प्रभारी निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
सं 47, एफ-1,डा. रामस्वामी शालइ,
के.के. नगर, चेन्नई-600 078
दूर भाष 044- 23662684, 23663685
ई-मेल : ro-chennai@coconutboard.gov.in,

बिहार
श्री राजीव भूषण प्रसाद
निदेशक,
किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, बीएमपी तालाब के
सामने, जगदेवपथ, फुलवारी रोड़, डाक-बिहार
पशु चिकित्सा महाविद्यालय (बी.वी.सी.),
पटना-800014, दू.भा. : (0612) 2272742
फैक्स : 0612- 2272742
ई-मेलः ro-patna@coconutboard.gov.in

राज्य केन्द्र

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
मुख्य डाक कार्यालय के पास,
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्डमान
अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह, दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेल : sc-andaman@coconutboard.gov.in

महाराष्ट्र
डा. अमेय देबनाथ
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
फ्लैट नं - 203, दूसरा तल, यूकालिप्टस बिल्डिंग,
घोडबंदर रोड, ठाणे (वेस्ट)-400 610, महाराष्ट्र
दू.भा. : 022-65100106
ई-मेल : sc-thane@coconutboard.gov.in

ओड़िशा
डा. रजतकुमार पाल
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक
खुरदा जिला - 752 055, ओडिशा
दू.भा. : 8280067723
ई-मेल : sc-pitapalli@coconutboard.gov.in

आंध्र प्रदेश
सहायक निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड, डो.नं. 4-123, राजुला बाज़ार
रामवरप्पडु डाक, जिला परिषद हाइ स्कूल के पास
विजयवाड़ा-521108, कृष्णा जिला, आंध्र प्रदेश
टेलीफैक्स नं. 0866-2842323/मोबाइलः 09866479650
ई-मेलः sc-vijayawada@coconutboard.gov.in

पश्चिम बंगाल
उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड, डी.ए.-94 -सेक्टर-1
साल्ट लेक, कोलकात्ता - 700 064
दू.भा. : (033) 23599674, फैक्स : 91 33-23599674
ई-मेल : sc-kolkata@coconutboard.gov.in

बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, दिल्ली
सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,120,
हरगोबिन्द एनक्लेव, दिल्ली- 110 092,
दू.भा.: 011-22377805, फैक्स : 011-22377806
ई-मेल : mdic-delhi@coconutboard.gov.in

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम
क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्रिकल्चरल अर्बन हॉलसेल मार्कट (वॅर्ल्ड मार्कट)
आनयरा पी.ओ., तिरुवनंतपुरम - 695 029
दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006,
ई-मेल : fo-tvprm@coconutboard.gov.in

सी आई टी, आलुवा
उप निदेशक (प्रौद्योगिकी विकास एवं उद्यमिता)
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र,
कीनपुरम, दक्षिण वाषक्कुलम, आलुवा पिन-683105,
दूरभाषः 0484 2679680,
ई-मेल : cit-aluva@coconutboard.gov.in

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

आंध्र प्रदेशः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688, तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला), आंध्र प्रदेश - 534 452, दू.भा. : (08812) 212359, ई-मेल : f-vegiwada@coconutboard.gov.in

असमः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगैगांव, असम - 783 384, दू.भा. : 9957694242 ई-मेल : f-abhayapuri@coconutboard.gov.in

बिहारः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक), मधेपुरा जिला, बिहार - 852 128. दू.भा. : (06476) 283015., ई-मेल : f-madhepura@coconutboard.gov.in

पश्चिम बंगालः सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, डीएसपी फार्म, फुलिया, एसबीआई फुलिया शाखा के पास, एनएच-34, बेलेमठ डाक, नादिया, पश्चिम बंगाल- 741 402 दू.भा. : 03473 234002, ई-मेल : f-fulia@coconutboard.gov.in

कर्नाटकः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक), मंड्या जिला, कर्नाटक-571478 दू.भा.: (08232) 298015, ई-मेल :f-mandya@coconutboard.gov.in

केरलः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, नेर्यमंगलम, पिन - 686 693, दू.भा. : (0485) 2554240, ई-मेल : f-neriamangalam@coconutboard.gov.in

छत्तीसगढ़ः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव - 494 226, बस्तर जिला, दू.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443, ई-मेल : f-kondagaon@coconutboard.gov.in

ओड़िशाः सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055, दू.भा. : 8280067723, ई-मेल : f-pitapalli@coconutboard.gov.in

महाराष्ट्रः सहायक निदेशक , नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, पालघर, दापोली गाँव, सतपति डाक, पालघर-401405, महाराष्ट्र, दू.भा.: 02525 256090, ई-मेल : f-palghar@coconutboard.gov.in

तमिलनाडुः सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड, धली, तिरुमूर्ति नगर डाक, उदुमलपेट, तमिलनाडु-642112, दू.भा.: 04252 265430, ई-मेलः f-dhali@coconutboard.gov.in

त्रिपुराः सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड, हिच्चाचेरा, सकबारी डाक, जोलाइबारी(मार्ग), सबरूम, दक्षिण त्रिपुरा, त्रिपुरा-799141 दू.भा.: 038 23263059, ईमेलः f-hitchachara@coconutboard.gov.in

Regd/7-19817/89
भाग XXXII, संख्याः 3

भारतीय नारियल पत्रिका

अक्तूबर - दिसंबर 2021
मूल्य : 10 रु.

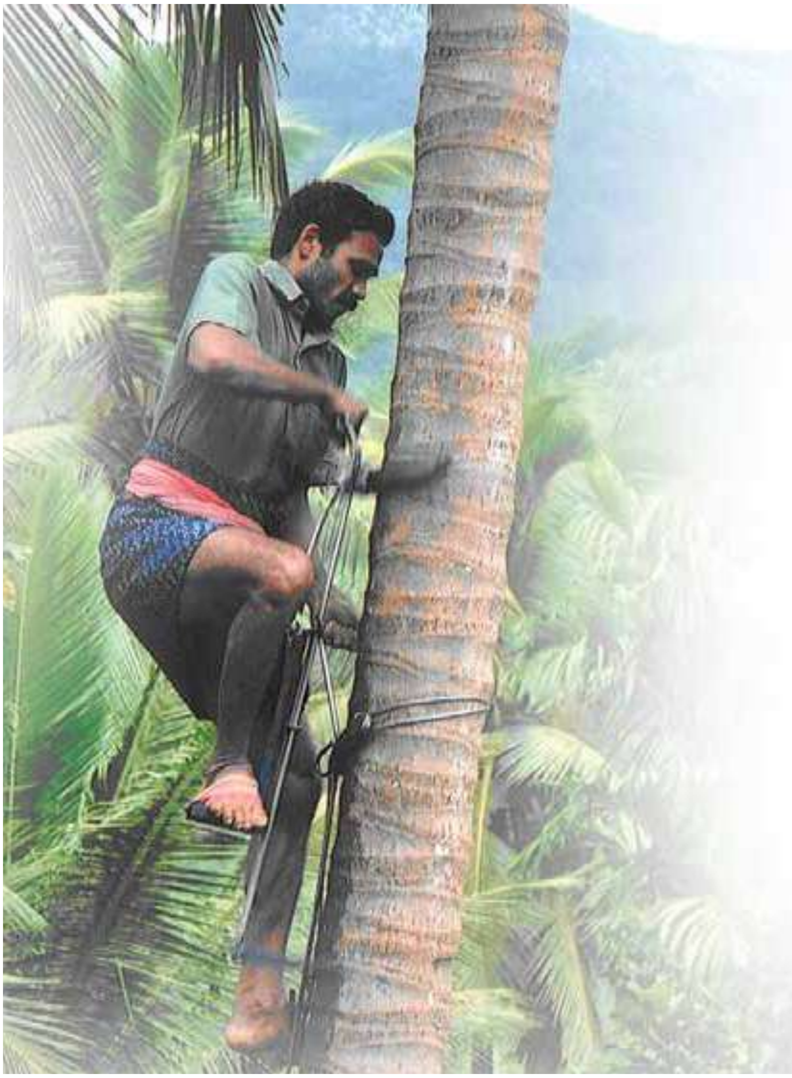

बीमित राशि
5 लाख रुपए

99 रुपए की नाममात्र
वार्षिक प्रीमियम
के लिए

बीमा सुरक्षा

- मृत्यु
- दिव्यांगता
- दुर्घटना के कारण बेरोज़गारी

के लिए

कौन शामिल हो सकते हैं ???

कोई भी व्यक्ति जो नारियल ताड़ारोहण/ तुड़ाई/ नीरा तकनीशियन के पेशे में लगा हुआ हो

आयु 18-65

प्रपत्र नाविबो की वेबसाइट
https://www.coconutboard.gov.in/docs/Appl-Kerasuraksha.pdf
में उपलब्ध है

नाविबो की
केरा सुरक्षा बीमा योजना
में शामिल हो जाएं

नारियल विकास बोर्ड

दि ऑरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के सहयोग से नारियल विकास बोर्ड की पहल।

नारियल ताड़ारोहकों/ तुडाईकर्ताओं के लिए दुर्घटना बीमा सुरक्षा।

आगे की सोचें..
संरक्षित और सुरक्षित रहें

अधिक जानकारी के लिए..
संपर्क करें:
0484 2377266 एक्स्टेंशन: 255
www.coconutboard.gov.in

नारियल विकास बोर्ड, कोची

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
कोची, केरल, फोन: 0484-2377266, 67

Coconut Development Board
[MINISTRY OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE,
GOVERNMENT OF INDIA] KOCHI, KERALA. PH : 0484-2377266, 67